CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

BIBLIOTHECA INDICA:

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED BY THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

NEW SERIES, No. 1394.

# तत्त्वचिन्तामणि-दीधिति-विवृतिः

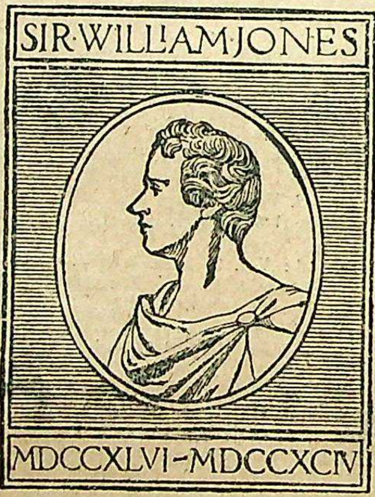


# TATTVACINTĀMANI DIDHITI-VIVRITI

BY

GADADHARA BHATTACHARYYA

WITH TATTVACINTAMANI AND DIDHITI

EDITED BY

MAHĀMAHOPĀDHYĀYA KAMAKHYANATHA TARKAVAGISA,

*Late Professor, Sanskrit College.*

VOLUME. I. FASCICULUS. VIII.

Calcutta.

PRINTED BY UPENDRA NATHA CHAKRAVARTI, AT THE SANSKRIT PRESS,
No. 5, Nandakumar Chawdhury's 2nd Lane.

AND PUBLISHED BY THE
ASIATIC SOCIETY OF BENGAL, 1, PARK STREET.

1914.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# LIST OF BOOKS FOR SALE

AT THE LIBRARY OF THE

## ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

No. 1, PARK STREET, CACUTTA,
AND OBTAINABLE FROM
THE SOCIETY'S AGENTS, MR. BERNARD QUARITCH,
11, GRAFTON STREET, NEW BOND STREET, LONDON, W., AND MR. OTTO
HARRASSOWITZ, BOOKSELLER, LEIPZIG, GERMANY.

*Complete copies of those works marked with an asterisk * cannot be supplied.—som of the Fasciculi being out of stock.*

### BIBLIOTHECA INDICA.

*Sanskrit Series*

| | Rs. | |
|---|---|---|
| Advaitachintā Kaustubha, Fasc. 1-3 @ /10/ each ... | 1 | 14 |
| Aitarēya Brāhmaṇa, Vol. I, Fasc. 1-5 ; Vol. II, Fasc. 1-5 ; Vol. III, Fasc. 1-5, Vol. IV, Fasc. 1-8 @ /10/ each ... | 14 | 6 |
| Aitereya Lochana. ... | 2 | 0 |
| Amarkosha, Fasc. 1 ... | 2 | 0 |
| *Aṇu Bhāṣhya, Fasc. 2-5 @ /10/ each ... | 2 | 8 |
| Anumana Didhiti Prasarini, Fasc. 1 @ /10/- ... | 1 | 4 |
| Aṣṭasāhasrikā Prajñāpāramitā, Fasc. 1-6 @ /10/ each ... | 3 | 12 |
| Atmatattaviveka, Fasc. I. ... | 0 | 10 |
| Açvavaidyaka, Fasc. 1-5 @ /10/ each ... | 3 | 2 |
| Avadāna Kalpalatā, (Sans. and Tibetan) Vol. I, Fasc. 1-10 ; Vol. II. Fasc. 1-10 @ 1/ each ... | 20 | 0 |
| Bālam Bhaṭṭī. Vol. I, Fasc 1-2, Vol II, Fasc. 1 @ /10/ each ... | 1 | 14 |
| Baudhāyana S'rauta Sūtra, Fasc. 1-3 Vol. II, Fase 1-5 @ /10/ each ... | 5 | 0 |
| Bhāsavritty ... | 0 | 10 |
| Bhaṭṭa Dipikā Vol. I, Fasc. 1-6 ; Vol. 2, Fasc. 1, @ /10 each ... | 4 | 6 |
| Bauddhastotrasangraha ... | 2 | 0 |
| Bṛhaddēvatā Fasc. 1-4 @ /10/ each ... | 2 | 8 |
| Bṛhaddharma Purāṇa Fasc 1-6 @ /10/ each ... | 3 | 12 |
| Bodhiearyāvatāra of Çāntideva, Fasc. 1-6 @ /10/ each ... | 3 | 12 |
| Cri Cantinatha Charita, Fasc. 1-3 ... | 1 | 14 |
| Çatadūṣaṇī, Fasc. 1-2 @ /10/ each ... | 1 | 4 |
| Catalogue of Sanskrit Books and MSS., Fasc. 1-4 @ 2/ each ... | 8 | 0 |
| Çatapatha Brāhmaṇa, Vol I, Fasc. 1-7, Vol II, Fasc. 1-5, Vol. III, Fasc. 1-7 Vol. V, Fasc. 1-4 @ /10/ each ... | 14 | 6 |
| Ditto Vol. VI, Fasc. 1-3 @ 1/4/ each ... | 3 | 2 |
| Ditto Vol. VII, Fasc. 1-5 @ /10/ ... | 3 | 2 |
| Ditto Vol. IX. Fasc. 1-2 ... | 1 | 4 |
| Çatasāhasrikā Prajñāpāramitā Part, I. Fasc. 1--17 @ /10/ each ... | 10 | 10 |
| *Caturvarga Chintāmaṇi, Vol. II, Fasc. 1-25 ; Vol. III. Part I, Fasc. 1-18. Part II, Fasc. 1-10 Vol. IV. Fasc 1-6 @ /10/ each ... | 36 | 14 |
| Ditto Vol. IV, Fasc. 7-8. @ 1/4/ each ... | 2 | 8 |
| Ditto Vol. IV, Fasc. 9-10 @ /10/ ... | 1 | 4 |
| Çlockavartika, (English) Fasc. 1-7 @ 1/4/ each ... | 8 | 12 |
| *Çrauta Sūtra of Çankhāyana, Vol. I, Fasc. 1-7 ; Vol. II, Fasc. 1-4 ; Vol. III, Fasc. 1-4 ; Vol 4. Fasc. 1 @ /10/ each ... | 10 | 0 |
| Çri Bhāshyam, Fasc 1-3 @ /10/ each ... | 1 | 14 |
| Dāna Kriyā Kaumudī, Fasc 1--2 @ /10/ each ... | 1 | 4 |
| Gadadhara Paddhati Kālasāra Vol. I, Fasc. 1-7 @ /10/ each ... | 4 | 6 |
| Ditto Ācbārasārah Vol. II, Fasc. 1-4 @ /10/ each ... | 3 | 2 |
| Gobhiliya Grihya Sutra, Vol. I @ /10/ each ... | 3 | 2 |
| Ditto Vol. II. Fasc. -2 @ 1/4/ each ... | 2 | 8 |
| Ditto (Appendix) Gobhila Parisista ... | 2 | 0 |
| Ditto Grihya Sangraha ... | 0 | 10 |
| Haralata ... | 1 | 14 |
| Karmapradiph, Fasc. I ... | 1 | 4 |
| Kāla Viveka, Fasc. 1-7 @ /10/ each ... | 4 | 6 |
| Kātantra, Fasc. 1-6 @ /12/ each ... | 4 | 8 |
| *Kūrma Purāṇa, Fasc. 3-9 @ /10/ each ... | 6 | 10 |
| Kiraṇavali, Fasc. 1-2 @ /10/ each ... | 1 | 4 |
| Madana Pārijāta, Fasc. 1-11 @ /10/ each ... | 6 | 14 |
| Mahā-bhāṣya-pradipōdyōta, Vol. I, Fasc. 1-9 ; Vol. II, Fasc. 1-12 Vol. III, Fasc. 1-10 @ /10/ each ... | | |
| Ditto Vol. IV, fasc. 1 @ /4 ... | 19 | 6 |
| Manuṭikā Sangraha, Fasc. 1-3 @ /10/ each ... | 2 | 8 |
| Markaṇḍēya Purāṇa, (English) Fasc. 1-9 @ 1/- each ... | 1 | 14 |
| *Mimāṁsā Darçana, Fasc. 10-19 @ /10/ each ... | 9 | 0 |
| *Mugdhabodha Vyakarana, Fasc. 1-4 @ /10/ each ... | 6 | 4 |
| ... | 2 | 8 |

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



न्धेन गो-गोत्वयोः साध्य-हेतुभावलाभाय गोमानयं गोत्वादित्यादिप्रतिज्ञा-हेतू अनभिधाय कालिकसम्बन्धावच्छिन्नवृत्तिबोधकदाप्रत्ययघटितोदाहरणाभिधानम्, एवमग्रेऽपि, 'प्रलयस्येति, व्यभिचारनिरूपकहेत्वधिकरणस्येत्यादिः, ध्वंसवत्त्वेनात्यन्ताभावानधिकरणत्वादिति प्राचामनुमतं ध्वंस-प्रागभावयोरत्यन्ताभावविरोधित्वमादृत्य एतदेवाग्रे निराकृत्य समाधेयम्। अथ कालिकसम्बन्धेन ध्वंसादिमत्यपि कालेऽत्यन्ताभाववृत्तावविरोधः महाकालादौ समवायादिसम्बन्धावच्छिन्नरूपात्यन्ताभावस्य सर्व्वानुमतत्वात्। न च कालिकसम्बन्धावच्छिन्नगवात्यन्ताभावस्य तत्सम्बन्धावच्छिन्नगोध्वंसाद्यभावरूपतया अत्यन्ताभावस्य त्रितयप्रतियोगिकत्वमङ्गीकुर्व्वाणैः प्राचीनैरुपगमात् कालिकसम्बन्धरूपप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन गोध्वंसवति तत्सम्बन्धावच्छिन्नगवात्यन्ताभावस्य वृत्तिर्न तेषामनुमतेति वाच्यम्। एवमपि कालिकसम्बन्धेन प्रतियोगिमत्यपि तत्सम्बन्धावच्छिन्नगवात्यन्ताभावस्य कालिकसम्बन्धेन वृत्तावविरोधात् तेन सम्बन्धेन प्रलये वर्त्तमानमत्यन्ताभावमादायातिव्याप्तिवारणसम्भवात् अभावस्य सम्बन्धविशेषनिवेशे प्रयोजनाभावात्। न च प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यविशेषणाघटितापि व्याप्तिरनुमित्यौपयिकी तद्विशेषणानुपस्थितिदशायामप्यनुमितेरानुभविकतया वक्ष्यमाणत्वात् तत्र चाभावस्य सम्बन्धविशेषोऽवश्यमेव प्रवेश्यः अन्यथा हेतुमति कालिकादिसम्बन्धेन वर्त्तमानं साध्याभावमादायाव्याप्तेरिति तादृशव्याप्तेरेव उक्तस्थले प्रमाप्रसङ्गपरोऽयं ग्रन्थ इति वाच्यम्। यत्र हेतु-



State Museum Library
5150
State Museum

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मति साध्याभावः कालिकादिसम्बन्धेन वर्त्तते तत्र प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यघटितव्याप्तेरेव सद्धेतुतानिर्व्वाहात् प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यागर्भव्याप्तिग्रहस्य तत्र भ्रमत्वोपगमे क्षतिविरहात् तादृशव्याप्तेरप्यभावस्य सम्बन्धविशेषाप्रवेशात्। मैवं, प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यानुपस्थितिदशायां सत्तावान् द्रव्यत्वादित्यादावप्यभ्रान्तस्यानुमितिरनुभवसिद्धा तदनुरोधेन भावसाध्यके दैशिकविशेषणतासम्बन्धेन हेतुमद्वृत्तित्वगर्भाया अपि व्याप्तेरनुमितिप्रयोजकता वाच्या तथा सति तादृशव्याप्तिप्रमात उक्तस्थलेऽनुमितिप्रसङ्गपरतया एतद्ग्रन्थस्य सामञ्जस्यात्। न च प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यगर्भव्याप्तावभावस्य सम्बन्धविशेषानिवेशात् अभावीयसम्बन्धविशेषागर्भप्रतियोग्यसामानाधिकरण्यगर्भव्यभिचारग्रहविरोधित्वेनैव प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यगर्भ-तदगर्भव्याप्ती अनुगमय्य तयोरनुमित्यौपयिकताया वक्तव्यतया अभावीयसम्बन्धविशेषघटितव्याप्तिग्रहस्य तादृशव्यभिचारग्रहाप्रतिबन्धकतया न तादृशव्याप्तेरनुमित्युपयोगितानिर्व्वाह इति वाच्यम्। तादृशव्याप्तिसंग्रहायैवाभावीयसम्बन्धविशेषघटित-प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यघटितव्यभिचारग्रहविरोधित्वेन व्याप्तीनामनुगमनीयत्वात् तावताप्यभावीयसम्बन्धविशेषघटितप्रतियोग्यसामानाधिकरण्यघटितव्याप्तेः संग्रहसम्भवात् एवं सत्यव्यावर्त्तकाभावीयसम्बन्धविशेषघटितप्रतियोग्यसामानाधिकरण्यघटितव्याप्तिज्ञानादप्यनुमितिः स्यादिति चेदिष्टमेवैतत्, एवं सति प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यगर्भव्याप्तिप्रमातोऽप्युक्तस्थलेऽनुमितिप्रसङ्गो दुर्व्वार इति चेत् का क्षतिर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



स्याकं (१)। वस्तुतस्तु दीधितिकृता स्वयं निष्कर्षणीये हेतुमति प्रतियोग्यनधिकरणत्वनिवेशकल्पे प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यघटितव्याप्यभावभावीयसम्बन्धविशेषनिवेशस्य निष्प्रयोजनत्वेऽपि प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यविशिष्टहेतुमद्वृत्तितागर्भयथाश्रुतव्याप्तौ तदीयसम्बन्धविशेषनिवेशनमावश्यकम् अन्यथा संयोगि द्रव्यत्वादित्यादौ प्रतियोग्यनधिकरणगुणादिवृत्तित्वविशिष्टस्यापि संयोगाद्यभावस्य कालिकसम्बन्धेन हेत्वधिकरणकालवृत्तितया अव्याप्तिप्रसङ्गात्, एकाधिकरणवृत्तित्वविशिष्टस्याप्यन्यसम्बन्धेनाधिकरणान्तरवृत्तित्वात् प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभावनिवेशकल्पेऽपि तद्विशिष्टस्य संयोगाद्यभावस्य कालिकसम्बन्धेन कालवृत्तित्वात् तत्कल्पेऽप्यव्याप्तेरावश्यकत्वात्। न च प्रतियोगिसामानाधिकरण्यविशिष्टस्य तस्य कालवृत्तित्वे प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभावविशिष्टस्य न तद्वृत्तित्वसम्भवः भावाभावविशिष्टस्य एकाधिकरणवृत्तित्वे प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभावविशिष्टसंयोगाद्यभावस्य दैशिकविशेषणतयापि द्रव्यवृत्तित्वप्रसङ्गादिति वाच्यम्। विरोधिनोर्भावाभावयोः कालिकसम्बन्धेन एकाधिकरणवृत्तितावद्भावाभावविशिष्टस्यापि कालिकसम्बन्धेन एकत्र वृत्तौ विरोधाभावात्। यद्यप्यभावस्य दैशिकविशेषणतानिवेशे अभावसाध्यके व्यभिचारिणि

---

(१) इष्टमेवैतत् इति पाठात् अनन्तरं 'वस्तुतस्तु इति पाठात् पूर्व्वं 'न चैवं सति प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यगर्भाभावीयसम्बन्धघटितव्याप्तेः भ्रमातोऽप्युक्तस्थलेऽनुमितिप्रसङ्गो दुर्व्वार इति वाच्यम्। तादृशव्याप्तिज्ञानादनुमित्यापादनस्यापि इष्टत्वात् इत्यधिकः पाठः कुत्रचिदादर्शपुस्तके वर्त्तते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



भावस्य दैशिकविशेषणतानभ्युपगमेऽतिव्याप्तिः अभावसाध्यके सा-ध्यनिरूपितप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धनिवेशे समवायसम्बन्धा-वच्छिन्नजात्यभावसाध्यकजातित्वादिहेतावव्याप्तिः जात्यादिरूपे हेतुमति तादृशेन समवायेन सम्बन्धेन वृत्तेरप्रसिद्धेः, तथापि साध्य-निरूपितप्रतियोगितावच्छेदकातिरिक्तसम्बन्धेन या साध्याभावस्य वृत्तिस्तदन्यहेतुमद्वृत्तेः प्रकृतप्रतियोगितानिरूपितानुयोगितावच्छे-दकसम्बन्धेन हेतुमति वृत्तेर्वा अभावविशेषणत्वोपगमान्न दोषः उक्तस्थले हेतुमति काले कालविशेषवृत्तित्वविशिष्टनित्यस्या-त्यन्ताभावप्रसिद्ध्या (१) अतिव्याप्तिसङ्गतिः। अत्यन्ताभावत्वघटक-नित्यत्वांशं परित्यज्य ध्वंससाधारणं संसर्गाभावत्वं निवेश्य महा-प्रलये गोत्वरूपसामान्यधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगिताकध्वंसोपगन्तृमते ध्वंसमादाय उक्तस्थलातिव्याप्तिः शक्यते वारयितुमित्याशङ्कायामाह, 'संसर्गाभावेति, दैशिकविशेषणतयापि ध्वंसस्य कालवृत्तित्वमित्या-शयेन उक्ताशङ्कासङ्गतिः, अन्यथा अभावस्य तादृशसम्बन्धेन वृत्ति-त्वनिवेशेऽत्यन्ताभावमिव ध्वंसमप्यादायातिव्याप्तेर्दुर्व्वारत्वात्। न च प्रतियोग्यधिकरणमहाकाले गोध्वंसस्य दैशिकविशेषणतासत्त्वेऽपि प्रतियोग्यनधिकरणे प्रलये तस्य तादृशसम्बन्धोऽप्रामाणिक इति वाच्यम्। यदुपाधिविशिष्टस्य प्रतियोग्यधिकरणत्वं तदन्योपाधि-विशिष्टस्यैव महाकालस्य तदभावाधिकरणतया महाकालस्य दैशिकविशेषणतया ध्वंसाधिकरणत्वे प्रलयात्मकोपाधेरपि तादृश-

---

(१) पूर्व्वक्षणवृत्तित्वविशिष्टघटत्वात्यन्ताभावप्रसिद्धेरित्यर्थः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सम्बन्धेन तदाधारताया आवश्यकत्वात् अन्यथा प्रलये गौर्नास्तीति व्यवहारानुपपत्तेः (१)। 'यदा स्पन्द इति, अत्र व्यभिचारनिरूपकाधिकरणं खण्डप्रलयः, जन्यद्रव्यानधिकरणे तस्मिन् द्व्यणुकासत्त्वात् पुनर्द्व्यणुकोत्पत्त्याद्यनुरोधेन परमाणूनां स्पन्दस्वीकारस्यावश्यकत्वात्, तथाच हेत्वधिकरणे तत्र द्व्यणुकसामान्यध्वंसप्रागभावयोरप्यसत्त्वादतिव्याप्तिरिति भावः (२)। द्व्यणुकनाशानुगुणक्रियाया उत्तरसंयोगनाश्याया अधिकरणे चरमपरमाणुसंयोगनाशरूपमहाप्रलयपूर्व्ववृतीयक्षणे द्व्यणुकसामान्यध्वंससत्त्वादत्राप्यतिव्याप्तिर्न विचारसहेत्यतः 'यदादृष्टमिति, ज्ञानत्वमात्रेण साध्यतायां प्रलये ईश्वरज्ञानसत्त्वादयं सद्धेतुरेव इत्यतः 'जन्यमिति, नित्यसुखाभिव्यक्तिर्मुक्तिरितिमते खण्डप्रलयेऽपि मुक्तात्मनि जन्यज्ञानसत्त्वात् सद्धेतुत्वं सम्भवतीत्यतः 'दुःखं वेति, जन्यमात्रं प्रत्यदृष्टस्य हेतुतया महाप्रलयाव्यवहितप्राक्क्षणेऽपि तज्जनकीभूतस्यादृष्टस्यावश्यकत्वमिति तदा जन्यज्ञानत्व-दुःखत्वाद्य-

---

(१) अथवा दीधितिकृन्निष्कर्षणीयप्रतियोगिवैयधिकरण्यकल्पाभिप्रायेणेदं तत्कल्पे प्रयोजनाभावात् अभावे वृत्तिविशेषानिवेशात्। नचाभावे वृत्तिनिवेशे कालिकसम्बन्धेन गवात्यन्ताभावस्यापि प्रलयावृत्तेः संसर्गाभावमात्रपरत्वोक्तिरिति वाच्यम्। प्रतियोगितावच्छेदककालिकसम्बन्धेन तत्प्रतियोगिगोध्वंसस्य हेत्वधिकरणेऽबाधात् गवात्यन्ताभावस्य प्रतियोगिव्यधिकरणत्वाभावात् ध्वंसस्य तत्तत्प्रतियोगिनोऽत्यन्ताभावस्य प्रतियोगितावच्छेदकदैशिकविशेषणतासम्बन्धेन कालेऽसत्त्वात् प्रतियोगिवैयधिकरण्यमक्षतमेव। इत्यधिकः पाठः कुत्रचिदादर्शपुस्तके वर्त्तते।

(२) इत्यवधेयमिति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वच्छिन्नध्वंससत्त्वान्नोपदर्शितस्थलयोरतिव्याप्तिः सम्भवतीत्यतः स्थलान्तरमाह, 'यदा तस्येति, यदात्मसमवेतमदृष्टं न महाप्रलय-जनकं स एव तत्पदेन विवक्षितः व्यभिचारश्चात्र खण्डप्रलये सुषु-प्त्यादौ च बोध्यः। खण्डप्रलयनिष्ठद्व्यणुकादिध्वंसस्य द्व्यणुकत्वादि-रूपसामान्यधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगिताकत्वासम्भवं व्युत्पादयति, 'न हीत्यादिना, 'तयोः' ध्वंस-प्रागभावयोः, 'सामान्याभावत्ववादिमते-ऽपि' सामान्यधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगिताकत्ववादिमतेऽपि, ध्वंस-प्रागभावयोरत्यन्ताभावविरधित्वमते न तयोस्तथात्वमित्येतत्सूचयितुं 'मतेऽपीति, 'एकविशेषेति एकविशेषप्रागभाववति न सामान्याव-च्छिन्नध्वंसस्य विशेषान्तरध्वंसवति च न सामान्यधर्म्मावच्छिन्नप्राग-भावस्य सम्भव इत्यर्थः, अन्यूनानतिरिक्तवृत्तिधर्म्मस्यैवावच्छेदक-तया तत्कालीनध्वंसादिप्रतियोगिताशून्यानागतादिपदार्थसाधारण-धर्म्मस्य तादृशध्वंसादिप्रतियोगितावच्छेदत्वासम्भवादिति भावः। यद्यप्येवं महाप्रलयवृत्तयोऽपि गोध्वंसाः प्रत्येकमेकैकगोव्यक्ति-मात्रप्रतियोगिका इति न कस्यापि ध्वंसस्य प्रतियोगितायाः समनियतं गोत्वं, तथापि चरमगोध्वंसस्य यावद्गोप्रतियोगिकत्वोप-गमे तत्प्रतियोगितावच्छेदकत्वं गोत्वस्य सम्भवतीत्यभिप्रायेण संसर्गा-भावत्वनिवेशे पूर्व्वोक्तस्थलमुपेक्ष्य द्व्यणुकादिसाध्यकस्पन्दादिहेतुक-स्थलेऽतिव्याप्तिरभिहिता। वस्तुतस्तु ध्वंस प्रागभावयोर्व्यधिकरण-प्रतियोगिकत्वविरहाच्चरमगोध्वंसस्यापि यावद्गोप्रतियोगिकत्वं न सम्भवतीति ध्येयम्। विरोधिनः प्रतियोगिनोऽधिकरणकाल एव चेदभावोवर्त्तते तदा सुतरां ध्वंस-प्रागभाववति कालेऽसौवर्त्तते इति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सूचनाय 'प्रतियोगिमत इवेति दृष्टान्तः। 'विरोधाभावात्' (१) बाधकाभावात्, तथाच तत्तद्देशत्वधिकरणे प्रलयादौ गोत्वाद्यवच्छिन्ना-भावसत्त्वान्नोक्तस्थलेष्वतिव्याप्तिरिति भावः। न च प्रलये गोत्वाद्य-वच्छिन्नाभावोऽप्रामाणिकः प्रत्यक्षायोगात्, अनुमानस्याप्रयोजक-त्वादिति वाच्यम्। प्रलये गौर्नास्तीत्यादिशब्दस्यैव प्रमाणत्वात्, नहि तादृशवाक्यस्याप्रामाण्यं कश्चिदुपैति। न च ध्वंसादिरेव तत्र नञर्थोनात्यन्ताभाव इति वाच्यम्। अन्वयितावच्छेदकसमाना-धिकरणप्रतियोगिताकाभावमात्रस्य नञा प्रतिपादनेऽतिप्रसङ्गात्। तदवच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावबोधकताया एव तस्य व्युत्पन्नतया अत्यन्ताभावमात्रस्य सामान्यधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगिताकत्वमते ध्वंसादेर्नञा प्रतिपादनासम्भवात्। 'अन्यथा' प्रतियोगिमति 'ध्वंस-प्रागभाववति च काले कालिकसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताका-त्यन्ताभावस्यावृत्तौ, 'अत्यन्ताभावस्य' तादृशात्यन्ताभावस्य, 'काल-मात्रावृत्तित्वेति, दैशिकविशेषणतयेत्यादिः। ननु ध्वंस-प्राग-भाववति अत्यन्ताभाववृत्त्या तस्य तदविरोधितावत्प्रतियोगिमति तद्वृत्त्या तस्य प्रतियोग्यविरोधिताप्यापाद्येताविशेषादित्यत आह, 'इयांस्त्विति, 'एकस्य' प्रतियोगिमतः कालस्य, 'देशभेदावच्छिन्नं' प्रतियोग्यनवच्छेदकदेशावच्छिन्नं, 'तथात्वं' दैशिकसम्बन्धेन कालिकसम्बन्धावच्छिन्नाभाववत्त्वं, तथाच प्रतियोग्यभावयोरेका-

---

(१) 'अविरोधात्' इत्यत्र 'विरोधाभावादिति कस्यचित् दीधितिपुस्तकस्य पाठमनुसृत्य तादृशपाठो धृतो भट्टाचार्य्येण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वच्छेदेन एकत्रावर्त्तमानत्वरूपविरोधित्वं तावताप्यक्षतमेवेति भावः। 'अपरस्य' ध्वंसादिमतः, 'स्वरूपावच्छिन्नं' ध्वंसाद्यधिकरणतावच्छेदकरूपावच्छिन्नं, 'तथात्वमित्यनुषज्यते, तथाच एकावच्छेदनैकत्र वर्त्तमानतया ध्वंसाद्यविरोधित्वमत्यन्ताभावस्येति भावः। ननु काले वृत्तौ देशस्यावच्छेदकत्वे किं मानमत आह, 'देशे कालस्येवेति, यथा देशे दैशिकसम्बन्धावच्छिन्नाभावस्य वृत्तौ कालस्यावच्छेदकत्वं इदानीमत्र गौर्नास्तीत्यादिप्रतीतिबलात् तथा काले कालिकसम्बन्धावच्छिन्नाभाववृत्तावपि देशविशेषस्यावच्छेदकत्वं तथाविधप्रतीतिबलादेव तादृशप्रतीतिः कालावच्छेदेन देशवृत्तिर्देशावच्छेदेन वा कालवृत्तिर्विषय इत्यत्र विनिगमकाभावात् अवच्छेदकत्वाधिकरणत्वयोरेव सप्तम्यर्थत्वात् इति भावः। प्रतियोगिमत्यपि काले गवात्यन्ताभावस्य वृत्तौ तस्यासमानाधिकरणान्तेन वारणात् कथं तमादाय उक्तातिव्याप्तिर्वार्थ्यते इत्यत आह, 'तच्छून्ये चेति प्रतियोगिशून्ये प्रलयादावित्यर्थः, 'तदभावस्य' गवात्यन्ताभावस्य, 'प्रतियोगिव्यधिकरणत्वात्' प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभाववत्त्वात्, सामानाधिकरण्यस्याव्याप्यवृत्तितामत एव प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभावस्याभावविशेषणत्वात् अन्यथा संयोगि सत्त्वादित्यादावेवातिव्याप्तिः तस्य व्याप्यवृत्तितापत्ते च प्रतियोग्यनधिकरणवृत्तित्वस्यैव निवेशयितव्यतया प्रलयादिवृत्तिगवात्यन्ताभावस्यान्यदा प्रतियोगिसमानाधिकरणत्वेऽपि लक्षणघटकत्वाव्याघातादिति भावः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दीधितिः ।

न च संसर्गाभावविशेषोऽत्यन्ताभावः संसर्गाभावत्वञ्च संसर्गारोपजन्यप्रतीतिविषयाभावत्वरूपं जन्यताघटकनियमघटितमिति वाच्यम् । तद्वदन्यावृत्तित्वरूपनियमस्य तत्र घटकत्वात्, एवं नियमान्तरस्यात्र प्रवेशेऽपि न क्षतिरित्याहुः । वक्ष्यते च नियमाघटितमेव संसर्गाभावादिलक्षणम् अनुपदमेव च विवेचयिष्यते संसर्गाभावत्वप्रवेशे प्रयोजनविरहोऽव्याप्तिश्च ।

---

गादाधरी विवृतिः ।

संसर्गाभावत्व-तद्घटितात्यन्ताभावत्वयोर्व्याप्तिघटितत्वेनानवस्थामाशङ्कते, 'न चेति, 'संसर्गाभावविशेषः' सदातनसंसर्गाभावः, 'संसर्गारोपः' तादात्म्यातिरिक्तसम्बन्धेन प्रतियोग्यारोपः, 'तद्वदन्यावृत्तित्वेति स्वाव्यवहितपूर्व्वक्षणावच्छेदेन तद्वतोऽन्यस्मिन् वर्त्तते यद्यत्तदन्यत्वेत्यर्थः, 'तत्र' जन्यत्वे, षष्ठ्यर्थे सप्तमी 'नियमान्तरस्य' विशिष्टधीव्यावृत्तविशिष्टधीनियामकत्वरूपसम्बन्धत्वघटकनियमस्य, 'अत्र' संसर्गाभावत्वशरीरे, 'न क्षतिरिति, तद्वदन्यावृत्तित्वरूपनियमस्यैव तत्र निवेशनीयत्वादिति भावः । स्वमते नियमानन्तर्भावस्यानुपदं वक्ष्यमाणत्वादाहुरित्युक्तम् । 'नियमाघटितमिति, आरोपस्याभावबुद्धि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



हेतुताया निर्युक्तिकत्वात् तादात्म्यातिरिक्तसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावत्वस्यैव संसर्गाभावत्वरूपत्वादिति भावः। 'प्रयोजनविरह इति, साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन यादृशप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणत्वं हेतुमतस्तादृशप्रतियोगितानवच्छेदकत्वस्य निवेशनीयतया अन्योन्याभावत्वनिरूपकप्रतियोगितामादाय दोषाप्रसक्तिरिति भावः। प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगिवैयधिकरण्यनिवेशकत्वमभिप्रेत्याह, 'अव्याप्तिश्चेति, तन्मते सम्बन्धान्तरावच्छिन्नसाध्याभावमादाय दोषवारणाय साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताया एव निवेशनीयतया तादात्म्यसम्बन्धेन यत्र साध्यता तत्र साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नसंसर्गाभावप्रतियोगित्वाप्रसिद्ध्या अव्याप्तिरप्यापाद्येतित्यर्थः।

---

दीधितिः।

अथ ज्ञानवान् द्रव्यत्वात् विशेषगुणवान् मनोऽन्यद्रव्यत्वात् जातिमान् भावत्वादित्यादौ समवायेन ज्ञानादेः साध्यतायामतिव्याप्तिः साध्यशून्यानामपि हेतुमतां विषयत्व-विशेषणत्वैकार्थसमवायैः साध्यवत्त्वादिति चेन्नैवं, प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगिनो यदधिकरणं सम्बन्धि वा तद्वृत्तित्वाभावस्योक्तत्वात् भवति चैवमन्योन्याभावोऽपि प्रतियोग्यसमानाधिकरणः तद्विशिष्टस्य च हेत्वधिकरणवृत्तित्वं वाच्यं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



तेन नाव्याप्यवृत्तिसाध्यकासंग्रहः, तद्वद्वृत्तिभिन्नत्वन्तु नार्थः अव्याप्यवृत्तिसाध्यकव्यभिचारिण्यतिप्रसङ्गात्।

---

गदाधरी विवृतिः।

ननु विषयतायां वृत्त्यनियामकत्वे प्रतियोगिवैयधिकरण्यस्थले प्रतियोगिसम्बन्धित्वानिवेशपक्षे पूर्व्वस्थलीयातिव्याप्त्यसङ्गतिरित्यत-आह, 'विशिष्टेति, पृथिव्यादिचतुष्के रूप-रस-गन्ध-स्पर्श-स्नेह-सांसिद्धिकद्रवत्वान्यतमसत्त्वात् आत्माकाशयोर्बुद्ध्यादिशब्दान्यतम-सत्त्वात् व्यभिचारनिरूपकाधिकरणत्वं दिक्कालयोरेव कालिक-दैशिकविशेषणतामादायातिव्याप्तिशङ्का इत्याशयः। दिगुपाधीनां दिशि वृत्तावच्छेदकत्वमेव न त्वधिकरणत्वमिति मते मनसो-मूर्त्तत्वेऽपि न दैशिकविशेषणतया अधिकरणत्वमिति, द्रव्यत्व-मात्रस्य हेतुत्वे मनोरूपहेत्वधिकरण एव साध्याभावः प्रतियोगि-व्यधिकरण इति नातिव्याप्तिसम्भव इति'मनोऽन्येति। ननु दिक्कालौ नेश्वरादतिरिच्येते इति मते (१) मनोन्यद्रव्यत्वं सद्धेतुरेव इत्यतः स्थलान्तरमाह, 'जातीति, (२) 'साध्यशून्यानामपीति, साध्यताव-च्छेदकसम्बन्धेनेत्यादिः, 'एवम्' अधिकरणत्वस्थले सम्बन्धित्व-निवेशे, 'अन्योन्याभावोऽपीति, तथाच न तादात्म्यसम्बन्धेन साध्यतायामव्याप्तिरिति भावः। 'तद्विशिष्टस्य' प्रतियोग्यसामाना-धिकरण्यावच्छिन्नस्य, 'तेनेति, कपिसंयोगि एतत्त्वादित्यादौ

---

(१) हेत्वधिकरणदिक्कालयोरीश्वरानतिरिक्तत्वमत इति पा०।

(२) इत्यतो दूषणान्तरमाह, 'जातिमानितीति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



कपिसंयोगादिरूपसाध्याभावस्य गुणादौ प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभाववत्त्वेऽपि हेत्वधिकरणीभूतवृक्षादेर्न कपिसंयोगसामानाधिकरण्याभावविशिष्टकपिसंयोगाभाववत्त्वं यत्र सामानाधिकरण्यविशिष्टवत्त्वं तत्र तदभावविशिष्टाधिकरणत्वाप्रत्ययात्। अतः साध्याभावो न लक्षणघटक इति नाव्याप्तिरिति भावः। हेत्वधिकरणावच्छेदेन प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभावं निवेश्याव्याप्तिवारणस्य सुकरत्वेऽपि मूलोपात्तहेतुसामानाधिकरण्यांऽशनिवेशवैयर्थ्यभिया न तथा विवक्षितं, सार्व्वभौमेण शङ्कितं (१) प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यावच्छेदकीभूताधिकरणावच्छिन्नहेतुसामानाधिकरण्यस्याभावविशेषणत्वमुपेक्ष्य उपाध्यायमते प्रतियोग्यसमानाधिकरणत्वरूपविशेषणवैशिष्ट्यावच्छेदेन हेतुसामानाधिकरण्यरूपविशेषणवैशिष्ट्यनिवेश एव लाघवमित्यालोच्य तदनुयायिना दीधितिकारेण प्रतियोग्यसमानाधिकरण्यावच्छिन्नहेतुसामान्याधिकरण्यं निवेशितं यथाश्रुतमूललभ्योऽप्ययमेवार्थः, प्रतियोग्यसामानाधिकरण्य--हेतुसामानाधिकरण्ययोरुद्देश्य तावच्छेदक-विधेयभावस्य विवक्षितत्वात् उद्देश्यतावच्छेदक-विधेययोरवच्छेद्यावच्छेदकभावलाभस्य च व्युत्पत्तिसिद्धत्वात् प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यस्य हेतुसामानाधिकरण्यावच्छेदकत्वे प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यरूपहेतुतावच्छेदकावच्छिन्नसंयोगाभावादेः सत्तादिव्याप्यत्वप्रसङ्गः सत्तादिसामानाधिकरण्यव्याप्यतावच्छेदकरूपवत्त्वस्य सत्तादिव्याप्यत्वात् इति सार्व्वभौमोक्तदूषणं पुनरेत-

(१) आदृतमिति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



न्मते निरवकाशं तादृशव्याप्तावनेन पारिभाषिकस्यैवाच्छेदकत्वस्य विवक्षितत्वात् तादृशस्य च तथाविधहेतुतावच्छेदकव्यावर्त्तकत्वात् । अन्यथा विषयितासम्बन्धेन घटत्वाद्यवच्छिन्नस्य ज्ञानत्वादिव्याप्यताया दुर्व्वारत्वात् तादृशसम्बन्धेन ज्ञानत्वादिसामानाधिकरण्ये ज्ञानविषयितारूपे घटत्वादेरवच्छेदकत्वात् । नन्वव्याप्यवृत्तिसाध्यकाव्याप्तिवारणाय प्रतियोगिसमानाधिकरणभिन्नत्वरूपमेव निवेश्यतां किमुक्तविवक्षया गुणादौ प्रतियोगिसामानाधिकरण्याभाववतोऽपि कपिसंयोगाभावादेः प्रतियोगिसमानाधिकरणभिन्नत्वविरहात् भेदस्याव्याप्यवृत्तित्वानुपगमात् इत्यत आह, 'तद्वृत्तीति प्रतियोगिमद्वृत्तीत्यर्थः, 'नार्थः' न प्रतियोग्यसमानाधिकरणपदेन विवक्षितः, (१) 'अव्याप्यवृत्तीति संयोगि सत्त्वादित्यादावित्यर्थः, 'अतिप्रसङ्गादिति, संयोगादिरूपसाध्याभावस्य द्रव्यादौ प्रतियोगिसमानाधिकरणतया तद्भिन्नत्वविरहेण लक्षणाघटकत्वादिति भावः ।

---

दीधितिः ।

अत्र च सामानाधिकरण्यवतो न तदभाववत्त्वं प्रतीतेरन्यथैवोपपादितत्वादित्यस्वरसात् प्रतियोगिवैयधिकरण्येत्यादिविशेषणं वक्ष्यति तच्च हेत्वधिकरणे बोध्यं प्रतियोग्यनधिकरणीभूतहेत्वधिकरणवृत्त्यभावेति पुनरभावान्तार्थनिष्कर्षः ।

---

(१) विवक्षयितुं शक्यः इति पा॰ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## गादाधरी विवृतिः ।

अत्र सामानाधिकरण्यस्याव्याप्यवृत्तितायाः प्राक् स्वयं दूषितत्वात् प्रतियोगिसामानाधिकरण्यात्यन्ताभावनिवेशपक्षेऽप्यतिव्याप्तिवारणमशक्यमिति तादृशानुपपत्तेरेव 'यद्वेत्यादिकल्पान्तरानुसरणवीजतया व्याचष्टे, 'अत्र चेति प्रतियोग्यसामानाधिकरण्यनिवेशकल्पे चेत्यर्थः, 'इत्यस्वरसात्' इत्यनेनान्वयः, 'प्रतीतेः' संयोगाभावे गुणे न संयोगसामानाधिकरण्यमित्यादिप्रतीतेः, 'अन्यथा' गुणादिनिष्ठसामानाधिकरण्यावच्छेदकत्वाद्यभावविषयकतया। कपिसंयोगि एतत्त्वादित्यादावपि कपिसंयोगादिरूपसाध्याभावः प्रतियोगिवैयधिकरण्यावच्छेदकगुणादिवृत्तित्वाद्यवच्छिन्नतया लक्षणघटक एव इत्यव्याप्तिरत आह, 'तच्चेति प्रतियोगिवैयधिकरण्यावच्छेदकावच्छिन्नत्वञ्चेत्यर्थः, 'हेत्वधिकरणे' हेत्वधिकरणनिरूपितं, एतत्कल्पे च पृथक्हेतुसामानाधिकरण्यं न निवेश्यमेवेति भावः। एवञ्च हेत्वधिकरणनिरूपितप्रतियोग्यनधिकरणवृत्तित्वमेवाभावे विशेषणं देयं न तु तदवच्छेदकावच्छिन्नत्वमप्यनतिप्रयोजनकत्वात्, वृत्तौ प्रतियोग्यनधिकरणनिरूपितत्व-हेत्वधिकरणनिरूपितत्वयोर्निवेशापेक्षया तत्र हेत्वधिकरणनिरूपितत्वमात्रस्य हेत्वधिकरणे च प्रतियोग्यनधिकरणत्वस्य निवेशे लाघवमित्यालोच्य तथैव निष्कर्षयति, 'प्रतियोग्यनधिकरणीभूतेति प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणेत्यर्थः, तेन नोपदर्शितातिव्याप्तिः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दीधितिः ।

ननु प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नस्य यस्य कस्यचित्तत्सामान्यस्य प्रतियोगितावच्छेदकयत्किञ्चिदवच्छिन्नस्य वा अनधिकरणमुक्तम्, आद्ये अव्याप्यवृत्तिसाध्यकाव्याप्तिः एकप्रतियोग्यधिकरणस्यापि तद्व्यक्त्यन्तरानधिकरणत्वात्। द्वितीये संयोगसामान्याभाववान् द्रव्यत्वाभाववान् वा सत्त्वादित्यादावतिव्याप्तिः साध्याभाववती द्रव्यस्य तत्प्रतियोगिसंयोगविशेषभाववत्त्वात् नित्यत्वादिविशिष्टद्रव्यत्वाभावात्मकतत्प्रतियोगिनोऽधिकरणत्वाच्च स्वाभावाभावात्मकस्य विशिष्टस्यापि द्रव्यत्वस्य द्रव्यत्वानतिरेकात्। तृतीये कपिसंयोगाभाववान् आत्मत्वादित्यादावव्याप्तिः साध्याभावानां कपिसंयोगानां गुणानामधिकरणस्यात्मनस्तत्प्रतियोगितावच्छेदकगुणसामान्याभावत्वावच्छिन्नानधिकरणत्वात्। मैवम्। यादृशप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणत्वं हेतुमतः तदनवच्छेदकत्वस्योक्तत्वात्।

---

गादाधरी विवृतिः ।

'यस्य कस्य चिदित्यादिषष्ठ्यन्तानां अनधिकरणत्वमित्यनेनान्वयः, 'प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नस्य यस्य कस्यचिदन-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



धिकरणत्वं' स्वप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नाधिकरणप्रतियोगिकभेदमात्रं, 'तत्सामान्यस्यानधिकरणत्वं' स्वप्रतियोगितावच्छेदकत्वेनानुगतीकृतप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नाधिकरणत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदः, 'प्रतियोगितावच्छेदकयत्किञ्चिदिति प्रतियोगितावच्छेदकं तत्तद्व्यक्तित्वेन निवेश्य तदवच्छिन्नाधिकरणत्वावच्छिन्नभेदो वा विवक्षित इत्यर्थः, नव्यमते संयोगसामान्याभावस्य केवलान्वयितया तत्र साध्ये सत्तादिः सद्धेतुरेव इत्यतः 'द्रव्यत्वाभाववान् वेति, 'तत्प्रतियोगीति संयोगरूपसाध्याभावप्रतियोगीत्यर्थः, तत्तत्संयोगत्वाद्यवच्छिन्नाभावाभावस्य तत्तत्संयोगादेः संयोगसामान्यानतिरिक्तत्वादिति भावः। द्रव्यत्वरूपाभावस्य एकव्यक्तितया विशिष्टाभावरूपप्रतियोगिसामानाधिकरण्यं न घटत इत्यतस्तस्य किञ्चिद्विशिष्टस्वाभावरूपप्रतियोगिसामानाधिकरण्यमाह, 'नित्यत्वादीति, आदिना जन्यत्वादिपरिग्रहः। ननु विशिष्टाभावो विशिष्टस्यैव द्रव्यत्वस्य प्रतियोगी न तु शुद्धस्य तस्येति कथं शुद्धस्य द्रव्यत्वस्य प्रतियोगिवैयधिकरण्यानुपपत्तिरित्यत आह, 'स्वाभावेति। न च सर्व्वस्यैवाभावस्य पूर्व्वक्षणादिवृत्तित्वविशिष्टस्वाभावरूपप्रतियोगिसमानाधिकरणतया प्रतियोगिव्यधिकरणाभावाप्रसिद्ध्या नातिव्याप्तिसम्भव इति वाच्यम्। प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगिवैयधिकरण्यनिवेशपक्षेऽसम्भवस्य साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन तद्वैयधिकरण्यनिवेशपक्षे च स्वरूपसम्बन्धावच्छिन्नसाध्यकस्थले साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन सर्व्वेषामेवाभावानां प्रतियोगिसमानाधि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



करणतया अव्याप्तेश्च प्रसक्त्या यत्सम्बन्धेन स्वप्रतियोगितावच्छेदका-वच्छिन्नानधिकरणत्वं हेतुमतः तत्सम्बन्धावच्छिन्नतदभावीयप्रति-योगितायां साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्व-साध्यतावच्छेदक-धर्म्मावच्छिन्नत्वोभयाभाव एव विवक्षणीयः, एवञ्च उक्तस्थले स्वरूपसम्बन्धेन प्रतियोग्यनधिकरणत्वाप्रसिद्धावपि संयोगादिसम्ब-न्धेन घटाद्यभावीयप्रतियोग्यनधिकरणीभूतहेतुमन्निष्टघटाद्यभावी-यप्रतियोगितासु स्वरूपसम्बन्धावच्छिन्नत्व-द्रव्यत्वाभावत्वाद्यवच्छि-न्नत्वोभयाभाववत्त्वस्याक्षतत्वादतिव्याप्तिरित्यभिप्रायात् ।

यद्यपि वृत्त्यादेः स्वसमवेतकपिसंयोगसामान्यस्वरूपाभाव-प्रतियोगिनः समवेतसामान्याभावस्य द्रव्यमात्रसमवेताभावस्य चानधिकरणत्वात् वृत्तित्वादेरपि हेतुतायामव्याप्तिः सम्भवत्येव, तथापि सत्ता-द्रव्यत्वयोरेव समवेताभाव-द्रव्यमात्रसमवेताभावयो-रभावत्वं न तु कपिसंयोगाद्यात्मकसमवेतमात्रस्य तथात्वं गौरवा-दित्याशयः, (१) आत्मनि च संयोगसामान्याभावस्य सर्व्वमत-सिद्धत्वविरहात् 'कपीति, जन्यद्रव्यवृत्तिहेतुके हेत्वधिकरण-जन्यद्रव्ये गुणसामान्याभावस्याप्युत्पत्तिकालावच्छेदेन स्वमते सत्त्वात् तत्र तादृशप्रतियोगिवैयधिकरण्यं न घटते अत आत्मत्व-हेतुकानुसरणम् । गुणसामान्याभावत्वस्य कपिसंयोगस्वरूपा-भावस्य प्रतियोगितावच्छेदकत्वं स्फुटीकर्त्तुं कपिसंयोगानां गुण-त्वकीर्त्तनम् । 'तत्प्रतियोगितावच्छेदकेति, तथाच तादृशाभावा-

(१) यद्यपीत्यादिः इत्याशय इत्यन्तः पाठः केषुचिदादर्शपुस्तकेषु नास्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


अपि यत्किञ्चित्प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिव्यधिकरणा-एवेति तत्प्रतियोगितावच्छेदकत्वात् कपिसंयोगाभावत्वस्याव्याप्ति-रिति भावः। 'यादृशेति यद्‌यत्प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नाधि-करणत्वावच्छिन्नभेदवत्त्वमित्यर्थः, कपिसंयोगि एतत्त्वादित्यादौ यत्किञ्चित्कपिसंयोगादिव्यक्त्यनधिकरणत्वेऽपि हेतुमतः कपि-संयोगत्वावच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नाधिकरणसामान्य--भेदवत्त्वासम्भवात्(१) यत्पदेन तादृशी प्रतियोगितोपादातुं न शक्यत-इति नाव्याप्तिः। द्रव्यत्वाभाववान् सत्त्वादित्यादौ हेतुमतो द्रव्यादेः विशिष्टद्रव्यत्वाद्यभावरूपप्रतियोग्यधिकरणत्वेऽपि द्रव्यत्वाभावत्वा-वच्छिन्ना या प्रतियोगिता तदवच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणत्वात् तस्य लक्षणघटकतेति नातिव्याप्तिः। कपिसंयोगाभाववान् आत्म-त्वादित्यादौ च कपिसंयोगाभावत्वावच्छिन्ना या प्रतियोगिता तद-वच्छेदकावच्छिन्नाधिकरणमेव हेतुमत् किन्तु गुणसामान्याभाव-त्वावच्छिन्ना या प्रतियोगिता तदवच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणमेव तदनवच्छेदकमेव साध्यतावच्छेदकमिति नाव्याप्तिरिति भावः। न चैवं घटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणं धूमवत् तादृशप्रतियोगितानवच्छेदकञ्च वह्नित्वमित्याद्याकारकस्या-भावकूटावगाहिनः समूहालम्बनज्ञानस्यैवानुमितिहेतुतया विशि-ष्टपरामर्शस्यानुमितिहेतुत्वमनुपपन्नम् अभावकूटघटिततया व्याप्ते-र्दुर्ज्ञेयतापत्तिश्चेति वाच्यम्। हेतुमन्निष्ठभेदप्रतियोगितायां स्वाव-

(१) कपिसंयोगत्वावच्छिन्नाधिकरणसामान्यभेदवत्त्वासम्भवादिति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



च्छेदकावच्छिन्नवत्त्वसम्बन्धेनावच्छेदिका या प्रतियोगिता तदनवच्छेदकत्वस्य एकसामान्याभावरूपस्य निवेशे तात्पर्य्यात्, तादृशभेदप्रतियोगितायां स्वावच्छिन्नवत्त्वसम्बन्धेनानवच्छेदकत्वस्य साध्यतावच्छेदकविशेषणतयैव सर्व्वसामञ्जस्येऽपि यथासन्निवेशे न वैयर्थ्यं, तथाविधसम्बन्धेन तादृशभेदप्रतियोगितानवच्छेदकसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नसाध्यसामानाधिकरण्यं व्याप्तिरिति पुनरन्योन्याभावघटितलक्षणनिष्कृष्टार्थो बोध्यः ।

---

दीधितिः ।

अत्र च ग्राह्यसामानाधिकरण्ये हेतोर्यादृशः सम्बन्धः प्रविष्टस्तेन सम्बन्धेन यो हेतुमान् तत्र वर्त्तमानत्वमभावस्य साध्यस्य च यादृशः सम्बन्धः प्रविष्टस्तत्सम्बन्धावच्छिन्नायाश्च प्रतियोगिताया अनवच्छेदकत्वं बोध्यं तेन धूमसमवायिनिष्ठाभावस्य संयोगावच्छिन्नप्रतियोगिताया धूमसंयोगिनिष्ठाभास्य च समवायावच्छिन्नप्रतियोगिताया अवच्छेदकत्वेऽपि वह्नित्वस्य न क्षतिः । यद्वा साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धित्वं हेतुमतो वक्तव्यम् । तथाच सम्बन्धभेदेन प्रतियोगिता न विशेषणीया ।

---

गादाधरी विवृतिः ।

सम्बन्धसामान्येन हेतुमत्त्वनिवेशेऽव्याप्तेर्वक्ष्यमाणत्वात् सम्बन्ध-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



विशेषेण हेतुमत्त्वं प्रतियोगितायां सम्बन्धविशेषावच्छिन्नत्वानिवेशे चासम्भवस्य वाच्यतया तत्र तत्र निवेशयति, 'अत्र चेति, 'ग्राह्यसामानाधिकरण्ये' अनुमितिकारणीभूतग्रहविषयहेतुनिष्ठसामानाधिकरण्यशरीरे, 'साध्यस्य चेति, अत्रापि 'ग्राह्यसामानाधिकरण्य इति 'प्रविष्ट इति चानुषज्यते, तथाच तत्सम्बन्धेन हेतुमति वर्त्तते योऽभावस्तदीयतत्सम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगितानवच्छेदको यो धर्म्मस्तदवच्छिन्नस्य तेन साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेनाधिकरणे तेन हेतुतावच्छेदकसम्बन्धेन वर्त्तमानत्वं तादृशसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन साध्यानुमितिप्रयोजकमित्यर्थः, व्यापकताघटकसाध्यीयसम्बन्धेन साध्याधिकरणे तादृशसाधनीयसम्बन्धेन साधनस्यावर्त्तमानत्वग्रहदशायामनुमितिवारणाय सामानाधिकरण्यशरीरे सम्बन्धविशेषनिवेशनम्। वस्तुतस्तु विरुद्धत्वेन गृह्यमाणधर्म्मवत्ताज्ञानस्यानुमिताविव प्रतिबन्धकताया वक्ष्यमाणतया सामानाधिकरण्यशरीरे सम्बन्धविशेषानिवेशेऽपि न क्षतिः, सामानाधिकरण्यावगाहितायाः प्रयोजकत्वञ्च विशिष्टपरामर्शनिर्व्वाहाय उपेयते पर्व्वतीयधूमव्यापको वह्निरिति व्यापकतापरामर्शहेतुताया दूषितत्वाच्च। न च स्वव्यापकसाध्यकहेतुमानित्याकारकः सामानाधिकरण्यानवगाहिविशिष्टपरामर्श एव हेतुरास्तामिति वाच्यम्। बहुव्रीह्यर्थस्य सामानाधिकरण्यपर्य्यवसितत्वादित्यवधेयम्। प्रतियोगिवैयधिकरण्यशरीरे प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धस्थाने साध्यतावच्छेदकसम्बन्धनिवेशन एव साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन साध्यवद्भेत्वधिकरणनिष्ठसम्बन्धान्तरावच्छिन्नसाध्याभावमा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दाय दूषणस्यापि निराकरणसम्भवे प्रतियोगितायां साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वनिवेशनमफलम् इत्याशयेनाह, 'यद्वेत्यादि । तादात्म्यसम्बन्धेन व्यापकतानिर्व्वाहाय, 'प्रतियोग्यनधिकरणत्वमनुक्त्वा प्रतियोग्यसम्बन्धित्वमभिहितम् ।

---

दीधितिः ।

एवं स्थिते सामानाधिकरण्यादौ सम्बन्धित्वं निवेशनीयं न त्वधिकरणत्वं, तथाच धर्म्मिणोऽपि व्याप्यत्वं व्यापकत्वञ्च निर्व्वहति, तथाहि तादात्म्येन सम्बन्धेन धूमवतः सम्बन्धिनि महानसे वर्त्तमानो योऽन्योन्याभावस्तस्य तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्ना या प्रतियोगिता तदनवच्छेदकवह्निमत्त्वावच्छिन्नस्य वह्निमतस्तादात्म्येन सम्बन्धिनि महानसे धूमवतस्तादात्म्येन सम्बन्धित्वम् । एवं धर्म्मिणोधर्म्मव्याप्यत्व-व्यापकत्वे बोध्ये । अतएव जलादीनां पृथिवीत्वाभावव्याप्यत्वं तत्र तत्रोक्तं सङ्गच्छते । यथा च यादृशेन सम्बन्धेन हेतोर्व्याप्यता गृहीता तादृशेन सम्बन्धेन तस्य पक्षविशिष्टज्ञाने (१) यादृशेन सम्बन्धेन च साध्यस्य व्यापकत्वमवगतं तादृशेनैव साध्य-पक्षयोर्विशिष्टानुमितिः तेन न धूमा-

---

(१) पक्षविशिष्टत्वज्ञान इति पा० ।

5150

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वयवे संयोगेन न वा समवायेन पर्व्वते वह्निधीः, तथैवावगतव्यापकताघटकसम्बन्धेन व्यापकस्याभावग्रहे गृहीतव्याप्यताघटकसम्बन्धेन व्याप्यस्याभावः सिध्यतीति कथमन्यथा समवायेन वह्निविरहिणि महानसे संयोगेन, संयोगेन वा वह्निविरहिणि स्वावयवे धूमः समवायेन न निवर्त्तते, निवर्त्तते च संयोगेन वह्निविरहिणि स्वावयवे संयोगेनेति नियम उपपद्यते, तथा च तादात्म्यसम्बन्धेन जलादीनां व्याप्यत्वग्रहाद्व्यापकनिवृत्त्या तादात्म्येनैव तेषामभावः सिध्यति स एव चान्योन्याभावः। इत्थमेव च तादात्म्याद्वृक्ष-शिंशपयोर्व्याप्तिनिश्चय इति सङ्गच्छते।

---

गादाधरी विवृतिः।

ननु प्रतियोगिवैयधिकरण्ये सम्बन्धित्वनिवेशे तादात्म्यसम्बन्धेन व्यापकतानिर्व्वाहेऽपि तादृशव्यापकताघटितव्याप्तिर्न निर्व्वहति तादृशसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन साध्याधिकरणाप्रसिद्ध्या तद्घटितसाध्यसामानाधिकरण्यस्याप्रसिद्धेरित्यत-आह, 'एवं स्थित-इति प्रतियोगिवैयधिकरण्यशरीरे सम्बन्धित्वनिवेशे स्थिते सतीत्यर्थः, 'सम्बन्धित्वं निवेशनीयमिति, तथाच साध्यसामानाधिकरण्यं साध्यसम्बन्धिसम्बन्धित्वम्, अभावस्य हेतुसामानाधिक-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रणमपि हेतुसम्बन्धिसम्बन्धित्वं आदिना ग्राह्यं, तदेव धर्म्मिणो-धूमवदादेर्वह्निमदादेश्च, तदेव दर्शयति, 'तथा हीत्यादि, 'तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नेति पूर्व्वकल्पाभिप्रायेण, धूमवद्वह्नि-मतोर्व्याप्तिमुक्त्वा धर्म्मिणो धूमवदादेर्वह्न्यादिरूपधर्म्मव्याप्यत्वं वह्निमदादिरूपधर्म्मिणश्च धूमादिरूपधर्म्मव्यापकत्वञ्चाह, 'एव-मिति, 'अतएव' तादात्म्यसम्बन्धेन व्याप्तिव्यवस्थापनादेव, 'तत्र तत्त्वोक्तमिति पृथिवीत्वेनेतरभेदसाधनायेत्यादिः, 'सङ्गच्छत-इति, अन्यथा जलादीनां संयोगादिना पृथिव्यादिवृत्तितया व्यभिचारेण पृथिवीत्वाभावाव्याप्यतया समवायेनाव्यभिचारेऽपि तेन सम्बन्धेन व्याप्तेर्जलादिभेदसाधनानुपयोगितया च तदुक्त्य-सङ्गतेरिति भावः। पृथिवीत्वाभावस्य स्वरूपसम्बन्धावच्छिन्ना-भावेन पृथिवीत्वस्वरूपेणैव जलादिभेदः सिद्ध्यतीति न तु तस्य कालिकादिसम्बन्धावच्छिन्नाभावेनेत्यत्र पृथिवीत्वेन व्याप्यस्य जलादेरन्योन्याभाव एव सिद्ध्यति न त्वत्यन्ताभाव इत्यत्र वा किं नियामकं इत्याकाङ्क्षायां व्यतिरेकिणि तत्सम्बन्धघटितव्यापक-त्वेन गृह्यमाणस्य तत्सम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकादेवाभावा-द्धेतोर्येन सम्बन्धेन यस्य व्याप्यता गृहीता तत्सम्बन्धावच्छिन्न-प्रतियोगिताक एव तदभावः सिद्ध्यतीति समाधास्यमानः अन्वयिनि व्याप्यताघटकसम्बन्धेन व्याप्यवत्त्वज्ञानात् व्यापक-ताघटकसम्बन्धेनैव व्यापकं सिध्यतीति नियमं दृष्टान्तविधया दर्शयति, 'यथा चेति, 'तादृशेन' तादृशेनैव, 'पक्षविशिष्टज्ञाने' पक्षधर्म्मिकवैशिष्ट्यज्ञाने, 'विशिष्टानुमितिः' वैशिष्ट्यविषयकानु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मितिः। व्याप्यताघटकेनैव सम्बन्धेन व्याप्यवत्त्वज्ञानं हेतुरिति नियमस्य व्यापकताघटकेनैव सम्बन्धेन व्यापकस्यानुमितिरिति नियमस्य च क्रमेण प्रयोजनमाह, 'तेनेति, अनवतीर्णबाधस्या-भ्रान्तस्येति शेषः, 'धूमावयवे न वह्निधीरित्यन्वयः, तस्य समवायेन वह्निव्याप्यधूमवत्त्वेऽपि व्याप्यताघटकेन संयोगेन तद्वत्त्वाभावादिति भावः। 'न वा समवायेनेति, पर्व्वतवृत्तिहेतुं प्रति समवायेन वह्नेरव्यापकत्वादिति भावः। प्रकृतोपयुक्तनियमद्वयमाह, 'तथैवेति, 'सम्बन्धेन' सम्बन्धेनैव, एतन्नियमद्वयस्य प्रयोजनान्तरानुरोधेनाप्यावश्यकत्वमिति दर्शयति, 'कथमन्यथेति, अन्यथा तादृश-नियमानभ्युपगमे, 'इति नियमः कथमुपपद्यत इत्यन्वयः। 'महानसे संयोगेन धूमो न निवर्त्तते' इत्यन्वयः, महानसधर्म्मिकसिद्धि-विषयसंयोगसम्बन्धावच्छिन्ननिवृत्तिप्रतियोगी नेत्यर्थः, 'निवर्त्तते च धूम इत्यनुषज्यते, प्रकृतमाह, 'तथा चेति, व्याप्यत्वग्रहात् स्वरूप-सम्बन्धावच्छिन्नपृथिवीत्वाभावनिष्ठव्यापकतानिरूपितव्याप्यताग्र--हात्, 'व्यापकनिवृत्त्या' स्वरूपसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिताकेनैव पृथिवीत्वाभावाभावेन, 'तेषां' जलादीनाम्। नन्वेतावतात्यन्ताभाव-सिद्धिः कथं निराकृतेत्यत आह, 'स एव चेति, 'स चान्योन्याभाव-एवेति योजना, तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नाभावः अन्योन्याभाव-एव नात्यन्ताभाव इत्यर्थः, अतो नेतरात्यन्ताभावसिद्धिरिति भावः। तादात्म्यसम्बन्धेन व्याप्तौ प्राचीनसम्मतिमाह, 'इत्थमेव चेति तादात्म्यसम्बन्धेन व्याप्तिस्वीकारेणैव, 'इति' ग्रन्थः, 'सङ्गच्छते' इत्यन्वयः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दीधितिः।

अतएव गोत्वत्वाद्यग्रहदशायां यत्र सास्नादिः सा गौरिति तादात्म्येन गोर्व्यापकत्वग्रहे सास्नादिना तादात्म्येन गौः, तादात्म्येन गोर्व्यतिरेकाच्च सास्नादिव्यतिरेकः सिध्यति, एवञ्च संयोगेन गगनादेरपि द्रव्यत्वव्याप्यत्वं वृत्त्यनियामकसंयोगभावस्याभावप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धरूपत्वे साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धित्वाभिधाने वा पृथिवीत्वादिव्यापकत्वमपि, तदभाववतोऽपि पृथिव्यादेः संयोगेन तत्सम्बन्धित्वात् सिद्धिरपि तस्य तथैव, न तु वृत्तिनियामकसम्बन्धेन, तेनासम्बन्धित्वादव्यापकत्वाच्च, व्यक्तीभविष्यति चैतदुपरिष्टात्।

---

गादाधरी विवृतिः।

ननु तादात्म्यसम्बन्धेन व्याप्त्यनभ्युपगमे का क्षतिः पृथिव्यां जलादिभेदसिद्धेर्जलादिभेदाभावव्यापकीभूताभावप्रतियोगित्वेन पृथिवीत्वज्ञानादेव सम्भवात् पृथिव्येकदेशे जलादिभेदप्रसिद्ध्या तादृशव्याप्तिग्रहसम्भवस्य व्यतिरेकिणि वक्ष्यमाणत्वात् तादात्म्यसम्बन्धेन धर्म्मिणोऽनुमितेरनुभवसिद्धत्वे धर्म्मितादात्म्यनिष्ठव्यापकताज्ञानस्यैव तद्धेतुतायाः स्वीकरणीयत्वात् असति प्रतिबन्धके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



तत्तादात्म्यविधेयकानुमितौ तादात्म्यसम्बन्धेन तस्यापि विधेयत्वोपगमे क्षतिविरहादित्यत आह, 'अतएवेति तादात्म्येन व्याप्तिस्वीकारादेव, 'गोत्वत्वाद्यग्रहदशायां गौः सिध्यतीत्यन्वयः, अन्यथा तत्र गोत्वत्वरूपसाध्यतावच्छेदकानुपस्थितौ गोत्वसाध्यकानुमित्यौपयिकव्याप्तेर्दुर्ग्रहतया गोत्वसाध्यकानुमितेः गोतादात्म्यस्यापि गोत्वरूपतया तन्निष्ठव्यापकताया अपि गोत्वत्वोपस्थितिमन्तरेण दुर्ग्रहतया गोतादात्म्यधर्म्मिकव्यापकताज्ञानाधीनतादात्म्यसंसर्गकगवानुमितेश्चासम्भवेन अयं गौरित्याकारकानुमितेरनुभवसिद्धाया अपलापप्रसङ्गादिति भावः। यद्यदि गोत्वत्वं धर्म्मितावच्छेदकीकृत्य व्यापकतावच्छेदकत्वावगाहिग्रह एव गोत्वेन गोसाध्यकानुमितावपि हेतुर्व्वाच्यः निर्धर्म्मितावच्छेदककव्यापकतावच्छेदकत्वग्रहस्य व्यभिचारज्ञानाप्रतिबध्यतया अनुमित्यजनकत्वात् इति तादात्म्येन गोत्वावच्छिन्नसाध्यकानुमितिरपि गोत्वत्वाद्यनुपस्थितिदशायां न सम्भवति, तथापि वक्ष्यमाणप्रतियोगिताधर्म्मिकोभयाभावघटितलक्षणाभिप्रायेणेदमभिहितम्। न च जातेरपि समवायेनैव स्वरूपतः प्रकारतया अभावप्रतियोगितया भासमानेऽवच्छेद्यत्वे निरूपितत्वसम्बन्धेन स्वरूपतः प्रकारत्वं नोपपद्यत इति वाच्यम्। स्वरूपतो गोत्वादिप्रकारकज्ञानस्य गोत्वादिप्रकारकत्वेनानुव्यवसाये व्यवसायानुल्लिखितगोत्वत्वादेर्गोत्वांशे प्रकारत्वासम्भवेन उक्तनियमस्यैवासिद्धेः। तन्मते स्वरूपतः साध्यतावच्छेदकप्रकारिकायामनुमितौ स्वरूपतः साध्यतावच्छेदकप्रकारकस्य साधनवन्निष्ठाभावप्रतियोगितात्वावच्छेदेन साध्यतावच्छेदक-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रूपावच्छिन्नत्व-साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वोभयाभावावगा--हिज्ञानस्य हेतुतया तत्र गोत्वत्वज्ञानानपेक्षणेनानुपपत्त्यभावात्।

परे तु एतदस्वरसेनैवाह, 'आदीति, आदिना पक्षधर्मताता-संग्रहः, तथाच गवेतरावृत्तित्वादिरूपव्याप्तेः साधनव्यापकता-ग्रहधर्म्मितावच्छेदकतया उपस्थितिध्रौव्येऽपि तद्विशिष्टस्य यत्र न पक्षधर्म्मताधीस्तत्रैवायं गौरित्यनुमितिर्गोविधेयकत्वमावश्यकमिति तदनुरोधेनैव तादात्म्येन व्यापकत्वं वाच्यम् इत्याशय इत्याहुः।

अन्ये तु ननु अयं गौरित्यनुमितिर्गवेतरावृत्तित्वरूपायाः शुद्धगोत्वनिरूपितव्याप्तेर्ज्ञानान्निरवच्छिन्नगोत्वसाध्यिकैव समवायेन भविष्यति साध्यवदन्यवृत्तित्वरूपाया अपि व्याप्तेरनुमितिहेतुत्व-स्याग्रे वाच्यत्वादतस्तादृशानुमित्यनुरोधाद्धर्म्मिणो व्यापकत्वस्वीका-रोऽनुचित इत्यत उक्तं 'गोत्वत्वेति, 'गोत्वत्वं' गवेतरावृत्तित्वं, तथाच गवेतरावृत्तित्वरूपाया गोत्वव्याप्तेरज्ञानदशायामुत्पन्नायाः अयं गौरित्यनुमितेर्गोत्वविधेयकत्वासम्भवाद्गोविधेयकत्वमेवेति तदनुरोधात् अवश्यं धर्म्मिणो व्यापकत्वं वाच्यमिति भाव-इत्याहुः (१)।

ईदृशयुक्त्या तादात्म्येन व्यापकतासिद्धिवद्गोत्वत्वाद्यग्रहदशायां यत्र गौस्तत्र सास्नादिरिति व्याप्तिग्रहाधीनगवादिहेतुकसास्नादि-सिद्ध्यनुरोधात् तत्सम्बन्धेन व्याप्यतासिद्धिरपि द्रष्टव्या।

---

(१) परेत्वित्यादिः इत्याहुरित्यन्तः अन्येत्वित्यादिः इत्याहुरित्यन्तश्च पाठः केषु चिदादर्शपुस्तकेषु नास्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



केचित्तु ननु तादात्म्यसम्बन्धेन व्यापकत्वानुपगमेऽपि गवान्यासमवेतत्वरूपव्याप्तिज्ञानादेव गोत्वादिविधेयकानुमितिर्निष्प्रत्यूहैव तथा सति (१) अयं गौरित्याकारकतापि अनुमितेर्निर्व्वहति स्वरूपतो गोत्वावगाहिनो गवान्यावृत्तित्वज्ञानात् स्वरूपत एव गोत्वविषयिन्या अनुमितेरेवौचित्यात्। न चानवच्छिन्नविधेयताया अक्लृप्तत्वात् तादात्म्यसम्बन्धेन गोरेव तत्र विधेयत्वमुचितम् अयं गौरित्यादिवाक्यजन्यबोधे तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नगवादिविधेयतायाः क्लृप्तत्वादिति वाच्यम्। अयं गौरित्याकारके इदन्त्वावच्छिन्नविशेष्यकगोत्वादिप्रकारकप्रत्यक्षे या गोत्वादिप्रकारता तस्या एव विधेयतात्वोपगमे अनुमितौ तत्कल्पने अतिरिक्तविषयताकल्पनाभावात्, अस्तु वा गवान्यावृत्तित्वरूपव्याप्तिज्ञानादेव तादात्म्येन गवानुमितिः किं तादात्म्येन व्यापकतयेत्याद्याशङ्कानिराचिकीर्षयोक्तं 'गोत्वत्वाद्यग्रहदशायामिति गवेतरावृत्तित्वस्य हेतुभूतसाध्यादावग्रहदशायामित्यर्थऽत्याहुः। तन्न, गवेतरावृत्तित्वमात्रस्य गोत्वत्वशब्दार्थताविरहेण उदचरतायादुर्व्वारत्वात्, गोत्वत्वपदं तद्वृत्तिधर्म्मपरमिति तु न सम्यक् गोत्वत्वस्य विशिष्टगोवृत्तित्वरूपस्य स्वरूपतो भानासम्भवेन तद्भानदशायां तद्वृत्तिधर्म्मभानस्यावश्यकत्वात्।

अपरे तु गोत्वत्वाद्यग्रहदशायामपि गौः सिध्यतीत्यन्वयः, यदा गोत्वत्वमनुमितौ न भासते तदा तत्र गौर्भासते इत्यर्थः, स्वरूपतोगोत्वादिप्रकारिका गवाद्यनुमितिर्भवतीति यावत्, तादात्म्येन

(१) तावतैवेति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



व्यापकतानुपगमे गोत्वस्यैव साम्नादिलिङ्गकानुमितौ भानस्योपगन्तव्यतया विधेयतायास्तावच्छिन्नत्वनियमेन स्वरूपतो गोत्वप्रकारकानुमितेरनुभवसिद्धाया अनुपपत्तिरित्युपष्टम्भसङ्गतिरिति प्राहुः (१)।

अन्ये तु गोत्वत्वाद्यग्रहदशायामपि स्वरूपतोभासमानगोत्वावच्छिन्ने हेतुमन्निष्ठान्योन्याभावप्रतियोगितानिरूपित-तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नावच्छेदकत्वाभावरूपान्योन्याभावघटिततादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नव्यापकताज्ञानात् तादात्म्येन स्वरूपतो गोत्वप्रकारिकानुमितिः सम्भवत्येव, एकरूपेणावच्छेदकेऽपि अवच्छेदकतानवच्छेदकरूपेण अवच्छेदकत्वाभावं स्वीकृत्यैवान्योन्याभावघटितलक्षणस्य ग्रन्थकृता 'यत् यद्रूपावच्छिन्नमित्यादिना परिष्करणीयत्वात् तदभिप्रायेणैव तत्सङ्गतेः, केवलान्वयिग्रन्थे च प्रतियोगिनि प्रतियोगितानवच्छेदकरूपेण प्रतियोगित्वाभावस्येवावच्छेदकेऽप्यवच्छेदकतानवच्छेदकरूपेणावच्छेदकत्वाभावस्याप्रामाणिकतया व्यापकताज्ञाने साध्यतावच्छेदकस्य स्वरूपतो भानं न सम्भवतीत्यभिप्रायेण व्यापकताज्ञानहेतुतामते स्वरूपतो ज्ञानत्वादिप्रकारकानुमित्यनुपपत्तेर्वक्ष्यमाणतया न पूर्व्वापरग्रन्थविरोध-इत्याहुः।

यत्तु अनवच्छेदकांशे तादात्म्यसम्बन्धेन स्वरूपतः साध्यतावच्छेदकप्रकारकज्ञानादनवच्छेदकत्वांशे आधेयतासम्बन्धेन स्वरूपतस्तत्प्रकारकज्ञानाद्वा स्वरूपतस्तत्प्रकारिका अनुमितिरित्युपगमेन गोत्वत्वाद्यग्रहदशायामपि तादात्म्यसम्बन्धेन व्यापकता-

(१) अपरेत्वित्यादिः प्राहुरित्यन्तः पाठः कस्मिंश्चिदादर्शपुस्तके नास्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज्ञानादनुमितिर्निर्वहतीति नोक्तानुपपत्तिरिति, तदसत्, अयं गौरित्यादिज्ञानानुव्यवसाये स्वरूपतो गोत्वादिविशेषितप्रकारिता-प्रकारेण ज्ञानभानात् समवायातिरिक्तेन निरूपितत्वसम्बन्धेन गोत्वादेः स्वरूपतः प्रकारताया आवश्यकत्वेऽपि समवाय-निरूपितत्वोभयातिरिक्तेनापरसम्बन्धेन (१) स्वरूपतः प्रकारताया-अप्रामाणिकत्वात् (२)। अन्यथा व्यापकताज्ञानहेतुतामते स्वरू-पतो ज्ञानत्वादेर्विधेयतावच्छेदकत्वानुपपत्त्या केवलान्वयिग्रन्थे तज्ज्ञानस्यानुमितिहेतुताखण्डनं दीधितिकृतां विरुध्येत उक्त-क्रमेणैव तन्निर्व्वाहात् गोत्वानवच्छिन्नत्वप्रकारकप्रतियोगिता-ज्ञाने अवच्छेद्यतायां निरूपितत्वसम्बन्धेन स्वरूपतो गोत्व-प्रकारकत्वं दीधितिकारस्यासम्मतमेव तथा सत्यपि अग्रिमग्रन्थ-विरोधात् इत्यवधेयम्। व्यापकाभावात् व्याप्याभावसिद्धावपि क्वचित् तादात्म्यसम्बन्धघटितव्यापकताया एव ज्ञानमपेक्षितम् इत्याह, 'गोर्व्यतिरेकाच्चेति तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिता-कात् तादात्म्यसम्बन्धघटितव्यापकतावच्छेदकगोत्वावच्छिन्नस्य भेद-

---

(१) समवायातिरिक्तेनापरसम्बन्धेनेति पा०।

(२) "न चावच्छेद्यत्वांशे निरूपितत्वसम्बन्धेन जातेः स्वरूपतः प्रकारत्वं दीधितिकृतामननुमतं तथा सति व्यापकताज्ञानहेतुतामते स्वरूपतो ज्ञानत्वादे-र्विधेयतावच्छेदकत्वानुपपत्त्या केवलान्वयिग्रन्थे तज्ज्ञानस्यानुमितिहेतुताखण्डनं तेषां विरुध्येत उक्तक्रमेणैव तन्निर्व्वाहात् तथाच प्रतियोगिताधर्म्मिकोभयाभाव-घटितलक्षणाभिप्रायकतयापि नैतद्ग्रन्थसङ्गतिरिति वाच्यम्। प्रकारित्वांश इव अवच्छेदकत्वांशेऽपि निरूपितत्वसम्बन्धेन जातेः स्वरूपतः प्रकारत्वाभिप्रायेणैतद्-ग्रन्थसङ्गमनात्, तस्याप्रामाणिकत्वाभिप्रायेण व्यापकताज्ञानहेतुतासङ्गतिः" इत्य-धिकः पाठः पुस्तकान्तरे वर्त्तते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रूपाभावादित्यर्थः, समवायसम्बन्धावच्छिन्नगोत्वत्वाद्यवच्छिन्ना-भावसाधनत्वेऽपि तत्प्रतियोगितावच्छेदकगोत्वत्वाद्यग्रहदशायां तदभावस्य ज्ञानासम्भवेन ततः साध्याभावसिद्ध्यसम्भवात् इति भावः (१)। 'एवञ्च' अधिकरणतादिस्थाने सम्बन्धित्वनिवेशने च, 'गगनादेरपीति, तस्याधिकरणाप्रसिद्धावपि संयोगेन तत्सम्बन्धि-वृत्तित्वस्याभावे तत्र च साध्यवत्सम्बन्धित्वस्य प्रसिद्ध्या यथोक्त-व्याप्तिसत्त्वादिति भावः। वृत्त्यनियामकसंयोगव्यावृत्तरूपेण संयोगस्याभावप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धत्वे साध्यतावच्छेदक-सम्बन्धस्य गगनीयसंयोगस्याभावप्रतियोगितानवच्छेदकतया प्रति-योगितायां साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वनिवेशकल्पे तथा-विधप्रतियोगित्वाप्रसिद्ध्या संयोगेन गगनस्य व्यापकता न निर्वह-तीत्यत उक्तं 'वृत्त्यनियामकसंयोगमात्रस्येति तादृशसंयोगसाधारण-संयोगत्वावच्छिन्नस्येत्यर्थः, 'यद्वेत्याद्युक्तकल्पे वृत्त्यनियामकसंयोग-साधारणरूपेण तादृशसम्बन्धत्वविरहेऽपि न क्षतिः तन्मते प्रतियोगि-तायां साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वानिवेशादित्याशयेनाह, 'साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेनेति, पृथिवीत्वादिव्यापकत्वमपीत्यत्र 'संयोगेन गगनादेरित्यनुषज्यते। ननु प्रतियोगितायां साध्यताव-च्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वानिवेशे पृथिव्यादिनिष्ठसमवायादिसम्ब-न्धावच्छिन्नाभावप्रतियोगितया गगनादेर्न पृथिवीत्वादिव्यापकता-सम्भव इत्यत आह, 'तदभाववतोऽपीति समवायादिना साध्या-

---

(१) व्यापकाभावादित्यादिः इति भाव इत्यन्तः पाठः बहुषु आदर्शपुस्तकेषु नास्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



भाववतोऽपीत्यर्थः, 'तत्सम्बन्धित्वात्,' गगनादिसम्बन्धित्वात्, तथाच तादृशगगनाद्यभावो न साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धिहेतुमन्निष्ठ इत्यभावान्तरमादाय लक्षणसत्त्वं निष्प्रत्यूहमेवेति भावः। ननु संयोगेन गगनस्य व्यापकत्वे बाधानवतारदशायाम् अभ्रान्तस्य वृत्तिनियामकसंयोगेनैव कथं न गगनानुमितिरित्यत आह, 'सिद्धिरपीति, 'तथैव' वृत्त्यनियामकसंयोगेनैव, 'तेनासम्बन्धित्वादिति, तथाच तत्सम्बन्धावगाहनेऽनुमितेर्भ्रमतया तत्र भ्रमात्मकपरामर्शस्यापेक्षितत्वादिति भावः। यद्रूपावच्छिन्नयत्सम्बन्धस्य व्यापकताघटकत्वं तद्रूपावच्छिन्नतत्सम्बन्धेनैवानुमितिरिति नियमाभिप्रायेण दोषान्तरमाह, 'अव्यापकत्वाच्चेति वृत्त्यनियामकेनैव सम्बन्धेन गगनाभावस्य प्रतियोगिसमानाधिकरणतया वृत्तिनियामकसंयोगेन प्रतियोगिव्यधिकरणाभावप्रतियोगितायाा गगने सत्त्वेन तत्सम्बन्धस्य व्यापकत्वाघटकत्वादित्यर्थः, तथाच व्यापकत्वाघटकस्य सम्बन्धस्यानुमितावभानान्न तेनानुमितिप्रसङ्ग इति भावः। ननु वृत्तिनियामकसंयोगेन गगनादिसम्बन्धिनोऽप्रसिद्धया कथं तेन सम्बन्धेन गगनाद्यभावस्य प्रतियोगिवैयधिकरण्यमित्यत आह, 'व्यक्तीभविष्यतीति, वक्ष्यमाणोभयाभावघटितप्रतियोगिवैयधिकरण्यं तत्रापि सुलभमेवेति भावः।

---

दीधितिः।

नन्वष्टद्रव्यातिरिक्तद्रव्यात्मककालमात्रवृत्तिधर्म्मस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



विशेषणताविशेषिणाव्याप्यवृत्ति किमपि व्यापकं न स्यात् स्वावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगिनोऽसम्बन्धिनि काले वर्त्तमानस्याभावस्य प्रतियोगितायां तत्सम्बन्धावच्छिन्नत्वस्य तेन सम्बन्धेन यत्प्रतियोगिसम्बन्धि तदन्यत्वस्य च कालेऽसम्भवात् ।

---

गादाधरी विवृतिः ।

कालिकविशेषणतया घटादिसाध्यके महाकालत्वादिहेतौ अप्रसिद्धिनिबन्धनाव्याप्तिमाशङ्कते, 'नन्वित्यादिना, क्रियात्मकखण्डकालमात्रवृत्त्येतत्कालत्वादिहेतुकस्थलेऽतीतानागतघटादिव्यक्तीनां तत्तद्व्यक्तित्वावच्छिन्नताद्दशसम्बन्धावच्छिन्नाभाव एव हेतुमति प्रतियोगिव्यधिकरणः प्रसिद्ध इति नाव्याप्तिरतः 'अष्टद्रव्यातिरिक्तद्रव्यात्मकेति, जन्यमात्रस्य कालोपाधितामते द्रव्यात्मकस्यापि खण्डकालस्य सम्भवान्न महाकालपर्य्यन्तलाभ इत्यतः अतिरिक्तान्तम्, क्रियात्मककालमात्रवृत्तिहेतुके तत्तत्क्रियाद्यवृत्तिघटाद्यभावमादाय लक्षणसत्त्वात् अतः 'द्रव्यात्मकेति । यद्यपि गगन-दिगात्म-मनसां नित्यतया खण्डकालत्वासम्भवेन चतुर्द्रव्यातिरिक्तेत्युक्तावपि महाकाललाभस्तथापि यत्किञ्चिच्चतुर्द्रव्यातिरिक्तत्वस्य पृथिव्यादावपि सत्त्वात् पृथिव्यादिचतुष्टयातिरिक्तत्वस्य विशिष्याभिधान एव तल्लाभः, तान्त्रिकैर्महाकालस्यैवाष्टद्रव्यातिरिक्तद्रव्यपदेनाभिधानात्तथाभिधाने विशिष्यानभिधानेऽपि नान्यपरत्वशङ्केति तथैवाभिहितम् । खण्डकालसाधारण-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



महाकालवृत्तेर्हेतुत्वे खण्डकालरूपहेत्वधिकरण एव लक्षणघटकोक्ताभावप्रसिद्धिरिति 'कालमात्रवृत्तीत्यत्र 'मात्रपदं, समवायादिना कस्यचित् साध्यत्वे समवायादिना घटाद्यभाव एव महाकाले तेन सम्बन्धेन प्रतियोगिव्यधिकरणः प्रसिध्यतीत्यतः 'विशेषणताविशेषेणेति कालिकविशेषणतयेत्यर्थः, व्याप्यवृत्तिसाध्यके प्रतियोगिवैयधिकरण्यस्यैवानुमितिजनकज्ञानेऽनुपादानात् केवलान्वयिनित्यवाच्यत्वादिसाध्यके नाव्याप्तिसम्भव इत्यतः 'अव्याप्यवृत्तीति, कालिकसम्बन्धेनाव्याप्यवृत्तित्वञ्च व्यतिरेकिमात्रस्यैव केवलान्वयिनोऽप्यनित्यस्य विश्वविषयकजन्यज्ञानविषयत्वादेर्बोध्यम्, एतत्सर्वं वस्तुव्यात्यभिप्रायेणाभिहितम् । महाकालान्यवृत्तिहेतुकेऽन्यसम्बन्धेन साध्यतायाञ्च हेतुमति सर्व्वत्र साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन वृत्तिमन्मात्रस्यैव तेन सम्बन्धेन वृत्तिभ्रमदशायां व्याप्यवृत्तिसाध्यकेऽपि साध्यस्य हेतुमत्यव्याप्यवृत्तित्वभ्रमदशायाम् अनुपपत्तिर्द्रष्टव्या (१) । स्वावच्छेदकसम्बन्धेन स्वावच्छेदकविशिष्टानधिकरणवृत्त्यभावीयसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगितानिवेशकल्पे तादृशप्रतियोगित्वाप्रसिद्ध्यभिधानेनाव्याप्तिं स्फुटीकरोति, 'स्वावच्छेदकेति, 'स्वं' प्रतियोगित्वं, 'काले' महाकाले, 'तत्सम्बन्धावच्छिन्नत्वस्य' कालिकसम्बन्धावच्छिन्नत्वस्य, 'असम्भवादिति योजना, कालिक-

(१) महाकालान्यवृत्तिहेतुकेऽन्यसम्बन्धेन साध्यतायाञ्च हेतुमति सर्व्वत्र साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन वृत्तिमन्मात्रस्यैव तेन सम्बन्धेन भ्रमदशायां अनुमितिजनकज्ञानानुपपत्तिर्द्रष्टव्या, एवं कालिकसम्बन्धेन व्याप्यवृत्तित्वभ्रमदशायां प्रतियोगिवैयधिकरण्याघटितायाः प्रतियोगिवैयधिकरण्यघटितायाश्च व्यापकताया दुर्ग्रहत्वात् महाकालत्वादिहेतुकानुमित्यनुपपत्तिरपीति पा० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सम्बन्धेन वृत्तिमन्मात्रस्यैव महाकाले वृत्तेरवृत्तेश्च तेन सम्बन्धेन सम्बन्धिनोऽप्रसिद्धया कस्यापि कालिकसम्बन्धावच्छिन्नाभावस्य प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धिहेतुमद्वृत्तित्वासम्भवेन समवायादिसम्बन्धावच्छिन्नघटाद्यभावस्यैव तथात्वात् तत्प्रतियोगितायाः समवायादिसम्बन्धेनैवावच्छिन्नत्वादिति भावः । साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धिहेतुमद्वृत्त्यभावीयसम्बन्धविशेषावच्छिन्नत्वाविशेषितप्रतियोगितानिवेशकल्पेऽपि तादृशसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धिहेतुमत एवाप्रसिद्धया अव्याप्तिरित्याह (१) 'तेनेति, 'तेन सम्बन्धेन' कालिकसम्बन्धेन, गगनाद्यभावप्रतियोगिनस्तेन सम्बन्धेन सम्बन्धिरूपप्रतियोग्यप्रसिद्धया तेन सम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धित्वाप्रसिद्धिं स्फुटीकर्त्तुं प्रतियोग्यसम्बन्धित्वस्येत्यनभिधाय यत्प्रतियोगिसम्बन्धि तदन्यत्वस्येत्यसमासेनाभिधानम् । अथ कालिकसम्बन्धेन महाकालान्यवृत्तित्वविशिष्टस्य तत्सम्बन्धावच्छिन्नाभाव एव महाकाले प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टप्रतियोगिव्यधिकरणः प्रसिद्धस्तमादायैव च लक्षणसमन्वयसम्भवात् कथमव्याप्त्यभिधानं, न हि महाकालान्यवृत्तित्वविशिष्टघटादिनिरूपितः कालिकोऽपि सम्बन्धो महाकाले सम्भवति, तद्धर्म्मिवृत्तित्वविशिष्टनिरूपितसम्बन्धानुयोगितायास्तद्धर्म्मिनियतत्वात्, अन्यथा सत्तादिमति गुणादौ द्रव्यादिवृत्तित्वविशिष्टसत्ताद्यभावप्रत्ययानुपपत्तेः । न चैवं ह्रदादिवृत्तित्वविशिष्टवह्न्यभावादेर्विषयि-

(१) तादृशसम्बन्धेन प्रतियोग्यसम्बन्धिहेतुमतोऽप्रसिद्धिनिबन्धनाव्याप्तिमाहेति पा० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



तया सम्बन्धित्वम् ज्ञाने न स्यात् ज्ञानस्य ह्रदादिवृत्तित्वानिरूपकत्वादिति ह्रदो वह्निमानित्यादौ तादृशविशिष्टस्य बाधादिरूपस्य हेत्वाभासत्वं न स्यात् ज्ञाननिष्ठविषयितया यादृशविशिष्टवत्त्वम् अनुमितिप्रतिबन्धकतावच्छेदकं तादृशविशिष्टस्यैव तथात्वात्। यदि च तत्सम्बन्धेन तद्धर्म्मिसम्बन्धित्वविशिष्टनिरूपितत्वात्तादृशसम्बन्धो विशेषणकोटिविशिष्टतद्धर्म्मिनियत इति सम्बन्धान्तरेण ह्रदादिवृत्तित्वविशिष्टनिरूपितविषयितासम्बन्धो ज्ञाने सम्भवत्येवेत्युच्यते तदापि इच्छादिविषयत्वविशिष्टघटादिनिरूपितविषयितासम्बन्धस्य ज्ञानेऽसम्भवात् इच्छाविषयत्वाभावादिसाध्यकघटादिपक्षकस्थले तादृशविशिष्टस्य बाधादिरूपस्य हेत्वाभासत्वानुपपत्तिर्दुर्व्वारैवेति वाच्यम्। विशिष्टनिरूपितविषयितातिरिक्तसम्बन्धस्यैव विशेषणीभूतसम्बन्धितानिरूपकाधिकरणत्वनियतत्वोपगमात् तद्धर्म्मविशिष्टतन्निरूपितविषयितायां तदंशे तद्धर्म्मप्रकारकत्वमात्रस्यापेक्षितत्वादिच्छाविषयो घट इत्यादिज्ञाने इच्छाविषयत्वविशिष्टघटादिनिरूपितविषयितासत्त्वे बाधकाभावात्। न च महाकाले महाकालान्यवृत्तित्वविशिष्टघटाद्यधिकरणत्वानुपगमे तस्य विश्वाधारत्वव्याघात इति शङ्कनीयं, तादृशविशिष्टनिरूपिताधिकरणताविशेषस्य महाकालेऽसत्त्वेऽपि घटादेर्घटत्वाद्यवच्छिन्ननिरूपिताधिकरणतासत्त्वेनैव सर्व्वाधारत्वोपपत्तेः।

परे तु महानसीयवह्नित्व-वह्नि-घटोभयत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकस्य धूमसमानाधिकरणाभावस्य प्रतियोगितावच्छेदकत्वं वह्नित्वेऽप्यस्तीत्यव्याप्तिभिया अवश्यं साध्यतावच्छेदकाघटको यः साध्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वृत्तिधर्म्मस्तदनवच्छिन्नैव हेतुसमानाधिकरणाभावस्य प्रतियोगिता लक्षणे निवेशनीया प्रत्येकमुभयत्र पर्य्याप्तिसम्बन्धेनावृत्तिधर्म्मस्य तादृशसम्बन्धेन उभयत्र सत्त्वासम्भवेन हेतुमन्निष्ठाभावप्रतियोगितावच्छेदकतापर्य्याप्त्यधिकरणभिन्नत्वस्य निवेशायोगादेवञ्च प्रकृते महाकालान्यत्वविशिष्टघटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगितायाः साध्यतावच्छेदकाघटकेन महाकालान्यत्ववैशिष्ट्यरूपसाध्यनिष्ठधर्म्मेणावच्छिन्नत्वात् तादृशप्रतियोगिताकाभावमादाय न प्रतियोगिव्यधिकरणाभावप्रसिद्धिसम्भवोऽपीति ध्येयम्।

अन्ये तु यादृशप्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टस्यानधिकरणत्वं हेतुमत इत्यत्रावच्छेदकवैशिष्ट्यमवश्यं साध्यतावच्छेदकताघटकसम्बन्धेन वाच्यम् अन्यथा तप्तायःपिण्डस्यापि कालिकसम्बन्धेन यद्धूमत्वविशिष्टं वह्न्यादिकं संयोगेन तदधिकरणतया धूमवान् वह्नेरित्यादावतिव्याप्त्यापत्तेः। इत्थञ्च समवायेन घटत्वादिविशिष्टस्य कालिकसम्बन्धेन यत्र साध्यता तत्र महाकालान्यत्वविशिष्टघटत्वाद्यवच्छिन्नाभावस्य साध्यतावच्छेदकताघटकसम्बन्धेन प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नमप्रसिद्धं विशिष्टनिरूपितसमवायानभ्युपगमात् अतस्तादृशाभावमादाय न प्रसिद्धिसम्भव इति ध्येयम्।

अत्र केचित् कालिकसम्बन्धेनाधारता महाकालस्यैव न तु सूर्य्यक्रियादेः, इदानीं घटः तदानीं घट इत्यादिप्रतीत्या क्रियादिरूपकालोपाधीनां महाकालनिष्ठाधारतावच्छेदकत्वस्यैवावगाहनात् अतएव तेषां कालविशेषणतया कालोपाधि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



त्वप्रवादः (१), तादृशप्रतीत्या क्रियादावेव घटाद्याधारत्वाव-गाहित्वोपगमे तादृशप्रतीतीनां अनुगताधारत्वावगाहित्वानुभव-विरोधात् कालत्वेनाखण्डोपाधीनां सर्व्वेषां क्रियादीनामनु-गमेन तादृशानुभवोपपादने महाकालस्यैवाप्रामाणिकतापत्तेरिति प्राचीनमताभिप्रायेणेयं अव्याप्त्याशङ्का, तथाच कालिकसम्बन्धेन महाकालान्यवृत्तित्वस्यैवाप्रसिद्धया तद्विशिष्टघटाद्यभावमादाय लक्षणगमनाप्रसक्तिः। न च क्रियादेः कालत्वानभ्युपगन्तृमता-भिप्रायेण चेदयं ग्रन्थस्तदा अष्टद्रव्यातिरिक्तद्रव्यात्मकताया-अव्यावर्त्तकतया अभिधानासङ्गतिरिति वाच्यम्। तादृशद्रव्यात्मक-एव काल इति मतविशेषसूचनार्थकतया तत्सङ्गतेः, तन्मात्र-वृत्तित्वञ्च हेतोर्लक्ष्यतासम्पादकत्वेनाभिहितं इतरवृत्तेर्व्यभिचारि-त्वात्। अथवा भवतु कालोपाधिरपि कालिकसम्बन्धेनाधिकरणं, तदधिकरणत्वसाधकस्य इदानीं घटः तदानीं घट इत्यादिः प्रत्ययो व्यवहारश्च तस्य चाननुगतोपाधिमात्रविषयकत्वेऽनुगता-धारत्वावगाहित्वानुपपत्त्या क्रियादिरूपोपाधिविशिष्टमहाकालस्य घटाद्याधारत्वावगाहित्वमावश्यकं विशिष्टे घटाद्याधारत्वाव-गाहित्वे विशिष्टान्तर्भूतविशेषणेऽपि तदवगाहित्वमावश्यकमिति खण्डकालस्य कालिकसम्बन्धेनाधारताप्रसिद्धिः। एवञ्च इदानीं महाकाहान्यत्वविशिष्टो घट इति प्रत्ययादिः खण्डकाले विशिष्टाधिकरणतायां मानं न त्वन्य इति तत्र तत्साधक-प्रत्ययबलादेव महाकालान्यवृत्तित्वानिरूपकस्यापि महाकालस्य

(१) न तु वस्तुगत्या तेषां कालत्वमिति शेषः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



विशिष्टाधारत्वसिद्धिर्दुर्वारैव, तथाच महाकाले विशिष्टघटाभावोऽपि विशिष्टप्रतियोगिसमानाधिकरणः तादृशप्रतीत्यनभ्युपगमे खण्डकालेऽपि न प्रतियोग्यधिकरणत्वप्रसिद्धिरित्युक्तस्थलेऽव्याप्तिवारणमशक्यमित्याहुः।

अन्ये तु कालिकः सम्बन्धः स्वरूपानतिरिक्तः, तथाच खण्डकालानुयोगिकतादृशसम्बन्धानां तत्तत्स्वरूपानामनुगमकसम्बन्धतावच्छेदकाभावेन प्रत्येकमेव सम्बन्धता तथाच महाकालस्वरूपसम्बन्धेनैव घटादेर्महाकालत्वादिव्यापकता वाच्येति दुरुद्धरैवाव्याप्तिः तादृशसम्बन्धेन महाकालान्यवृत्तित्वस्याप्रसिद्धेरिति वदन्ति। तदसत्, स्वरूपानां प्रातिस्विकरूपेण सम्बन्धत्वे यत्किञ्चित्खण्डकालस्वरूपसम्बन्धेन साध्यतायां तादृशखण्डकालमात्रवृत्तिहेतुके प्रतियोगिव्यधिकरणाभावाप्रसिद्धिसम्भवान्महाकालमात्रवृत्तिहेतुकानुधावनस्य निर्वीजतापातात्।

परे तु साध्यतावच्छेदकविशिष्टसाध्यवैशिष्ट्यविषयकानुमित्यौपयिकव्याप्तावेव प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टवैयधिकरण्यनिवेशः, न तु साध्यतावच्छेदकोपलक्षितसाध्यवैशिष्ट्यविषयकानुमित्यौपयिकव्याप्तौ, अन्यथा महाकाले पृथिव्यादिवृत्तित्वोपलक्षितजात्यनुमानानुपपत्तेः, साध्यतावच्छेदके प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टप्रतियोगिव्यधिकरणत्वविशिष्टाभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वसत्त्वादित्यश्च साध्यतावच्छेदकोपलक्षितस्य यत्र साध्यता तत्रैवाव्याप्तिशङ्कापरोऽयं ग्रन्थः, तत्र यथाश्रुतप्रतियोगिवैयधिकरण्यस्यैव निवेशेन महाकालान्यवृत्तित्वविशिष्टघटाद्यभावस्यापि लक्षणा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



घटकत्वादित्याहुः। तदपि न साधु, अग्रिमसिद्धान्ते विशिष्टान्त-पदोपादान-तद्व्याव्त्तिप्रदर्शनादिविरोधात्।

---

दीधितिः।

न च तादृशसम्बन्धेन हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चि-द्व्यक्त्यवृत्तिप्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टप्रतियोगिसामा--न्यकत्वमेव वक्तव्यं तथा चावृत्तिगगनाद्यभावद्वारि-कैव तत्सिद्धिः सत्ताद्यधिकरणकर्म्मादौ समवायेन ज्ञानसामान्यस्य संयोगसामान्यस्य चावृत्तेर्नातिप्रसङ्गः। भूतत्व-मूर्त्तत्वोभयत्वविशिष्ट-गुणकर्म्मान्यत्वविशिष्टसत्ता-त्वविशिष्टसत्तादिकन्तु न मनोगुणादिवृत्ति संयोग-सामान्यन्तु न किञ्चिद्द्रव्याव्त्तीति वाच्यम्। विशिष्ट-स्यानतिरिक्तत्वात् समवायेन जातेः साध्यत्वे मेयत्वादा-वतिव्याप्तिः जातिमन्निष्ठतादृशाभावप्रतियोगिताया-जातित्वेनानवच्छेदात् जातिशून्ये च तादृशसम्बन्धेन वृत्तेरप्रसिद्धेः संयोगादिसाध्यकगुण--कर्म्मान्यत्वादौ चातिव्याप्तिः अद्रव्ये हेतुमति तादृशसम्बन्धेन वृत्तेर-प्रसिद्धेः द्रव्ये च संयोगादेरपि वृत्तेः।

---

गादाधरी विवृतिः।

'तादृशसम्बन्धेन' प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन, साध्यता-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वच्छेदकसम्बन्धेन वा, 'वक्तव्यं' अभावविशेषणतया अभावपूर्व्वप्रतीकेन विवक्षणीयं, 'गगनाद्यभावद्वारिकैवति, तत्प्रतियोगिनः कालिकसम्बन्धेनाधिकरणाप्रसिद्ध्या तदनधिकरणाप्रसिद्धावपि वृत्तिमति प्रसिद्धायाः कालिकसम्बन्धेन महाकालवृत्तितया अभावस्य तत्र प्रसिद्धत्वादिति भावः। ज्ञानवान् सत्त्वात् संयोगि सत्त्वादित्यत्र क्रमेण सम्बन्धविशेषनिवेशन-यत्किञ्चित्पदोपादानयोर्व्यावृत्तिमाह, 'सत्ताद्यधिकरणेति, सम्बन्धविशेषानुपादाने कर्म्मादौ समवायेन ज्ञानाभावप्रतियोगिनोऽवृत्तावपि विषयतासम्बन्धेन वृत्तेस्तादृशाभावो न लक्षणघटकः स्यात्, यत्किञ्चित्पदानुपादाने कर्म्मादौ संयोगाभावप्रतियोगिनोऽसत्त्वेऽपि हेत्वधिकरणद्रव्यवृत्तितया हेत्वधिकरणवृत्तित्वसामान्याभाववत्त्वासम्भवात् सोऽपि न तथा स्यात् इत्यभावान्तरमादायातिव्याप्तिप्रसक्तिरिति भावः। यद्यपि यत्किञ्चित्पदस्य व्यावृत्तिर्ज्ञानसाध्यकेऽपि सम्भवति ज्ञानस्यापि समवायेनाव्याप्यवृत्तितया तत्साध्यकेऽपि प्रतियोगिवैयधिकरण्यनिवेशनस्यावश्यकत्वात्, तथापि प्रसिद्धाव्याप्यवृत्तिसाध्यके व्यभिचारिणि संयोगि सत्त्वादित्यत्र तदनुक्तौ तत्र व्यावृत्तिर्न सम्भवति इति शङ्का स्यात् तन्निराकरणाय तत्र तत्प्रदर्शनम्।

केचित्तु संयोगसाध्यके आदिपदग्राह्यगुणान्यत्वविशिष्टसत्त्वहेतुके साध्यतावच्छेदकसम्बन्धस्यैव व्यावृत्तिप्रदर्शनपरं 'संयोगसामान्यस्य चेत्यपि, विषयताया वृत्त्यनियामकत्वे प्रतियोगिवैयधिकरण्ये सम्बन्धित्वानिवेशपक्षे पूर्व्वस्थलीयव्यावृत्त्यसङ्गतेरित्यस्वरसा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रेतदनुधावनं, संयोगाभावस्य कालिकसम्बन्धेनैव सर्व्वत्र कर्म्मणि प्रतियोगिसामानाधिकरण्यसत्त्वादतिव्याप्तिप्रसक्तिरिति वदन्ति। तदसत्, उक्तास्वरसेन पूर्व्वमपि ज्ञानसाध्यकं परित्यज्य स्थलान्तरानुसरणादत्र निर्वीजताद्दृशस्थलपरित्यागे सन्दर्भविरोधात् आदिपदेन च हेतोः साध्यस्य च विशेषशब्देन उपादानस्यायुक्तत्वाच्च।

प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टत्वोपादानस्य पूर्व्वोक्तस्थल एव व्यावृत्तिं स्मारयति, 'भूतलेति। यद्यपि पूर्व्वं विशिष्टसाध्यकेऽतिव्याप्तिप्रदर्शनोत्तरं विशिष्टस्यातिरिक्ततापत्ते तदसङ्गतेरस्वरसादुभयसाध्यकेऽतिव्याप्तिर्दर्शिता, तथापि द्वन्द्वेऽल्पाच्चरपूर्व्वनिपातनियमात् उभयत्वविशिष्टान्तस्य प्रागभिधानं, अत्र च पूर्व्वस्थले द्वित्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगितया व्यासज्यवृत्तित्वोपगमेऽतिव्याप्तिर्न भवतीत्यस्वरसेन द्वितीयस्थलातिव्याप्त्यवतारणम् पूर्व्वाभिप्रायविरोधात् अनुपादेयम्। 'न मनोगुणादिवृत्तीति, विशेष्ये शुद्धे तद्वृत्तित्वसत्त्वेऽपि विशिष्टे तद्वृत्तित्वाभावोऽत्त एव एकरूपावच्छिन्न एव तत्तदभावयोर्विरोधिनावृत्तेरित्यभिमानः। न चैवं विशिष्टान्तानुपादानेऽपि सत्तादौ विशिष्टसत्तात्वादिना गुणाद्यवृत्तित्वसत्त्वेन विशिष्टसत्ताद्यभावस्य लक्षणघटकतया अतिव्याप्त्यप्रसक्तेर्न विशिष्टान्तव्यावृत्तिसम्भव इति वाच्यम्। प्रतियोगिनि किञ्चिद्रूपावच्छिन्ने हेत्वधिकरणयत्किञ्चिद्वृत्तित्वसत्त्वेनाभावस्य लक्षणघटकत्वे सत्तावान् द्रव्यत्वादित्यादावपि सत्तात्वाद्यवच्छिन्नाभावस्य लक्षणघटकताप्रसक्त्या अव्याप्त्यापत्तेः हेत्वधिकरणावृत्तित्वस्य तद्वृत्तिभिन्नत्वरूपस्यैव निवेशनीयतया विशिष्टसत्तावान् जाति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रित्यादौ विशिष्टसत्ताद्यभावस्य लक्षणघटकत्वानिर्व्वाहेण अतिव्याप्तिप्रसक्तेः, प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टत्वोपादाने प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टत्वावच्छेदेन हेत्वधिकरणनिरूपितवृत्तित्वात्यन्ताभावस्यैव निवेशनीयतया विशिष्टसत्ताद्यभावस्य लक्षणघटकतानिर्व्वाहेणातिव्याप्तिवारणं सम्भवतीति व्यावृत्तिसङ्गतिः। सामान्यपदप्रयोजनमाह, 'संयोगसामान्यञ्चेति, संयोगि द्रव्यत्वादित्यादौ संयोगत्वावच्छिन्नाभावप्रतियोगिनि यत्किञ्चित्संयोगव्यक्तौ हेत्वधिकरणयत्किञ्चिद्घटादिव्यक्त्यवृत्तित्वसत्त्वेऽपि तत्प्रतियोगिसामान्ये तदसत्त्वेन तादृशाभावस्य लक्षणाघटकतया नाव्याप्तिरित्यर्थः। तद्वति रूपान्तरावच्छेदेनापि तदभावोऽप्रामाणिकः (१) इत्याशयेन दूषयति, 'विशिष्टस्यानतिरिक्तत्वादिति, तथाच उभयत्वादिविशिष्टस्यापि मूर्त्तत्वादेः शुद्धमूर्त्तत्वाद्यनतिरिक्ततया मूर्त्तत्वादिवृत्तेर्मनोवृत्तित्वादेरभावस्य उभयत्वादिविशिष्टेऽपि तस्मिन्नसम्भवात् भूतत्व-मूर्त्तत्वोभयवान् मूर्त्तत्वादित्यादावतिव्याप्तिर्विशिष्टान्तोपादानेऽपि दुर्व्वारैवेति भावः। न च भूतत्व-मूर्त्तत्वोभयं न मनसि गुणाद्यन्यत्वविशिष्टसत्ता न गुणे इत्यादिसर्व्वानुभवसिद्धप्रतीतिबलाद्वित्वविशिष्टसत्तात्वावच्छिन्ने मनोगुणादिवृत्तित्वाभावसिद्धेरावश्यकत्वान्नातिव्याप्तिरिति वाच्यम्। तादृशप्रतीत्या मनोगुणाद्यधिकरणकद्वित्वविशिष्टत्वावच्छिन्नाभावस्यैवावगाहनात् जातौ न किञ्चित् समवैतीति निश्चयदशायां जातौ न भूतत्व-मूर्त्तत्वोभयं न

---

(१) विशेष्यवृत्तेर्विशिष्टानुयोगिकाभावोऽप्रामाणिक इति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



विशिष्टसत्तेति प्रतीतिवत् मनसि गुणे च न किञ्चित् समवैतीति भ्रमदशायामपि तादृशप्रतीतेरानुभविकतया मणोगुणादिसमवेतत्वाभावस्य तद्विषयत्वासम्भवेन मनोगुणाद्यधिकरणकाभावस्य तद्विषयताया आवश्यकत्वात् तादृशभ्रमाभावकालीनतथाकारप्रतीतावपि तस्यैव विषयत्वौचित्यात् अन्यथा कल्पनागौरवापातात्, भूतत्व-मूर्त्तत्वोभयं न मनोवृत्ति गुणान्यत्वविशिष्टसत्ता न गुणवृत्तिरित्यादिप्रत्ययाश्च तादृशोभयत्वविशिष्टसत्तात्वादौ मनोगुणादिवृत्तितावच्छेदकत्वाभावं मनोगुणादिवृत्तित्वे तादृशोभयत्वविशिष्टसत्तात्वावच्छेद्यत्वाभावं वा अवगाहन्ते तत्र तादृशाभावस्य क्लृप्तत्वात्। न च यत्किञ्चिद्देत्वधिकरणवृत्तितानवच्छेदकस्वप्रतियोगितावच्छेदककत्वमेव विवक्षणीयम् उभयत्वाद्यवच्छिन्नाभावप्रतियोगितावच्छेदकोभयत्वादेश्च मनोवृत्तितानवच्छेदकत्वात्तादृशाभावसंग्रहेण नातिव्याप्तिरिति वाच्यम्। गुणान्यत्वविशिष्टसत्ताद्यभावप्रतियोगितावच्छेदकस्य वैशिष्ट्यसहितसत्तात्वस्य गुणादिवृत्तितावच्छेदकशुद्धसत्तात्वाद्यनतिरिक्ततया तदनवच्छेदकत्वासम्भवेन उक्तविवक्षयापि तादृशाभावसंग्रहासम्भवात्। यदभावीयप्रतियोगितावच्छेदकतायां यत्किञ्चिद्देत्वधिकरणवृत्तितावच्छेदकत्वपर्य्याप्त्यवच्छेदकावच्छिन्नपर्य्याप्तताविरहस्तादृशाभावनिवेशे दर्शितातिव्याप्तिपरीहारश्च सम्भवतीत्याशङ्क्य दूषणान्तरमाह, 'समवायेनेति, 'जातिमन्निष्ठतादृशाभावेति, जातिमन्निष्ठो यो घटत्वाद्यभावस्तस्यैव पटाद्यसमवेतप्रतियोगिकत्वेन तादृशत्वात् तत्प्रतियोगितायां जातित्वस्यानवच्छेदकत्वादिति भावः। जाति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मदवृत्तेर्जातित्वावच्छिन्नाभावस्य तादृशत्वं न सम्भवति इति स्फुटयति, 'जातिशून्ये चेति, 'तादृशसम्बन्धेन' समवायेन, 'अप्रसिद्धेरिति, तथाच जातिमदवृत्तिर्योऽभावस्तत्प्रतियोगिसामान्ये हेतुमद्यत्किञ्चित्पदेन जातिशून्यमेवोपादायावृत्तित्वान्तं घटनीयं तच्च न सम्भवति प्रतियोग्यप्रसिद्ध्या तदप्रसिद्धेरिति नासौ लक्षणघटक इति भावः। जातेर्व्याप्यवृत्तितया तत्साध्यके प्रतियोगिवैयधिकरण्यविशेषणस्य प्रयोजनविरहेणानिवेशेन नोक्तदोषावकाश इत्यव्याप्यवृत्तिसाध्यक एवातिव्याप्तिमाह, 'संयोगादीति, 'अतिव्याप्तिरिति, संयोगत्वावच्छिन्नाभावस्य हेत्वधिकरणयत्किञ्चिद्व्यक्त्यसमवेतप्रतियोगिसामान्यकत्वासम्भवेन लक्षणाघटकत्वादिति भावः। तदसम्भवमेव स्फुटयति, 'अद्रव्य इति सामान्यादावित्यर्थः, 'अप्रसिद्धेरिति, तथाच यत्किञ्चिद्व्यक्तीत्यन्तेन न सामान्याद्युपादानसम्भव इति भावः। 'द्रव्य इति, तथाच द्रव्यमपि यत्किञ्चिद्व्यक्तिपदेनोपादाय न तादृशाभावस्य तथात्वं शक्योपपादनमिति भावः।

---

दीधितिः।

नैवं साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्ये निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकत्व-हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चिद्व्यक्त्यनुयोगिकत्वसामान्योभयाभावस्य विवक्षितत्वात्। धूमसंयोगि वह्न्यधिकरणायोगोलकानुयोगिकत्वस्य चैत्रान्यत्वविशिष्टैतद्दण्डसंयोगे एतद्दण्डाधिकरचैत्रानुयोगिक-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



त्वस्य गुणकर्म्मान्यत्वविशिष्टसत्तासमवाये च जात्यधिकरणगुणानुयोगिकत्वस्य विरहान्नातिप्रसङ्गः।

---

गादाधरी विवृतिः।

'साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्ये उभयाभावस्य विवक्षितत्वात्' इति योजना। तथाच स्वप्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टप्रतियोगिकत्व-हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चिदर्थानुयोगिकत्वसामान्योभयाभाववत्साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्यकत्वमभावे, स्वप्रतियोगितावच्छेदकेत्यत्र स्वावच्छेदकत्वं प्रक्षिप्य तादृशाभाववत्सम्बन्धसामान्यकत्वं प्रतियोगितायां वा विशेषणं देयमिति भावः। जलादिसंयोगे वह्निप्रतियोगिकत्व-धूमवदनुयोगिकत्वोभयाभावसत्त्वेऽपि साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्यान्तर्गततत्तद्धूमाधिकरणानुयोगिकवह्निसंयोगे वह्निप्रतियोगिकत्व-तत्तदधिकरणानुयोगिकत्वोभयाभावासत्त्वान्न वह्न्यभावस्य लक्षणघटकत्वमिति घटाद्यभावमादाय वह्निमान् धूमादित्यत्र लक्षणसमन्वयः। घटवान् महाकालत्वादित्यादौ पुनरवृत्तिगगनादेरभाव एव लक्षणघटकः कालिकसम्बन्धसामान्ये तत्प्रतियोगिगगनादिप्रतियोगिकत्वाभावेनोभयाभावसौलभ्यात् हेत्वधिकरणानुयोगिकसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्ये निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकत्वाभावनिवेशे जातिमान् मेयत्वादित्यादावुक्तातिव्याप्तिवारणमशक्यं सामान्याद्यनुयोगिकसमवायाप्रसिद्धेः जात्यादिमदनुयोगिकसमवाये च जात्यादिप्रतियोगिकत्वसत्त्वेन जातित्वाद्यवच्छिन्नाभावस्य प्रति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



योगिव्यधिकरणत्वानुपपत्तेः, निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकसाध्यताध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्ये हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चिद्वत्त्यनुयोगिकत्वाभावनिवेशे घटवान् महाकालत्वादित्यादावव्याप्तिवारणमशक्यं गगनत्वादिविशिष्टप्रतियोगिककालिकसम्बन्धाप्रसिद्ध्या गगनाभावस्यापि प्रतियोगिव्यधिकरणत्वानुपपत्तेरित्युभयाभावानुधावनम्। यत्किञ्चित्पदप्रयोजनमाह, 'धूमसंयोग-इति, 'अयोगोलकानुयोगिकत्वस्येति, 'विरहान्नातिप्रसङ्ग इत्यग्रेतनेनान्वयः, साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्यान्तर्गतधूमसंयोगे धूमप्रतियोगिकत्व-वह्निमदनुयोगिकत्वयोरुभयोरेव सत्त्वेन तत्सामान्योभयाभावस्य तत्र सत्त्वात् यत्किञ्चित्पदानुपादाने धूमवान् वह्नेरित्यत्रातिव्याप्तिः स्यात्। हेत्वधिकरणस्य च हेतुमत्त्वेन न निवेशः किन्तु तद्वत्तित्वेन यत्किञ्चिदेकहेतुमद्वत्तेर्निवेश इत्येतल्लाभार्थकतदुपादाने पुनर्हेत्वधिकरणायोगोलकानुयोगिकत्वस्य धूमसंयोगे अभावादन्यसंयोगे च धूमप्रतियोगिकत्वस्याभावात् संयोगसामान्यस्यैवोभयाभाववत्त्वात् धूमत्वावच्छिन्नाभावोऽपि लक्षणघटक इति नातिप्रसङ्ग इत्यर्थः। प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टार्थकनिरुक्तपदोपादानप्रयोजनं संयोगेन चैत्रान्यत्वविशिष्टैतद्दण्डत्वेन चैत्रनिष्ठदण्डसाध्यके एतद्दण्डहेतौ समवायेन विशिष्टसत्तादिसाध्यके जातिरूपहेतौ चातिव्याप्तिवारणरूपं दर्शयति, 'चैत्रान्यत्वेति, निरुक्तपदानुपादाने संयोगसामान्यान्तर्गतचैत्रनिष्ठैतद्दण्डसंयोगे हेत्वधिकरणचैत्रानुयोगिकत्व-चैत्रान्यत्वविशिष्टैतद्दण्डाभावप्रतियोग्येतद्दण्डप्रतियोगिकत्वयोः समवाय-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सामान्यान्तर्गतगुणाद्यनुयोगिकसत्तासमवाये च हेत्वधिकरणगुणा-नुयोगिकत्व-विशिष्टसत्ताभावप्रतियोगिसत्ताप्रतियोगिकत्वयोर्द्वयो-रेव सत्त्वेन तादृशाभावस्य लक्षणघटकता न स्यादिति प्रसक्तातिप्रसक्तेस्तदुपादानान्नावकाशः चैत्रे गुणादौ च संयोगेन समवायेन च विशिष्टदण्ड-विशिष्टसत्तावैशिष्ट्याप्रत्ययात्तदनुयोगिकसंयोग-समवाययोर्विशिष्टदण्ड-सत्तात्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकत्वानभ्युपगमेनान्यानुयोगिकयोश्च तयोश्चैत्र-गुणाद्यनुयोगिकत्वाभावेनोभयाभावस्याक्षततया विशिष्टसाध्याभावस्यापि लक्षणघटकत्वादित्यर्थः । अथात्र संयोगेन घटादौ साध्ये घटत्वादिहेतावतिव्याप्तिः संयोगसामान्यान्तर्गतघट-पटादिसंयोगे घटाद्यनुयोगिकत्व-घटादिप्रतियोगिकत्वोभयसत्त्वेन घटादिनिष्ठघटाद्यभावस्य लक्षणाघटकत्वात् । न च स्वस्मिन् संयोगेन स्वविशिष्टबुद्ध्यनुदयादन्यत्र घटविशिष्टबुद्धिमात्रनियामके घटसंयोगे घटप्रतियोगिकत्वमात्रं घटेऽन्यविशिष्टबुद्धिमात्रनियामकसंयोगे च तदनुयोगिकत्वमात्रमिति व्यभिचारनिरूपकघटानुयोगिकत्व-तत्प्रतिकत्वोभयं न कुत्रापि संयोगेऽस्ति । न हि समवायेन संयोगाधिकरणत्वमेव संयोगानुयोगित्वं येन घटसमवेतसंयोगमात्रस्यैव घटानुयोगिकत्वं स्यात्, तथा सति तत्सम्बन्धानुयोगितताया एव तद्विशिष्टबुद्धिविषयताप्रयोजकत्वेन स्वस्मिन्नपि स्वविशिष्टबुद्ध्यापत्तेर्दुर्व्वारत्वात् किन्तु सम्बन्धान्तरमेवेति वाच्यम् । येन सम्बन्धेन घटेऽन्यविशिष्टधीस्तेनैव सम्बन्धेनान्यत्र घटविशिष्टबुद्धिजननादेकत्रैव संयोगे घटानुयोगिकत्व-घटप्रतियोगिकत्वयोरावश्यकत्वात् यस्मिन् सम्बन्धे यत्प्रतियोगिकत्वविशिष्टे यदनु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



योगिकत्वं तत्सम्बन्धेन तस्यैव तत्र विशिष्टप्रमितेः स्वप्रतियोगिकत्वविशिष्टे च संयोगे स्वानुयोगिकत्वानुपगमेन स्वस्मिंस्तेन सम्बन्धेन स्वविशिष्टप्रमापत्त्यनवकाशादिति चेन्न, संयोगेनाधिकरणांशे आधेयस्यैव विशिष्टधीर्जन्यते न तु आधेयांशे आधारस्य च, आधाराधेयभावानापन्नयोर्वृत्त्यनियामकसंयोगिनोः संयोगेन विशिष्टबुद्धेरप्रामाणिकत्वात्, आधेयत्वानुपस्थितिकालीने भूतले घट इत्यादिप्रत्यये घटाद्यंशे भूतलादेः प्रकारत्वेऽपि आधेयताया एव संसर्गतोपगमात् न तु संयोगमात्रस्य, एवं सति वृत्त्यनियामकस्य गगनादिसंयोगस्य सम्बन्धत्वानुपपत्तिर्विशिष्टबुद्धिनियामकस्यैव तथात्वादिति चेत्, का क्षतिः, एवञ्च येन संयोगेन अन्यत्र घटविशिष्टबुद्धिर्जन्यते घटस्य तत्संयोगाश्रयानाधारत्वेन घटेन तेनऽन्यविशिष्टबुद्धिर्जन्यते इति संयोगमात्र एव तत्प्रतियोगिकत्व-तदनुयोगिकत्वोभयाभावस्याक्षतत्वात्। अथ यस्य घटस्याधोऽवस्थितपटे येन संयोगेन विशिष्टबुद्धिर्जनिता तेनैव च संयोगेन पटेन समं परिवृत्य स्थापिते तद्घटे पटविशिष्टबुद्धिरपि जन्यते तत्र संयोगे घटप्रतियोगिकत्व घटानुयोगिकत्वोभयस्यावश्यकतया संयोगेन घटसाध्यके तद्घट-तत्पटान्यतरत्वादावतिव्याप्तिदुर्व्वारैवेति चेदेवं सति साध्यतावच्छेदकसम्बन्धानुयोगितासामान्ये निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकत्वविशिष्टसम्बन्धनिरूपितत्व--हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चिद्व्यक्तिनिष्ठत्वोभयाभाव एव विवक्षणीयः, स्वस्मिन् स्वविशिष्टबुद्ध्यनुदयेन स्वप्रतियोगिकत्वविशिष्टसंयोगनिरूपितत्वस्य स्वनिष्ठानुयोगितायामसत्त्वात् संयोगी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



यानुयोगितासामान्ये घटप्रतियोगिकत्वविशिष्टनिरूपितत्व-तद्‌-घटनिष्ठत्वोभयाभावोऽक्षत एवेति, एवञ्च यदत्र कल्पे समवायैक्य-मतेऽतिव्याप्तिमुद्भावयिष्यति तद्यथाश्रुताभिप्रायेणेत्यवधेयम् ।

अथ द्रव्यत्वादिकं प्रति पर्य्याप्तिसम्बन्धेन द्वित्वादेर्व्यापकत्वा-पत्तिः हेतुमत एकैकद्रव्यस्य पर्य्याप्तिसम्बन्धेन द्वित्वाद्यनधिकरणत्वे-ऽपि द्वित्वादिपर्य्याप्तौ हेत्वधिकरणतद्वृत्त्यनुयोगिकत्वाभावासत्त्वा-दिति द्रव्यत्वादिना पर्य्याप्तिसम्बन्धेन गगनादौ द्वित्वाद्यनुमाना-पत्तिरिति चेन्न, उद्देश्यतावच्छेदकानतिरिक्तवृत्तित्वाविशेषित-पर्य्याप्तेः क्वचिदपि सम्बन्धत्वानभ्युपगमेन तादृशपर्य्याप्तिसंसर्गका-नुमितेरापादनासम्भवात् । गगनत्वाद्यनतिरिक्तवृत्तित्वविशेषित-पर्य्याप्तेर्द्वित्वादिप्रतियोगिकत्वाभावात् द्वित्वादिनिष्ठव्यापकत्वाघट-कतया तादृशसम्बन्धेनापि तदनुमानापत्त्यनवकाशात् ।

यत्तु हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चिद्वृत्त्यनुयोगिकत्वस्थाने हेतु-मत्त्वपर्य्याप्त्यवच्छेदकयत्किञ्चिद्धर्म्मावच्छिन्नानुयोगिताकत्वं निवेश्य द्वित्वादिपर्य्याप्तौ च द्रव्यत्वादिपर्य्याप्त्यवच्छेदकीभूता ये एकैकमा-त्रवृत्तिधर्म्मास्तदवच्छिन्नानुयोगिकत्वविरहान्न तेन सम्बन्धेन द्वित्वा-देर्द्रव्यत्वादिरूपप्रत्येकपर्य्याप्तधर्म्मव्यापकतापत्तिः, हेतुमद्वृत्तियत्-किञ्चिद्धर्म्मावच्छिन्नानुयोगिताकत्वनिवेशे इमे बहवस्त्रित्वादित्यादौ पर्य्याप्तिसम्बन्धेन हेतु-साध्यभावेऽव्याप्तिश्च हेतुमदेकमात्रवृत्ति-धर्म्मावच्छिन्नानुयोगिताकत्वस्य बहुत्वादिपर्य्याप्तावसत्त्वेन तादृश-साध्याभावे निरुक्तप्रतियोगिवैयधिकरण्यस्य दुर्व्वारत्वात् । अतो हेतुमत्त्वपर्य्याप्त्यवच्छेदकयत्किञ्चिद्धर्म्मनिवेश इति, तन्न मनोरमं,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



एतादृशरीत्या उक्तकल्पपरिष्कारेऽपि प्रतियोगिमद्भेदे हेतु-पर्य्याप्त्यवच्छेदकावच्छिन्नानुयोगिताकत्वस्याग्रिमकल्पे विवक्षणे इदमाकाशं आकाश-घटोभयत्वादित्यादावतिव्याप्तेर्दुर्व्वारत्वात् आकाशत्वाद्यवच्छिन्नभेदस्य दर्शितहेतुपर्य्याप्त्यवच्छेदकतदुभय-वृत्तिधर्म्मावच्छिन्नेऽसत्त्वात् प्रतियोगिवृत्तिधर्म्मस्य भेदाधिकरणता-नवच्छेदकत्वात्। न च व्यासज्यवृत्तिधर्म्मसाध्यके ईदृशी रीति-रूपादेया नान्यत्रेति वाच्यम्। आकाशत्वादेराकाश-घटादौ व्यासज्य-वृत्तित्वभ्रमदशायां तदवच्छिन्नभेदस्य प्रत्येकं हेत्वधिकरणवृत्तित्व-ग्रहेऽपि आकाश-घटोभयत्वादिहेतुना आकाशत्वाद्यनुमित्युत्पत्त्या तन्निर्व्वाहाय तत्रापि साधनपर्य्याप्त्यवच्छेदकावच्छिन्नाधिकरण-ताकप्रतियोगिमद्भेदघटितव्याप्तिज्ञानहेतुताया वाच्यतया तत्रा-प्यनुमित्यौपयिकव्याप्तिप्रसङ्गापत्तेः तस्माद्द्वित्वादिसाध्यकं द्रव्य-त्वाकाशत्वादिकं सद्धेतुरेव, इमे बहवस्त्रित्वादित्यादावव्याप्ति-वारणाय च पर्य्याप्त्यतिरिक्तस्वरूपसम्बन्धेन प्रतियोग्यधिकरण-त्वावच्छिन्नभेद एव हेतुमति विवक्षणीयः न तु प्रतियोग्य-वच्छिन्नभेदः, प्रतियोगिमद्वृत्तिधर्म्मवत्त्वं वा, तेन प्रत्येकावृत्तिबहु-त्वाद्यवच्छिन्नभेदमादाय तदभावस्य न प्रतियोगिवैयधिकरण्यमित्येव सारम्। इदन्तु बोध्यं, साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नाभावनिरूपित-त्वविशिष्टसाध्यवन्निष्ठतदधिकरणताभिन्नहेतुमन्निष्ठाधिकरणताकत्व-मेव 'प्रतियोगिव्यधिकरणहेतुसमानाधिकरणेति प्रतीकार्थः, महा-कालो घटवान् महाकालत्वादित्यादौ च नैतादृशविशेषणाक्रान्ता-भावासिद्धिः कालिकसम्बन्धावच्छिन्नपटाद्यभावस्यैव तथात्वात् हेतु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मन्निष्ठतदधिकरणतायां साध्याभावाधिकरणताभिन्नत्वेन विशिष्ट-भेदसत्त्वादित्युभयाभावघटितप्रतियोगिवैयधिकरण्यानुधावनं दीधितिकृतामफलमेव, एवञ्च प्रतियोगिवैयधिकरण्यस्य यादृशप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नानधिकरणत्वं हेतुमत इत्यादिक्रमेण निर्व्वचनेऽननुगमात् प्रतियोगितावच्छेदकत्वाभावकूटनिवेशे च व्याप्तिर्दुर्ज्ञेया इति दूषणमनवकाशमिति दिक् ।

---

दीधितिः ।

स्वरूपसम्बन्धेन गगनादेर्वृत्तिमत्त्वे तु निरुक्तप्रतियोग्यनधिकरणहेतुमन्निष्ठाभावप्रतियोगितासामान्ये यत्सम्बन्धावच्छिन्नत्व-यद्धर्म्मावच्छिन्नत्वोभयाभावस्तेन सम्बन्धेन तद्धर्म्मावच्छिन्नस्य व्यापकत्वं बोध्यम् । समवायसम्बन्धेन मेयसामान्याभावस्य सामान्यादौ सत्त्वान्मेयत्वादेरप्यभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वं सुलभम् । अतएव समवायस्यैकत्वेन द्रव्यत्वादिप्रतियोगिकत्व-गुणाद्यनुयोगिकत्वोभयसत्त्वेऽपि द्रव्यं जातेरित्यादौ वह्नि-धूमोभयवान् वह्नेरित्यादौ संयोगस्य द्वित्वावच्छिन्नप्रतियोगिकत्वविरहेऽपि च नातिव्याप्तिरित्यपि वदन्ति ।

---

गादाधरी विवृतिः ।

ननु गगनादेरपि कालिकसम्बन्धेन कालवृत्तित्वमावश्यकम्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



अन्यथा तेषां परमार्थसत्त्वानुपपत्तिः तस्य कालवृत्तितारूपत्वात्, एवं कारणत्वानुपपत्तिश्च तस्य पूर्व्वकालवृत्तिताघटितत्वात् अवृत्तित्वप्रवादश्च तत्र कालिकातिरिक्तसम्बन्धेनावृत्तित्वपरः, इत्थञ्च कालिकसम्बन्धसामान्ये गगनादिप्रतियोगिकत्व-महाकालानुयोगिकत्वोभयाभावोऽपि दुर्लभ इति तदभावेऽपि प्रतियोगिवैयधिकरण्यं दुर्घटमतः कालिकसम्बन्धेन विश्वस्य वृत्तित्वपक्षे कल्पान्तरमाह, 'स्वरूपेति, यद्यपि गगनादेः कालिकादिसम्बन्धेनासम्बद्धत्वेऽपि ईश्वरज्ञानं विषयितासम्बन्धेन घटवन्नित्यज्ञानत्वादित्यादावव्याप्तिः पूर्व्वकल्पे दुर्निर्व्वारा वस्तुमात्रस्यैव हेतुमति ईश्वरज्ञाने विषयितासम्बन्धेन सम्बद्धत्वात् तत्र तेन सम्बन्धेन प्रतियोगिव्यधिकरणाभावाप्रसिद्धेः, तथापि वृत्त्यनियामकसम्बन्धेन व्यापकत्वानभ्युपगन्तॄणां तत्र तादृशाभावाप्रसिद्धेरदोषतया कालिकसम्बन्धेन गगनादेर्वृत्तिमत्त्वपक्षे तेन सम्बन्धेन घटादिसाध्यकमहाकालत्वादावव्याप्तिरेव कल्पान्तरानुसरणवीजतयोपदर्शिता।

केचित्तु साध्यतावच्छेदकविशिष्टप्रतियोगिकत्वघटितत्वित्वावच्छिन्नाभावविवक्षणे घटवन्नित्यज्ञानत्वादित्यादौ नाव्याप्तिप्रसङ्गः पटत्वादिविशिष्टनिरूपितायामीश्वरज्ञानानुयोगिकविषयितायां साध्यतावच्छेदकघटत्वादिविशिष्टप्रतियोगिकत्वविरहात् उपदर्शितत्वित्वावच्छिन्नभावसत्त्वेन पटत्वावच्छिन्नाभावस्यैव लक्षणघटकतया अव्याप्तिविरहात् पूर्व्वकल्पे न तत्र दोषः। न चोक्तत्वित्वावच्छिन्नाभावविवक्षणे महाकालो घटवान् काल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



परिमाणादित्यादावपि पटत्वावच्छिन्नाभावस्य प्रतियोगिवैयधिकरण्यसम्भवेनाव्याप्त्यप्रसक्त्या कल्पान्तरानुसरणासङ्गतिरिति वाच्यम्। महाकालः प्रमेयवान् कालपरिमाणादित्यादौ दर्शितत्वित्वावच्छिन्नाभावघटितस्यापि प्रतियोगिवैयधिकरण्यस्य प्रसिद्ध्यसम्भवात् घटत्व-पटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिताकस्य कालिकसम्बन्धस्य प्रमेयत्वरूपसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिकतत्सम्बन्धानतिरिक्ततया घटत्व पटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावे तादृशप्रतियोगिवैयधिकरण्यस्य दुर्घटत्वात्। न हि रूपभेदेन एकैकवस्तुन एव कालिकादिसम्बन्धभेदः प्रामाणिकः, इदानीं प्रमेयमिदानीं घट-इत्यादिप्रतीतेरेकसम्बन्धावगाहित्वेऽपि बाधकाभावात्। तथाच यत्र कालिकसम्बन्धे घटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिकत्वं तत्र प्रमेयत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिकत्वं महाकालानुयोगिकत्वञ्चेति नोक्तत्वित्वावच्छिन्नाभाव इति, विषयिता च घटत्वावच्छिन्नप्रतियोगिका या ततोऽन्यैव प्रमेयत्वावच्छिन्नप्रतियोगिका, विषयितावैलक्षण्यमन्तरेण घट इत्यादिज्ञानानां प्रमेय इत्यादिज्ञानवैलक्षण्यानिर्व्वाहात् अतः प्रमेयवन्नित्यज्ञानत्वादित्यादौ घटत्वाद्यवच्छिन्नाभावस्य त्वित्वावच्छिन्नाभावघटितोक्तप्रतियोगिवैयधिकरण्यनिर्व्वाहः। न च प्रमेयसाध्यकस्य व्याप्यवृत्तिसाध्यकतया तत्स्थलीयव्याप्तौ प्रतियोगिवैयधिकरण्याप्रवेशात् प्रमेयवान् कालपरिमाणादित्यादौ नोक्ताप्रसिद्धिनिबन्धनाव्याप्त्यवकाशः अतएवोक्तं 'अव्याप्यवृत्ति किमपि व्यापकं न स्यादिति, तथाच कालिकविशेषणतया घटत्वावच्छिन्नसाध्यके दोषविरहात् कल्पान्तरानुसरणमनर्थकमेवेति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वाच्यम् । व्याप्यवृत्तिसाध्यकेऽपि साध्यस्य अव्याप्यवृत्तित्वभ्रमदशायामनुमितिनिर्व्वाहाय प्रतियोगिवैयधिकरण्यविषयकज्ञानस्य हेतुतायाः स्वीकरणीयतया तत्रापि प्रतियोगिवैयधिकरण्यप्रसिद्धेरावश्यकत्वात् अन्यथा प्रतियोगिवैयधिकरण्याघटितव्यापकताज्ञानस्य दुर्घटत्वात्, 'अव्याप्यवृत्ति किमपीत्यादेरपि अव्याप्यवृत्तित्वेन ज्ञातं किमपि व्यापकं न स्यादित्यर्थः। वस्तुतस्तु एतत्क्षणान्यक्षणवृत्तित्वविशिष्टप्रमेयवान् कालपरिमाणादित्यादेः कालिकाव्याप्यवृत्तितया तत्र प्रतियोगिवैयधिकरण्यनिवेशस्यावश्यकतया तत्रैवाप्रसिद्धिनिवन्धनाव्याप्तेः कल्पान्तरानुसरणं सङ्गतमित्याहुः। तच्चिन्त्यं, परमेश्वरज्ञानानुयोगिकप्रमेय-घटत्वावच्छिन्ननिरूपितविषयितायां साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्यान्तर्गतायां साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिकत्वस्य घटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिकत्वस्य च सत्त्वेन प्रमेयवन्नित्यज्ञानत्वादित्यादौ घटत्वाद्यवच्छिन्नाभावे प्रतियोगिवैयधिकरण्यस्य दुर्घटतया अव्याप्तेरुक्तरीत्या वारणासम्भवात्। न च शुद्धप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिकत्वस्य त्रित्वावच्छिन्नाभावप्रतियोगितया विवक्षणात् प्रमेयघटत्वाद्यवच्छिन्ननिरूपितविषयितानिरूपकत्वस्य च घटत्वाद्यवच्छिन्नाभावप्रतियोगितावच्छेदकघटत्वादिना शुद्धेनानवच्छिन्नत्वात् तादृशविषयितायामुक्तत्रित्वावच्छिन्नाभावोऽक्षत एवेति वाच्यम्। एवं सति परमेश्वरज्ञानस्य प्रमेयत्वादिसहितघटत्वावच्छिन्नविषयतामात्रेणैव तस्य सार्व्वज्ञ्यनिर्व्वाहे शुद्धघटत्वाद्यवच्छिन्ननिरूपितविषयतायास्तत्र ज्ञानेऽप्रामाणिकतया शुद्धघटत्वाद्यवच्छिन्नसाध्यके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



नित्यज्ञानत्वादिहेतौ शुद्धघटत्वाद्यवच्छिन्नाभावस्यापि प्रतियोगि-वैयधिकरण्यसत्त्वेनाव्याप्तेः ईश्वरज्ञानानुयोगिकविषयितासामान्ये शुद्धघटत्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिकत्वविरहेण विषयितासामान्ये त्वित्वावच्छिन्नाभावस्याक्षतत्वात्। अस्तु वा ईश्वरज्ञानेऽपि शुद्धघट-त्वावच्छिन्नविषयिता तथापि तद्घटत्वावच्छिन्नसाध्यके प्रमेय-त्वसहिततद्घटत्वेनैव यज्ज्ञानं तद्घटं विषयीकरोति तादृशज्ञान-मात्रवृत्तिहेतुकस्थलेऽव्याप्तेर्दुरुद्धरत्वात् तद्घटविषयकेऽपि ज्ञाने तद्घटानधिकरणकालावच्छेदेन तद्घटत्वावच्छिन्नाभावसत्त्वात् तादृशाभावस्य च शुद्धतद्घटत्वरूपप्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न-प्रतियोगिकत्वं तज्ज्ञानानुयोगिकविषयितायां नास्तीति तत्रोक्त-त्वित्वावच्छिन्नाभावसत्त्वेन प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टव्यधिकरण-त्वात्। 'स्वरूपसम्बन्धेन' कालिकसम्बन्धेन, 'निरुक्तप्रतियोग्यन-धिकरणेति प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगितावच्छेदका-वच्छिन्नानधिकरणेत्यर्थः। एवञ्च स्वावच्छिन्नत्व-साध्यतावच्छेदक-सम्बन्धावच्छिन्नत्वोभयाभाववत्तादृशप्रतियोगितासामान्यको यो धर्म्मस्तदवच्छिन्नसामानाधिकरण्यं तद्धर्म्मावच्छिन्नानुमित्यौपयिक-व्याप्तिरिति पर्य्यवसितं, घटवान् महाकालत्वादित्यादौ समवाया-दिना घटाद्यभावीयप्रतियोगितैव प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगिवैयधिकरण्यनिरूपिका प्रसिद्धा तादृशप्रतियोगितासा-मान्ये च कालिकसम्बन्धावच्छिन्नत्वाभावादेव निरुक्तोभयाभाव-वत्त्वमक्षतमिति लक्षणसमन्वयः। धूमवान् वह्नेरित्यादौ संयोगा-दिना घटाद्यभावप्रतियोगितायां समवायादिना धूमाद्यभाव-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रतियोगितायाञ्च धूमत्वाद्यवच्छिन्नत्व-साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वोभयाभावसत्त्वेऽपि साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नाभावप्रतियोगिताया अपि निरुक्तप्रतियोगितासामान्यान्तर्गतत्वेन तत्त्वोभयसत्त्वान्नातिव्याप्तिः, धूमादिसमानाधिकरणस्य समवायादिना वह्न्याद्यभावस्य संयोगादिना घटाद्यभावस्य च प्रतियोगितायां साध्यतावच्छेदकधर्म्मावच्छिन्नत्व-तादृशसम्बन्धावच्छिन्नत्वयोरेकैकसत्त्वेऽपि एकैकाभावेन द्वित्वावच्छिन्नाभावसत्त्वात् लक्षणसमन्वयः। यद्यपि तादृशाभावीयसाध्यतावच्छेदकधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगितासामान्ये साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वमात्रस्याभावनिवेशेऽपि सामञ्जस्यं इदं वाच्यं ज्ञेयत्वादित्यादौ वाच्यत्वत्वाद्यवच्छिन्नभेदादिप्रतियोगितायां साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वविरहमादाय प्रमेयसामान्यसाध्यके संयोगेन जन्यत्वविशिष्टघटादिहेतौ साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नभेदस्य संयोग-समवाय-कालिकविशेषणतासम्बन्धावच्छिन्नतदवच्छिन्नाभावस्य च हेतुमत्यसम्भवेऽपि विषयियतासम्बन्धावच्छिन्नतदवच्छिन्नाभावस्य नित्यज्ञानमात्रवृत्तिहेतौ च संयोगसम्बन्धावच्छिन्नतदवच्छिन्नाभावस्य तद्वति प्रसिद्ध्या तदीयसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगितायामुक्तसम्बन्धावच्छिन्नत्वस्य विरहमादाय लक्षणसमन्वयसम्भवात्। तथापि हेतुमति सर्व्वैरेव सम्बन्धैः साध्यं वर्त्तते न तु कस्यामपि तादृशाभावप्रतियोगितायां साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नत्वमिति भ्रमदशायामप्यनुमितेरानुभविकतया साध्यतावच्छेदकावच्छिन्नत्वेन तादृशाभावप्रति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



योगिताज्ञानासम्भवात् तद्विशेषितप्रतियोगिताधर्म्मिकसम्बन्ध-विशेषावच्छिन्नत्वाभावज्ञानस्यानुमितिहेतुत्वं न सम्भवतीत्यु-भयाभावानुसरणं। प्रमेयत्वाद्यवच्छिन्नसाध्यकस्थले साध्यताव-च्छेदकावच्छिन्नाभावाप्रसिद्ध्या तदवच्छिन्नत्वमप्यप्रसिद्धमिति शङ्कां परिहरति, 'समवायेति, यद्यपि विषयतादावेव तदवच्छिन्नत्व-प्रसिद्धिसम्भवस्तथापि विषयतादिनिष्ठतदवच्छेद्यतायाः प्रति-योगितानिष्ठाया अन्यूनानतिरिक्तवृत्त्यगुरुधर्म्मनिरूपितविलक्षणा-वच्छेद्यतायाश्च एकजातीयत्वस्याप्रामाणिकत्वेऽतिव्याप्तिभयेन प्रतियोगितायां यादृशमवच्छिन्नत्वं तस्यैव लक्षणे निवेशः कार्य्य-इत्यभिप्रायेण तादृशावच्छिन्नत्वस्यैवाप्रसिद्धिर्दर्शिता। ननु प्रति-योगिताधर्म्मिकोभयाभावघटितलक्षणे विषयितादिवृत्त्यनियामक-कसम्बन्धेन साध्यतायां सद्धेतावव्याप्तिः तादृशसम्बन्धस्य वृत्त्य-नियामकतया अभावप्रतियोगितानवच्छेदकत्वेन तत्सम्बन्धाव-च्छिन्नत्वस्याप्रसिद्धेः। न च तादृशसम्बन्धस्य प्रतियोगितानवच्छे-दकत्वेऽपि प्रतियोगितावच्छेदकतावच्छेदकतया अवच्छेदकताया-मेव तत्सम्बन्धावच्छिन्नत्वप्रसिद्धिः प्रतियोगित्व-तदवच्छेदकत्वनिष्ठा-वच्छिन्नत्वयोर्भिन्नत्वेऽपि एकजातीयतया तादृशानुगतरूपेणैव निवेशादिति वाच्यम्। तथा सति तादृशसम्बन्धेन साध्यतायां व्यभिचारिण्यतिव्याप्तेः प्रतियोगिव्यधिकरणहेतुमन्निष्ठाभावीयान्य-सम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगितायां तत्सम्बन्धावच्छिन्नत्वाभावेन तत्-सम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगित्वस्य चाप्रसिद्धत्वेन तादृशप्रतियोगिता-सामान्ये उभयाभावस्याक्षतत्वात् इति चेत्, मैवं, वृत्त्यनियामक-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सम्बन्धेन व्यापकतास्वीकारे तादृशसम्बन्धस्याभावप्रतियोगितानवच्छेदकत्वे प्रतियोगितावच्छेदकतावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगितावच्छेदकानधिकरणहेत्वधिकरणकाभावप्रतियोगितावच्छेदकतासामान्ये साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्व-तादृशरूपावच्छिन्नत्वोभयाभावस्य विवक्षणीयतया सामञ्जस्यात् तथाहि विषयितादिसम्बन्धेन साध्यतायां सद्धेतौ तत्सम्बन्धावच्छिन्नावच्छेदकताकसाध्यवदभावो न प्रतियोगितावच्छेदकताघटकसम्बन्धेन प्रतियोगितावच्छेदकानधिकरणहेत्वधिकरणकः अपि त्वन्यसम्बन्धेन साध्यादिमदभावस्तत्सम्बन्धेनान्यावच्छिन्नस्याभावो वा तादृशः तत्प्रतियोगितावच्छेदकतायाञ्च उभयाभावसत्त्वाल्लक्षणसमन्वयः, तत्सम्बन्धावच्छिन्नसाध्यके व्यभिचारिणि च तादृशसम्बन्धेन साध्यवदभावोऽपि तादृश इति तत्प्रतियोगितावच्छेदकतायामुभयसत्त्वेन नातिव्याप्तिः । वह्निमान् धूमादित्यादौ तु संयोगादिना घटादिमदभावः समवायादिना वह्न्यादिमदभावश्च लक्षणघटकस्तत्प्रतियोगितावच्छेदकतायाञ्चोभयाभावसत्त्वाल्लक्षणसमन्वयः, धूमवान् वह्नेरित्यादौ तु साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेन साध्यवतोऽभावोऽपि तादृश इति तत्प्रतियोगितावच्छेदकतायामुभयस्यैव सत्त्वान्नातिव्याप्तिः अन्यत्सर्व्वं स्वयमूह्यम् ।

पूर्व्वकल्पे दोषान्तरमपि दर्शयति, 'अतएवेति पूर्व्वकल्पं परित्यज्यैतत्कल्पावलम्बनादेवेत्यर्थः, समवायस्य उभयवत्त्वे हेतुः 'एकत्वेनेति, 'उभयसत्त्वेऽपीत्यनेन द्रव्यत्वाभावे हेत्वधिकरणगुणादौ उभयाभावघटितप्रतियोगिवैयधिकरण्यासम्भवः सूचितः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



'द्रव्यं जातेरित्यादाविति, 'नातिव्याप्तिरित्यग्रिमेणान्वयः। यद्यपि प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोग्यनधिकरणत्वं प्रतियोगिनिरूपिततादृशसम्बन्धाननुयोगित्वम् अधिकरणतानिवेशे तादात्म्यसम्बन्धेन व्यभिचारिण्यतिव्याप्तेः तथाच समवायैक्यपक्षे गुणादावपि द्रव्यत्वप्रतियोगिकसमवायानुयोगिता निष्प्रत्यूहैवेति एतत्कल्पेऽपि समवायेन द्रव्यत्वाभावस्य लक्षणघटकत्वानिर्व्वाहः तथापि स्वप्रतियोगिप्रतियोगिकत्वविशिष्टतादृशसम्बन्धनिरूपितविलक्षणानुयोगिताया एव निवेशनीयतया गुणादिनिष्ठसमवायानुयोगितायाश्च द्रव्यत्वीयत्वविशिष्टनिरूपितत्वेन न दोषः। वस्तुतस्तु प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धेन प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टप्रतियोग्यवच्छिन्नभेदो हेतुमद्विषणम् एवञ्च प्रतियोगितावच्छेदकविशिष्टप्रतियोगिकत्वविशिष्टसम्बन्धानुयोगिन्येव भेदानभ्युपगमात् समवायैक्यमतेऽपि समवायेन द्रव्यत्वाद्यवच्छिन्नभेदस्य गुणादावक्षतत्वात् द्रव्यत्वाद्यभावस्य गुणादौ समवायेन प्रतियोगिवैयधिकरण्यमव्याहतमेवेति। इदन्तु बोध्यं (१) समवाय-कालिकविशेषणताद्युभयसम्बन्धेन यत्र द्रव्यत्वादेः साध्यता केवलसमवायेन द्रव्यत्वादेर्हेतुता तत्र साध्यतावच्छेदकसम्बन्धसामान्यान्तर्गतगगनाद्यनुयोगिकसमवायादावुक्तोभयाभावसत्त्वेनातिव्याप्तिः समवायभेदमतेऽपि दुर्व्वारा साध्यतावच्छेदकसम्बन्धतावच्छेदकरूपविशिष्टनिरूपितानुयोगितासामान्ये निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकसम्बन्धनिरूपितत्व--हेत्वधिकरणीभूतयत्किञ्चिद्व्यक्तिनिष्ठत्वोभयाभावस्य

---

(१) इदमवधेयमिति पा०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



विवक्षणेन तादृशदोषवारणे च निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिक-सम्बन्धनिरूपितत्वस्थाने निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकत्वविशिष्ट-विशिष्टसम्बन्धनिरूपितत्वनिवेशेन द्रव्यं जातेरित्यादावतिव्याप्तिः शक्यते वारयितुमित्युक्तम् । इदन्त्ववधेयं स्वसमवायिसंयोगादिसम्ब-न्धेन यत्र लौहित्यादेः साध्यता तत्र सद्धेतौ उभयाभावघटितप्रति-योगिवैयधिकरण्यनिवेशपक्षे स्फटिकाद्यनुयोगिकजवादिसंयोगि लौहित्यादिनिरूपितपरम्परासम्बन्धघटके साक्षाल्लौहित्यप्रतियोगि-कत्वाभावेन हेतुमन्निष्ठसाध्याभावे प्रतियोगिवैयधिकरण्यं दुर्वारं साक्षात्परम्परासाधारणं प्रतियोगिप्रतियोगिकत्वञ्चानुगतं दुर्वचं तादृशस्य तस्य निवेशे अयोगोलकाद्यनुयोगिकवह्निसंयोगा-देरपि धूमादेः परम्परासम्बन्धघटकत्वसम्भवेन धूमादिप्रति-योगिकतया तन्निष्ठधूमाद्यभावेऽपि प्रतिवैयधिकरण्यानुपपत्तिः । न च तादृशसंयोगे संयोगत्वपुरस्कारेण साक्षाल्लौहित्यप्रति-योगिकत्वविरहेऽपि साध्यतावच्छेदकसम्बन्धतावच्छेदकस्वसमवायि-संयोगत्वपुरस्कारेण तत्प्रतियोगिकत्वं स्वीक्रियत इति वाच्यम् । मानाभावात् समवायस्य तत्प्रतियोगिकतयैव तद्घटितपरम्प-रायाः सम्बन्धतोपपत्तेः, किञ्चिद्रूपेणापि संयोगादेर्लौहित्यादि-प्रतियोगिकत्वेऽपि संयोगादिना किञ्चित्समवायिनिरूपितत्वविशि-ष्टसंयोगादिना वा साक्षात्सम्बन्धात्मकेन स्फटिकादौ लौहित्यादि-विशिष्टबुद्धेर्भ्रमत्वानुपपत्तेः प्रमात्वापत्तेश्च, यादृशसम्बन्धे यत्प्र-कारप्रतियोगिकत्व-यद्विशेष्यानुयोगिकत्वोभयाभावस्तादृशसम्बन्धेन तत्प्रकारक-तद्विशेष्यकज्ञानं भ्रम इति तल्लक्षणात् तज्ज्ञानान्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ज्ञानस्यैव तादृशसम्बन्धेन तदंशे प्रमात्वात् संयोगि च उभय-सत्त्वेन उभयाभावासत्त्वात् । न च सम्बन्धभेदेन व्यापकताभेदात् स्वसमवायिसंयोगादिरूपपरम्परासम्बन्धेन यत्र साध्यता तत्र परम्पराघटकविशिष्यांशे प्रतियोगिप्रतियोगिकत्वमुपेक्ष्य निरुक्तप्रतियोगिकपरम्परासम्बन्धघटकविशेषणसमवायादिमत्प्रतियोगिकत्व--स्यैवाभावो निवेशनीयः परम्परासम्बन्धावगाहिबुद्धावपीदृशरीत्या भ्रमलक्षणमूह्यमिति नानुपपत्तिरिति वाच्यम् । यत्र कालिक-सम्बन्धघटितसामानाधिकरण्यसम्बन्धेन घटादिकं साध्यं महा-कालवृत्तित्वादिकं हेतुस्तत्र कालिकसम्बन्धेन गगनादेरवृत्तित्व-पक्षे प्रतियोगिव्यधिकरणाभावाप्रसिद्धेर्दुर्व्वारत्वात् गगनादिनिरू-पितस्य तादृशसामानाधिकरण्यरूपपरम्परासम्बन्धघटकविशेषणां-शस्य कालिकसम्बन्धस्याप्रसिद्धेः विशेषणीभूतसम्बन्धं विशिष्या-निवेश्य निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकसम्बन्धत्वेन सम्बन्धं निवेश्य तद्वत्प्रतियोगिकत्वनिवेशे कालिकविशेषणतावत्समवेतत्वरूपपर-म्परासम्बन्धेन द्रव्यत्वादिसाध्यके द्रव्यवृत्तित्वादिहेतावतिव्याप्तिः तत्र साध्यतावच्छेदकपरम्परासम्बन्धघटकविशेष्यीभूतसमवेतत्वांशे व्यभिचारनिरूपकाधिकरणशब्दज्ञानानुयोगिकत्व-द्रव्यत्वप्रतियोगि-कसम्बन्धत्वावच्छिन्नद्रव्यत्वसमवायवद्गगनादिप्रतियोगिकत्वोभय--सत्त्वेन द्रव्यत्वाभावासंग्रहात्, हेत्वधिकरणानुयोगिकविशेष्यी-भूतसम्बन्धप्रतियोग्यनुयोगिकत्व-निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकत्वोभ-याभावस्य सम्बन्धघटकविशेषणांशे निवेशे स्वसमवायिसमवेत-त्वसम्बन्धेन जातिसाध्यक-मेयत्वादिहेतावतिव्याप्तिः तत्र तादृश-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सम्बन्धघटकविशेषणांशे तादृशसम्बन्धेन साध्याधिकरणरूपहेत्व- धिकरणव्यक्त्यनुयोगिकविशेष्यीभूतसम्बन्धप्रतियोग्यनुयोगिकत्वघ-- टितोभयसत्त्वात् व्यभिचारनिरूपकाधिकरणहेत्वधिकरणानुयोगि- कविशेष्यीभूतसम्बन्धस्य चाप्रसिद्धेः साध्याभावस्य लक्षणाघट- कत्वादभावान्तरस्यैव लक्षणघटकत्वात् । न च परम्परासम्बन्ध- घटकविशेष्यांशे हेत्वधिकरणानुयोगिकत्व-परम्पराघटकविशेषणी- भूतसम्बन्धवन्निरूपितत्व-निरुक्तप्रतियोगिकसम्बन्धवन्निरूपितत्वानां त्रयाणामभावनिवेशान्न दोषः समवायिसमवेतत्वसम्बन्धेन जाति- साध्यकमेयत्वादौ कालिकविशेषणतावत्समवेतत्वसम्बन्धेन द्रव्य- त्वसाध्यक-द्रव्यवृत्तित्वे स्वसमवायिसंयोगसम्बन्धेन लौहित्यसाध्यक- जात्याद्यप्रयुक्तद्रव्यमात्रवृत्तिहेतुके व्यभिचारिणि साध्याभावमप- हाय त्रयाणामभावप्रतियोगित्वेन निवेशः एवञ्च कालिक- विशेषणतादिघटितसामानाधिकरण्यसम्बन्धेन घटसाध्यकमहा- कालवृत्तित्वादौ गगनाभावस्य संग्रहः गगनादिनिरूपितकालिक- सम्बन्धाप्रसिद्धावपि तन्निरूपिततादात्म्य-विषयितादिसम्बन्धवन्नि- रूपितत्वप्रसिद्ध्या त्रित्वावच्छिन्नाभावसौलभ्यादिति वाच्यम् । स्वीयकालिकसम्बन्धघटितसामानाधिकरण्यसम्बन्धेन जन्यज्ञानादेः साध्यत्वे व्यभिचारिणि कालवृत्तित्वादिहेतावतिव्याप्त्यापत्तेः । व्यभिचारनिरूपकाधिकरणप्रलयत्वादिनिष्ठायाम् उक्तसम्बन्ध- घटकाधेयतायां कालिकसम्बन्धवन्निरूपितत्व-साध्यीयविषयता- सम्बन्धवन्निरूपितत्वयोः सत्त्वेनाधेयतासामान्ये दर्शितत्रित्वावच्छि- न्नाभावासत्त्वेन साध्याभावस्य प्रतियोगिवैयधिकरण्यानिर्व्वाहात् ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



न च निरुक्तप्रतियोगिप्रतियोगिकाभावप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धवन्निरूपितत्वं विवक्षणीयं तादात्म्यातिरिक्तवृत्त्यनियामकसम्बन्धस्याभावप्रतियोगितानवच्छेदकतया तादात्म्यस्य तथात्वेऽपि वियतताया अतथात्वेन न दोष इति वाच्यम्। विषयतावत्समवेतत्वसम्बन्धेन ज्ञानसाध्यके नित्यगुणादिसमवेतत्वहेतावव्याप्तेः प्रतियोगिताधर्म्मिकोभयाभावघटितलक्षणे च नैयमनुपपत्तिः हेत्वधिकरणस्फटिकादिनिष्ठस्य समवायादिना प्रतियोगिव्यधिकरणस्याभावस्य समवायादिसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगितायां स्वसमवायिसंयोगादिरूपपरम्पराया अवच्छेदकत्वाभावेनोभयाभावाक्षतेः। न च स्वसमवायिसमवायादिसम्बन्धेन घटरूपादिसाध्यके समवायादिना घटादिहेतावव्याप्तिः समवायिनिरूपितत्वविशिष्टस्वसमवायादिसम्बन्धावच्छिन्नायां हेतुमत्कपालादिनिष्ठसाध्याभावप्रतियोगितायां स्वसमवायिसमवायरूपसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वसत्त्वात्, न हि तत्र दर्शितप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्ध-साध्यतावच्छेदकसम्बन्धयोः शरीरवैलक्षण्यं किमपि शक्यते वक्तुं, स्वांशस्य सम्बन्धाप्रवेशात् (१) इतरांशस्याविशेषात्। इयांस्तु विशेषः दर्शितसाध्यतावच्छेदकसम्बन्धस्य संसर्गतया भाने प्रथमसमवायविषयता प्रकारतानिरूपिता द्वितीयसमवायविषयता विशेष्यतानिरूपिता उक्तप्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धस्य तथा भाने द्वितीयसमवायविषयतैव प्रकारता-विशेष्यतोभयनिरू-

---

(१) अन्यसम्बन्धस्यान्यसम्बन्धत्वाभावात् स्वत्वस्य परिचायकतामात्रार्थकत्वादिति भावः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



पितेति सचानुपयुक्त एवेति वाच्यं। परम्परासम्बन्धावच्छिन्ना-भावस्य हि प्रतियोगितावच्छेदकसम्बन्धता परम्पराघटकयाव-द्वस्तुषु विशेष्य-विशेषणभावापन्नेषु पर्य्याप्ता, विशिष्टसाक्षात्-सम्बन्धावच्छिन्नाभावस्य तु तादृशसम्बन्धता विशेष्य-एव पर्य्याप्ता विशेषणन्तु सम्बन्धविधया अवच्छेदकतायामवच्छेदकत्वमेव न तु तदन्तर्भावेन सम्बन्धविधया प्रतियोगित्वावच्छेदक-त्वस्य पर्य्याप्तिः, ईदृशरीत्यैवाभाववैलक्षण्यनिर्व्वाहात् तथाच परम्परासम्बन्धेन यत्र साध्यता तत्र परम्पराघटकयावद्वस्तुषु पर्य्याप्तावच्छेदकताकत्वरूपं साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वं निवेशनीयम् उक्तस्थले चाधिकरणविशेषणीभूतसमवायस्य प्रति-योगितावच्छेदकतायामेवावच्छेदकतया प्रतियोगितायां तदन्तर्भा-वेन पर्य्याप्तावच्छेदकताकत्वाभावान्नाव्याप्तिरिति दिक्। संयोग-त्वावच्छिन्नस्य द्वित्वावच्छिन्नप्रतियोगिकत्वविरहेऽपि वह्नि धूमोभय-वान् वह्नेरित्यादौ नातिव्याप्तिरिति योजना, अयं भावः प्रत्येकं संयोगत्वावच्छिन्नस्य द्वित्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकत्वविरहेण वह्नि-धूमोभयवान् धूमादित्यत्र संयोगसम्बन्धसामान्ये वह्नि-धूमोभयत्वा-वच्छिन्नप्रतियोगिताकत्व-द्वित्वधिकरणानुयोगिकत्वोभयाभावसत्त्वात् तादृशोभयत्वावच्छिन्नाभावोऽपि संयोगेन प्रतियोगितावच्छेदकाव-च्छिन्नव्यधिकरणतया लक्षणघटक इत्यव्याप्तिः स्यादतः संयोगे-नोभयसाध्यकस्थले प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नत्वं परित्यज्य प्रतियोगिताश्रयप्रतियोगिकत्वमेव निवेशनीयं तथाच वह्नि-धूमोभयवान् वह्नेरित्यादावपि वह्नि-धूमोभयत्वावच्छिन्नाभावस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


लक्षणाघटकतया पूर्व्वकल्पेऽतिव्याप्तिः स्यादिति। अथ साध्यतावच्छेदकादिभेदेन चेद्व्याप्तिपदार्थभेदस्तदैव प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नत्वपरित्यागः स्थलविशेषे सम्भवति तथाच साधनभेदेनापि तुल्ययुक्त्या तद्भेदात् धूमरूपहेतुक-वह्नि-धूमोभयात्मकसाध्यघटितव्याप्तिपदार्थप्रसिद्धिनिर्व्वाहाय तच्छरीरे प्रतियोगिताश्रयवैयधिकरण्यनिवेशनस्य वह्निहेतुक-तदुभयसाध्यकस्थले कथमतिव्याप्तिप्रसञ्जकत्वमिति चेत्, यथा संयोगसामान्ये द्वित्वावच्छिन्नप्रतियोगिकत्वाभावनिश्चयदशायामपि धूमेन वह्नि-धूमोभयानुमितिर्भवतीति प्रतियोगिताश्रयप्रतियोगिकत्वघटितोभयाभावविषयकं च ज्ञानं धूमलिङ्गकताद्दशोभयानुमितिजनकमङ्गीक्रियते तथा ताद्दशनिश्चयदशायां सकलवह्निसत्तामेव धूमवत्त्वमिति भ्रान्तानां वह्निहेतुक-तदुभयानुमितिरप्यनुभवसिद्धेति, तत्रापि प्रतियोगिताश्रयप्रतियोगिकत्वघटितोभयाभावविषयकज्ञानमेवानुमितिजनकं वाच्यम् तथाच तद्धेतुक-तत्साध्यकानुमितिजनकज्ञानस्य प्रमात्वप्रसङ्ग इत्येवातिव्याप्तिपदार्थः, एवं वह्नि-धूमोभयत्वेनोभयं धूमव्यापकमिति वाक्यादुयथोक्तनिश्चयदशायां शाब्दबोधो जायते तथा वह्नि-धूमोभयत्वेन उभयं वह्निव्यापकमित्यनाप्तोक्तवाक्यादपि योग्यताभ्रमाच्छाब्दबोधः सर्व्वानुभवसिद्ध इति प्रतियोगिताश्रयप्रतियोगिकत्वमेव तत्र शाब्दधीविषयः स्वीकरणीयस्तथाच तद्विषयकधियः प्रमात्वेन ताद्दशवाक्यस्य प्रमाणतापत्तिरित्यपीति अतिप्रसङ्गपदार्थ इति शेषः। वह्नेरित्यत्र धूमादिति नातिव्याप्तिरित्यनन्तरमव्याप्तिर्व्वेति पाठम् केचित् कल्पयन्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



यथासंख्येन च स्थलद्वयेऽतिव्याप्त्यव्याप्ती योजयन्ति, इदमत्रावधेयं घटद्वयवद्भूतलमित्यादौ द्वित्वोपलक्षितघटादिवैशिष्ट्यं तद्विशिष्ट-वैशिष्ट्यं वा भासते, आद्ये एकघटादिमत्यपि तत्प्रसङ्गः। न च द्वित्वोपलक्षितस्यापि व्यक्तिद्वयस्यैव वैशिष्ट्यद्वयं तत्र भासते इति नातिप्रसङ्ग इति वाच्यम्। एकस्मिन्नपि धर्म्मिणि भेदभ्रमेण द्वित्व-भ्रमात् तत्प्रकारकप्रतीतावुभयभानानियमात् तादृशबुद्धेर्द्वित्व-विशिष्टाभावज्ञानविरोधित्वानुपपत्तिश्च विशिष्टवैशिष्ट्यज्ञानस्यैव विशिष्टाभावबुद्धिविरोधित्वात्, द्वितीये संयोगसंसर्गकतादृशज्ञान-मात्रस्यैव भ्रमत्वापत्तिः संयोगरूपवैशिष्ट्ये द्वित्वावच्छिन्नप्रति-योगिकत्वविरहात् तस्मात् द्वित्वादिविशिष्टप्रतीतौ संयोगमात्रं न सम्बन्धः अपि तु द्वित्वावच्छिन्ननिरूपिताधिकरणतैव, अधि-करणता च पदार्थान्तरमधिकरणस्वरूपं वा उभयथैव निरूपक-भेदेऽपि निरूपकतावच्छेदकद्वित्वस्यैक्यात् तदैक्यमिति संयोगप्रति-योगितावच्छेदकत्ववत् न तत्प्रतियोगितावच्छेदकत्वस्य द्वित्वेऽनुप-पत्तिरित्यपेयम्. एवञ्च वह्नि-धूमोभयत्वावच्छिन्नसाध्यके संयोगा-वच्छिन्नाधिकरणताया एव साध्यतावच्छेदकसम्बन्धत्वं तत्र चोभय-त्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकत्वसत्त्वान्नाव्याप्तिप्रसक्तिः अन्यथा द्वितीय-कल्पेऽपि प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्ननिरूपितप्रतियोगिताव-च्छेदकसम्बन्धाननुयोगित्वनिवेशात् उभयत्वावच्छिन्नप्रतियोगिक-संयोगाप्रसिद्ध्या संयोगेनोभयत्वावच्छिन्नसाध्यके व्यभिचारिणि तत्सम्बन्धावच्छिन्नसाध्यतावच्छेदकावच्छिन्नप्रतियोगिताया लक्षणा-घटकत्वेनातिव्याप्तेर्वज्रलेपत्वात्। वस्तुतस्तु पर्व्वतोवह्निमान् इत्या-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



दावपि संयोगावच्छिन्नाधिकरणतैव सम्बन्धो न तु संयोगमात्रम् अन्यथा पर्व्वतो वह्निमानित्यत्रेव पर्व्वते वह्निरित्यत्रापि संयोग-मात्रस्यैव तथात्वापत्त्या अविशेषप्रसङ्गात्, तादृशप्रतीत्योर्विशेषाय प्रथमायां संयोगः द्वितीयायां तदवच्छिन्नाधेयता संसर्ग इत्युपेयतां, किं वा प्रथमायां संयोगावच्छिन्नाधारता द्वितीयायां संयोगस्तथेत्यत्र विनिगमकस्य दुर्ल्लभत्वात्। न च तादृशप्रत्यीत्योः संसर्गांशे अविल-क्षणत्वेऽपि विशेष्य-विशेषणभावभेदाद्वैलक्षण्योपपत्तिसम्भव इत्युभय-त्रैव संयोगमात्रस्य सम्बन्धतास्त्विति वाच्यम्। तावता पर्व्वतो-वह्निमान् वह्नौ पर्व्वत इत्यनयोः पर्व्वते वह्निः पर्व्वतवान् वह्नि-रित्यनयोश्च प्रतीत्योः विशेषानिर्व्वाहात्। न चैवं रूपवान् वह्नि-रित्यादावपि समवायावच्छिन्नाधारतैव सम्बन्धः स्यान्न तु सम-वायः उक्तयुक्तेरविशेषादिति वाच्यम्। समवायातिरिक्तसमवाया-वच्छिन्नाधारतानभ्युपगमात्। अथ समवायावच्छिन्नाधारतायाः समवायरूपत्वेऽपि समवायावच्छिन्नाधेयता अवश्यमतिरिक्ता स्वीकरणीया अन्यथा रूपवान् घटः घटे रूपमिति प्रतीत्योः संसर्गवैलक्षण्यानुपपत्तेः, तथाच समवायावच्छिन्नाधेयता आधा-रता वा अतिरिक्तेत्यत्र विनिगमकं दुर्ल्लभमिति समवायातिरिक्ता-धारतासिद्धिर्निष्प्रत्यूहैवेति चेन्न, घटानुयोगिकरूपप्रतियोगिक-सम्बन्धो रूपानुयोगिकघटप्रतियोगिकसम्बन्धश्च परस्परं विलक्षण-एव अन्यथा दर्शितस्थले संसर्गवैलक्षण्यानिर्व्वाहादिति सत्यं, तत्र चाधारानुयोगिकः सम्बन्ध एव समवाय इति परिभाषितः न त्वाधे-यानुयोगिकः सम्बन्धः, स त्वाधेयतेत्येव परिभाष्यते तत्र को विनिग-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मकानुयोगः। न चैवं संयोगिन्यपि संयोग एवाधारतास्तु सचानुयोगितासम्बन्धेनाधारपदप्रवृत्तिनिमित्तमिति संयोगस्य द्विष्ठत्वेऽपि नाधेये तद्व्यवहार इति वाच्यं। संयोगीयसमवायातिरिक्तायाः आधेयव्यावृत्तानुयोगितायाः स्वीकारे तस्या एव संयोगिनिरूपिताधिकरणतात्वोपगमेनातिरिक्ताधारताया निष्प्रत्यूहत्वात्। न च तत्र सं योगिप्रतियोगिकत्वं कल्पनीयमिति गौरवं. भवन्मतेऽपि संयोगि तत्समवेतत्वातिरिक्तस्य तत्प्रतियोगिकत्वस्य कल्पनीयतया साम्यात् अन्यथा भूतलादेः स्वसमवेतघटादिसंयोगानुयोगितया आधारतापत्तेः। एतेन संयोगिन्याधेयतापि संयोग एव प्रतियोगितासम्बन्धेन तस्याधेयपदप्रवृत्तिनिमित्ततया आधारे न तद्व्यवहार इत्यपि निरस्तं। आधेयनिष्ठाधारव्यावृत्तपदार्थान्तरकल्पनाया आवश्यकत्वात्, आधाराधेययोः संयोगानुयोगित्व-प्रतियोगित्वकल्पने विपरीतकल्पनाया अपि बाधकाभावाच्चेति दिक्(१)।

---

न चैवं संयोगिन्यपि संयोगएवाधारतास्तु स चानुयोगितासम्बन्धेनाधारपदप्रवृत्तिनिमित्तमिति समवायवत्संयोगस्यापि सम्बन्धत्वं दुर्व्वारं स च स्वानुयोगिन्येव धर्म्मस्य विशिष्टप्रमानियामकः, अतः संयोगसंसर्गक-घटोभूतलवानित्यादिबुद्धेर्न प्रमात्वं भूतले घट इत्यादिबुद्धौ च स्वनिष्ठसंयोगप्रतियोगित्वं धर्म्मे धर्म्मिसंसर्गतया भासत इति वाच्यम्। संयोगो धर्म्मी एव धर्म्मिणः संसर्गः धर्म्मी एव तदनुयोगित्वं धर्म्मिणि तु तत्प्रतियोगित्वमिति भूतले घट इत्यादावेव संयोगस्य सम्बन्धतया भानं घटवद्भूतलमित्यादौ तु स्वनिष्ठसंयोगप्रतियोगित्वं धर्म्मिणि धर्म्मसम्बन्ध इत्यस्यापि सुवचत्वेन विनिगमनाविरहात् तस्मात् संयोगेन धर्म्मत्व-धर्म्मित्वयोरेव धर्म्मि-धर्म्मिणोर्धर्म्मि-धर्मसम्बन्धयोः संयोगावच्छिन्नत्वेन सम्बन्धान्तरेण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



एकानुयोगिकसंयोगद्वयप्रतियोगितायाः प्रत्येकमुभयत्वावच्छिन्नत्वविरहेऽपि तदुभयत्वेनोभयत्वावच्छिन्नत्वोपगमान्न संयोगिनोभयसाध्यकेऽव्याप्तिरित्यप्याहुः ।

तत्त्वचिन्तामणिदीधितिः ।

प्रतियोगित्वादिश्च स्वरूपसम्बन्धविशेषो न सम्बन्धत्वेन निविष्टः, सामानाधिकरण्येऽपि सम्बन्धः संयोगत्वादिनैव निविशते, दर्शितञ्च नियमाघटितमपि सम्बन्धत्वम् । अभावत्वञ्चेदमिह नास्तीदमिदं न भवतीतिप्रतीतिनियामकोभावाभावसाधारणः स्वरूपसम्बन्धविशेषः अतो नाभावसाध्यकव्यभिचारिण्यतिप्रसङ्गः । तदपि वा नोपादेयं प्रयोजनविरहात् विषयता-तत्त्वादिवत् प्रतियोगित्वाधिकरणत्व-तत्त्व-सम्बन्धत्वादयोऽप्यतिरिक्ता एव पदार्था इत्येकदेशिनः ।

इति श्रीमहामहोपाध्याय-रघुनाथशिरोमणि-भट्टाचार्य्यविरचितायामनुमानचिन्तामणिदीधितौ सिद्धान्तलक्षणदीधितिः समाप्ता ।

---

धर्म-धर्मिभावाद्वैलक्षण्यं गुरुमते समवेत-समवायिनोरपि धर्म-धर्मिभाव एव विशिष्टधीविषयः तन्मतेऽतीन्द्रियतया समवायस्तु न तथेति मिश्राः । तत्र समवायस्य धर्मिमात्रनिष्ठतया तस्यैव धर्मितारूपत्वसम्भवेनातीन्द्रियसमवायस्यातिरिक्तस्य कल्पनागौरवं बोध्यमिति दिक् इत्यधिकः पाठः कस्मिंश्चिदादर्शपुस्तके वर्त्तते ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## गदाधरी विवृतिः ।

प्रतियोगित्वावच्छेदकत्वादेः स्वरूपसम्बन्धरूपतया सम्बन्धत्वेन तन्निवेशे सम्बन्धत्वस्य नियमघटिततया अनवस्थेत्याशङ्कां निरस्यति, 'प्रतियोगित्वादिश्चेति, सम्बन्धविशेषोऽपि न सम्बन्धत्वेन लक्षणघटकः अपि तु प्रतियोगितात्वादिना कुत्रचित् सम्बन्धविधया स्वरूपत एवेत्यर्थः। ननु तत्सामानाधिकरण्यं तत्सम्बन्धिसम्बन्धित्वं तत्र च सम्बन्धत्वेनैव सम्बन्धनिवेश इत्याशङ्क्याह, 'सामानाधिकरण्येऽपीति, 'संयोगत्वादिनैवेति, साधनतावच्छेदकादिभेदेनैव सम्बन्धतावच्छेदकभेदेनापि व्याप्तिभेदस्येष्टत्वादिति भावः। साध्यसामानाधिकरण्यशरीरे साध्यवत्संयुक्तत्वादिरूपहेतोः सम्बन्धस्य प्रकारतया तस्यैव संयोगत्वादिना निवेशः, साध्यसम्बन्धस्य च धर्म्मंशे तत्संसर्गविधयैव लाघवेन निवेशात्तस्य स्वरूपत एव निवेशः सम्भवति ज्ञात्यतिरिक्तस्यापि संसर्गतया भाने स्वरूपतोऽपि तदुपगमादित्यवधेयम्। सम्बन्धत्वनिवेशेऽपि च न क्षतिरित्याह, 'दर्शितञ्चेति, 'नियमाघटितमिति तत्प्रतियोगिकत्वविशेष एव तदीयसम्बत्वं न तु तदीयविशिष्टबुद्धिनियामकत्वं, अतीन्द्रियसम्बन्धे जनकत्वरूपनियामकत्वासम्भवात् विषयत्वरूपनियामकत्वनिवेश व्याप्तेरेवानन्तर्भावात् प्रमेयमात्रेऽतिप्रसङ्गाच्च। न च विशेष्यतान्यतत्प्रकारतानिरूपितविषयताया एव विवक्षणीयतया नातिप्रसङ्ग इति वाच्यम्। एवं सति संयोगादिना द्रव्यत्वादिभ्रमविषयतामादाय तस्यापि तत्सम्बन्धत्वापातात्। न च विषयतायां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रमाप्रतियोगिकत्वनिवेशान्नातिप्रसङ्ग इति वाच्यम्। प्रमात्वस्य तत्सम्बन्धानुयोगिविशेष्यकत्वावच्छिन्नतत्प्रकारकत्वरूपतया सम्बन्धत्वघटितत्वात्, एवं तदनुयोगिकत्वविशेष एव तत्र तत्सम्बन्धत्वमिति भावः। इत्थञ्च सामान्यतः सम्बन्धघटितसाध्यवत्सम्बद्धत्वरूपं सामानाधिकरण्यं साध्यवदनुयोगिकप्रतियोगित्वं प्रतियोगितासम्बन्धेन साध्यवदनुयोगिकवत्त्वं वा तच्च संयोगत्वादिना तद्घटितत्वात् साध्यवदनुयोगिकसंयोगप्रतियोगित्वादिरूपाल्लघुशरीरमिति तदेव व्याप्तिघटकं वाच्यम् अतिप्रसङ्गस्य व्यापकतायां विशिष्य सम्बन्धनिवेशेनैव वारणसम्भवात् हेतौ साध्यवदसंयुक्तत्वादिनिश्चयदशायां संयोगादिना पक्षे हेतुमत्तानिश्चयस्य साक्षादनुमितिप्रतिबन्धकताया अग्रे वक्तव्यतया ततोऽनुमित्यापत्त्यनवकाशादिति सूचितम्। अभावत्वञ्चेदिह भावभिन्नत्वं तदा प्रतियोगितायां साध्यतावच्छेदकधर्म्मावच्छिन्नत्वताद्दृशसम्बन्धावच्छिन्नत्वोभयाभावनिवेशपक्षे दैशिकविशेषणतया घटत्वाभावादिसाध्यके व्यभिचारिण्यतिव्याप्तिः ताद्दृशसम्बन्धावच्छिन्नतदभावस्य घटत्वादिरूपतया भावभिन्ननिरूपितप्रतियोगितायां तत्सम्बन्धावच्छिन्नत्व-घटत्वाभावत्वावच्छिन्नत्वोभयाभावस्याक्षतत्वादित्याशङ्कां निरस्यति 'अभावत्वञ्चेति, 'इदमिह नास्ति इदमिदं न भवतीति द्विविधप्रतीतिकथनेनाभावत्वस्य संसर्गाभावान्योन्याभावोभयसाधारण्ये प्रमाणमुपदर्शितं, तस्यान्योन्याभावसाधारण्यविरहे अभावान्तरप्रतियोगितासामान्ये तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नत्वविरहेण तेन सम्बन्धेन साध्यतायां व्यभिचारि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



ण्यतिप्रसङ्गात् । 'भावाभावसाधारण इति, भावेनापि घटे घटत्वाभावो नास्ति घटो न घटभिन्न इति प्रतीतिजननादिति भावः । तदवच्छिन्नेऽभावपदस्य रूढ़िशक्तिः परिभाषैव वा अतो न भावोऽभाव इत्यवयवव्युत्पत्त्या तद्धर्म्माप्रत्ययेऽपि न क्षतिः । 'स्वरूपसम्बन्धविशेष इति अभावे तत्स्वरूपप्रतियोगिनिरूपितानुयोगित्वनामा सम्बन्धविशेष इत्यर्थः । न चाभावत्वस्य स्वरूपत्वेऽननुगमादनुगतप्रत्ययानुपपत्तिः, तदनुगमकरूपान्तराभ्युपगमात् पदार्थान्तरत्वेऽपि निरूपकभेदेन सम्बन्धान्तरवत्तद्भेदस्यावश्यकतया अनुगमकरूपान्तरापेक्षणात् । यत्तु प्रतियोगिनिरूपितसम्बन्धानामननुगमेऽपि प्रतियोगिधर्म्मितावच्छेदकस्य नञ्पदप्रवृत्तिनिमित्ताखण्डधर्म्मान्तरस्य सत्त्वाद्घटो नास्ति पटो नास्तीत्याद्यनुगतप्रतीतिनिर्व्वाह इति, तन्न साधीयः, घटादौ पटाद्यभावादेः कालिकसम्बन्धस्यापि स्वरूपतया तत्संसर्गकप्रतीतितो घटाभावो नास्तीत्याद्यनुयोगितासंसर्गकप्रतीतिवैलक्षण्याय संसर्गतावैलक्षण्यस्यावश्यकतया संसर्गतावच्छेदकधर्म्मविशेषस्वीकारस्य तन्निर्व्वाहकस्यावश्यकत्वात् तेनानुगतीकृतानुयोगिताया एव संसर्गतावद्धर्म्मितावच्छेदकताया अपि सम्भवेनाभावनिष्ठाखण्डधर्म्मान्तरे मानाभावात् नञ्पदप्रवृत्तिनिमित्तताया अपि तस्या एवोपगमात् । अथ नास्तीत्यादावनुयोगितारूपसम्बन्धविशेषप्रकारेणाभावभानोपगमे तदंश एव स्वनिरूपितत्वसम्बन्धेन प्रतियोगिनः प्रकारत्वसम्भवादभावांशे तत्सम्बन्धेन प्रतियोगिनो भाने मानाभावादनुयोगितायाः सम्बन्धत्व-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मेव न सिद्धेरदिति चेन्न, मण्याद्यभावस्य दाहादिहेतुतायां मण्यादि-रूपप्रतियोग्यवच्छिन्नानुयोगिताविशेषस्यावच्छेदकत्वापेक्षया अनु-योगितासम्बन्धेन मण्यादेस्तथात्वे लाघवेन तत्सम्बन्धतासिद्धेः। न चोभयात्वावच्छिन्नाभावादिवारणाय मणित्वाद्यवच्छिन्ननिरू-पितानुयोगिता मण्यादेः सम्बन्धो वाच्यः तथाच तादृशानुयोगि-ताया आश्रयतासम्बन्धेनावच्छेदकत्वेऽपि न गौरवमिति वाच्यम्। उभयत्वाद्यवच्छिन्ननिरूपितानुयोगितया मणित्वादिविशिष्ट-सम्बन्धताविरहात् शुद्धानुयोगितासम्बन्धेनैव मणित्वादिविशिष्टस्य उभयत्वाद्यवच्छिन्नाभावव्यावर्त्तकतासम्भवेन तादृशानुयोगितात्वेन सम्बन्धत्वानुपगमात्। न च तादृशस्य विशिष्टमणित्वाद्यवच्छिन्ना-भावव्यावर्त्तकता न सम्भवति विशिष्टमणित्वाद्यवच्छिन्ननिरूपिता-नुयोगितायामप्यधिकन्त्वित्यादिन्यायेन मणित्वादिविशिष्टनिरू-पितत्वसत्त्वेन तस्या अपि तत्सम्बन्धत्वादिति वाच्यम्। कारणता-वच्छेदकतापर्य्याप्त्यधिकरणपरिसमाप्तप्रतियोगिताकसम्बन्धिन एव कारणतया मणिर्नास्तीत्याद्याकारकशुद्धमणित्वाद्यवच्छिन्नप्रकार-कप्रतीत्यविषयविशेषणान्तरसहितमणित्वाद्यवच्छिन्नाभावनिष्ठता-दृशमणित्वाद्यवच्छिन्ननिरूपितसम्बन्धे च शुद्धमणित्वादिविशिष्ट-परिसमाप्तप्रतियोगिताकत्वविरहेण तादृशाभावव्यावर्त्तनसम्भवात्। एतेन विशिष्टमणित्वाद्यवच्छिन्नाभाववारणाय शुद्धमणित्वाद्यव-च्छिन्नप्रतियोगिताकत्वेन हेतुता वाच्या शुद्धमणित्वाद्यवच्छिन्नत्वञ्च मणित्वान्यधर्म्मानवच्छिन्नत्वं तदपि यदि तादृशधर्म्मावच्छेद्य-त्वत्वावच्छिन्नाभावस्तदा किञ्चिद्विशिष्टतादृशावच्छेद्यत्वत्वावच्छि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



न्नाभावमादायातिप्रसङ्ग इति शुद्धतादृशावच्छेद्यत्वत्वावच्छिन्नाभाव एव निवेशनीयः शुद्धतादृशावच्छेद्यत्वत्वावच्छिन्नत्वमपि तदतिरिक्तानवच्छिन्नत्वमिति विशेषणानवस्थाप्रसङ्ग इत्यपि परास्तं, इत्यलमप्रस्तुताधिकजल्पनया। यदि चान्योन्याभावात्यन्ताभावसाधारणमभावत्वं नैकं प्रमाणाभावात् अतएव संसर्गाभावोऽन्योन्याभावश्च नञर्थ इत्यनेन तयोः पृथगेव नञर्थत्वमुक्तं, तथाच संसर्गाभावप्रतियोगितायां तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नत्वस्यान्योन्याभावप्रतियोगितायां संसर्गावच्छिन्नत्वस्याभावादुभयाभाववत्प्रतियोगितागर्भलक्षणातिव्याप्तिरित्यत आह, 'तदपि वेति, 'तदपि' तादृशाभावत्वमपि, 'नोपादेऽयं' हेतुसमानाधिकरणांशे विशेषणतया न निवेशनीयं, 'प्रयोजनाभावादिति, (१) स्वावच्छेदकविशिष्टानधिकरणहेतुमन्निष्ठत्वमात्रपुरस्कारेणाभावं निवेश्य तदीयत्वेन प्रतियोगितानिवेशादेव सर्व्वसामञ्जस्यादिति भावः। प्रसङ्गात् प्रतियोगित्वादीनां पदार्थान्तरत्वं व्यवस्थापयति, 'विषयतेति, 'तत्त्वं' विषयतात्वं, प्राचीनैकदेशिभिर्विषयताया अतिरिक्तपदार्थत्वोपगमात् दृष्टान्तत्वेन तदुपन्यासः, यथा विषयताया विषयरूपत्वे द्रव्यत्वावच्छिन्नघटादिविषयकज्ञानात् घटत्वावच्छिन्नतद्विषयकज्ञानस्य वैलक्षण्यविरहादवैलक्षण्यापत्तिः, न च द्रव्यत्वघटत्वयोरपि तत्र विषयतया तद्वैलक्षण्यादेव वैलक्षण्यमिति वाच्यं। तावतापि द्रव्यत्वेन घटविषयकाद्घटत्वेन च पटविषय-

---

(१) प्रयोजनविरहादित्यत्र प्रयोजनाभावादिति क्वचित् दीधितिपुस्तकपाठो वर्त्तते तमनुसृत्यैव प्रयोजनाभावादिति पाठ उद्धृतो भट्टाचार्य्येणेत्यनुमीयते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh


काज्ज्ञानाद्घटत्वेन घटं द्रव्यत्वेन पटमवगाहमानस्य ज्ञानस्य वैलक्षण्योपपादानस्याशक्यत्वात्, ज्ञानस्वरूपत्वे घट-पटावित्यादि-समूहालम्बनीयघट-पटादिनिष्ठविषयतानामभिन्नतापत्त्या तादृश-ज्ञानस्य पटत्वाद्यवच्छिन्नघटादिनिष्ठविषयताशालितया भ्रमत्वा-पत्तिः ज्ञान-विषयोभयरूपत्वे च जातिमान् घट इत्यादिज्ञानीय-घटत्वादिविषयतायाद्वैविध्यानुपपत्तिः ज्ञान-विषययोरतथात्वा-दिति जातिमानित्याद्याकारकैकविधघटत्वादिविषयताशालि-ज्ञानात्तादृशबुद्धेर्विलक्षणाकारकता न स्यात् इत्यादियुक्त्या विषयताया विषयभेदभिन्नविषयतानामननुगमकतया च विषय-तात्वस्यातिरिक्ततासिद्धिस्तथा प्रतियोगितायाः प्रतियोगिस्वरूपत्वे घटादिनिष्ठानां घटत्व-द्रव्यत्वादिरूपविभिन्नधर्म्मावच्छिन्नप्रति-योगितानां संयोग-समवायादिरूपविभिन्नसम्बन्धावच्छिन्नानाञ्च प्रतियोगितानामवैलक्षण्येनाभाववैलक्षण्यानुपपत्तिः तथाच पटादि-मत्यपि घटत्वावच्छिन्नप्रतियोगित्वाभिन्नघटादिस्वरूपद्रव्यत्वाव-च्छिन्नप्रतियोगितानिरूपकाभावमादाय द्रव्यन्नास्तीत्यादिप्रतीत्या-पत्तिः, एवं घटसमवायवत्यपि संयोगावच्छिन्नप्रतियोगित्वाभि-न्नघटरूपसमवायावच्छिन्नप्रतियोगितानिरूपकमभावमादाय सम-वायेन घटोनास्तीत्यादिप्रतीत्यापत्तिः प्रतियोगितावच्छेदक-रूपत्वेप्येष दोषः (२)। अभावस्वरूपत्वे घटाद्यभावीयघटत्वा-द्यवच्छिन्नप्रतियोगित्व - किञ्चिद्विशिष्टघटाभावाभावत्वाद्यवच्छिन्न-

---

(२) तथाचेत्यादिः एष दोष इत्यन्तः पाठो बहुष्वादर्शपुस्तकेषु नास्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रतियोगितानामवैलक्षण्यापत्तिः घटत्वादेः प्रतियोगित्वन्यूनवृत्तितया तदवच्छेदकत्वानुपपत्तिः घटाद्यभावस्य पटादिसाधारण्येन पटादावपि तत्प्रतियोगितापत्तिश्च इत्यादियुक्त्या प्रतियोगित्वमप्यतिरिक्तं सिद्ध्यति, एवमधिकरणत्वं नाधिकरणस्वरूपमाधेयस्वरूपं वा भूतले घटसंयोगदशायामिव परम्परासंयुक्तभूतलसत्त्वदशायामपि इदानीं भूतलं घटवदितिप्रत्ययप्रसङ्गात् । संयोगरूपत्वे आधेयत्वस्य तुल्ययुक्त्या तद्रूपतया आधारत्वाधेयत्वयोरभेदप्रसङ्गेन वैपरीत्येनाधाराधेयभावप्रत्ययप्रसङ्गादिति तदप्यतिरिक्तपदार्थः, सम्बन्धत्वमपि क्लृप्तपदार्थान्तर्भावेन दुर्व्वचमिति पदार्थान्तरमेवेति भावः । आदिपदादभावत्वादिपरिग्रहः, इदन्तु बोध्यं, अभावत्वं प्रतियोगित्वान्नातिरिच्यते तदभावस्य तत्प्रतियोत्वनियमात् । न चैवं घटादेर्घटादिभेदाभावत्वापत्त्या घटादिमति भूतले घटभेदो नास्तीत्यादिप्रतीत्यापत्तिरिति वाच्यं । संसर्गावच्छिन्नप्रतियोगितायामेवाभावाभावत्वरूपतोपगमात् घटादिभेदस्य घटत्वात्यन्ताभावसमनियतत्वेन तदभिन्नतया घटत्वादौ तदीयसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगितासत्त्वात् तेनैव तदभावप्रत्ययात् । न चैवमपि घटभेदादेर्घटत्वाद्यभावत्वानुपपत्तिस्तदप्रतियोगित्वादिति वाच्यं । अत्यन्ताभावत्वात्मकानुयोगिताविशेषस्यैव प्रतियोगितानतिरिक्तत्वोपगमादिति ।

इति महामहोपाध्याय-श्रीगदाधरभट्टाचार्य्यविरचितायामनुमानदीधितिविवृतौ सिद्धान्तलक्षणदीधितिविवृतिः समाप्ता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## अनुमानदीधितिः ।

नन्ववच्छेदकत्वमिह न स्वरूपसम्बन्धविशेषः सम्भवति च लघौ धर्म्मे गुरौ तदभावात् प्रमेयधूमत्व-कम्बुग्रीवादिमत्त्व-घ्राणग्राह्यगुणत्वादेरतथात्वेन तेन रूपेण साध्यतायां व्यभिचारिण्यतिप्रसङ्गात् ।

---

## अवच्छेदकत्वनिरुक्तिदीधितिविवृतिः ।

प्रतियोगितानवच्छेदकेत्यत्र पारिभाषिकावच्छेदकत्वं निवेशयितुं अवच्छेदकपदस्य प्रसिद्धावच्छेदकत्वपदार्थपरतां (१) आक्षिपति, 'नन्वित्यादिना, 'इह' एतल्लक्षणे, घटकत्वं सप्तम्यर्थः, तथाच घटत्वेन घटोऽभावप्रतियोगीत्यादिप्रतीतिसाक्षिकोयो-घटादिनिष्ठप्रतियोगितया सह घटत्वादेरवच्छेद्यावच्छेदकभाव-रूपः स्वरूपानतिरिक्तः पदार्थान्तरात्मको वा सम्बन्धविशेषः स-इह लक्षणेऽशक्यनिवेश इत्यर्थः, स्वरूपसम्बन्धविशेषात्मकावच्छेदक-त्वाभावघटितं निरुक्तरूपं न व्याप्तिस्वरूपमिति यावत्, 'तेन रूपेण साध्यतायां व्यभिचारिण्यतिव्याप्तेः' (२) इत्यग्रिममत्रैव हेतुः, प्रमेयधूमत्वाद्यवच्छिन्नसाध्यकव्यभिचारिसाधारणत्वादिति तदर्थः, 'प्रमेयधूत्वेत्यादिकं 'अतथात्वेनेत्यन्तं तत्र हेतुः, स्वसमानाधिकरणा-

---

(१) स्वरूपसम्बन्धरूपावच्छेदकत्वपरतां इति पा० ।

(२) व्यभिचारिण्यतिप्रसङ्गादित्यत्र व्यभिचारिण्यतिव्याप्तेरिति कस्यचिद्दीधितिपुस्तकस्य पाठमनुसृत्य ईदृशः पाठोधृतो गदाधरेणेत्यनुमीयत इति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



भावप्रतियोगितानिरूपिततादृशावच्छेदकत्वाभाववत्तादृशसाध्यता-वच्छेदकत्वेनेति तदर्थः, सम्भवत्तादृशप्रतियोगितावच्छेदकताक-धर्म्मापेक्षया गुरुत्वं प्रमेयधूमत्वादेस्तादृशप्रतियोगितावच्छेकत्वा-भावसाधकं, तस्य तत्साधकत्वोपष्टम्भकव्याप्तिमाह, 'सम्भवतीति तस्मिन्निति पूरणीयं, तथाच लघुधर्म्मे तादृशावच्छेदकत्वस्य सम्भवे इत्यर्थः, 'गुरौ तदभावात्' तादृशावच्छेदकत्वाभावनियमात्, तथाच सम्भवत्तदवच्छेदकताकधर्म्मापेक्षया यो गुरुः स न तदवच्छेदक-इतिव्याप्तेरिति पर्य्यवसितार्थः । सम्भवत्तदवच्छेदकताकत्वञ्च तदवच्छेदकत्वबाधकशून्यत्वं, बाधकञ्चावच्छेद्यप्रतियोगितापेक्षया अधिकदेशवृत्तित्वं न्यूनवृत्तित्वञ्च, अतो महानसीयवह्न्याद्यभाव-प्रतियोगितायां वह्नित्वादेरधिकदेशवृत्तितया अवच्छेदकत्व-बाधकसत्वात्तदपेक्षया गुरोरपि महानसीयवह्नित्वादेरच्छेदकत्व-निर्व्वाहः, जात्याद्यत्यन्ताभावस्य समवेतसामान्याभावाद्यभिन्न-तया समवेतादिसामान्यवृत्तितत्प्रतियोगिताभिन्नजात्यादिमात्रवृ-त्तितत्प्रतियोगित्वे मानाभावात् लघुसमवेतत्वादेरेव तदभाव-प्रतियोगितावच्छेदकत्वं न तु जातित्वादेः, एवं घट-पटान्यतरत्वा-वच्छिन्नाभावप्रतियोगितान्यूनवृत्तिघटत्वादेर्न्यूनवृत्तित्वरूपबाधक-सत्त्वात्तदपेक्षया गुरोरन्यतरत्वादेरवच्छेदकत्वनिर्व्वाहः । सत्ता-त्वादौ विशिष्टसत्तात्वाद्यवच्छिन्नाभावप्रतियोगितावच्छेदकताया-मुक्तबाधकासत्त्वेऽपि प्रतियोगितानिरूपकाभावविरोधितानवच्छेद-कत्वमेव तद्बाधकं, तद्विरोधितानवच्छेदकस्य तत्प्रतियोगिता-वच्छेदकत्वे तदवच्छिन्नवति तदवच्छिन्नाभावसत्त्वप्रसङ्गात् । अत-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



एव (१) समवेतत्वस्य पृथिवीसमवेतत्वासमनियतत्वेऽपि समवेतत्वं पृथिवीसमवेताभावप्रतियोगितावच्छेदकमिति पृथिवीसमवेतत्वाद्यवच्छिन्नाभावाप्रसिद्ध्या कूटघटितलक्षणे सत्तान्यपृथिवीसमवेतशून्यमित्यत्र सत्तान्यपदोपादानं। एवं घट-पटोभयत्वादेर्घट-पटान्यतरत्वावच्छिन्नाभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वे प्रतियोगितान्यूनवृत्तित्वरूपबाधकासत्त्वेऽपि अभावानधिकरणत्वव्यापकतानवच्छेदकत्वरूपमेव बाधकं तादृशस्य प्रतियोगितावच्छेदकत्वे तदभावानधिकरणे तत्प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्नसत्त्वनियमस्यानिर्व्वाहात्। न चैतादृशबाधकद्वयाभावनिवेशे प्रतियोगित्वासमनैयत्यरूपबाधकाभावनिवेशनमफलमिति वाच्यं। संख्या-परिमाणान्यतरत्वावच्छिन्नभावप्रतियोगितायां संख्यात्व-गुणत्वादेरवच्छेदकत्वे चरमबाधकद्वयासत्त्वेन समनैयत्यरूपबाधकाभावस्यावश्यंनिवेश्यत्वात्। यत्तु स्वावच्छिन्नसमव्यापकतावच्छेदकधर्म्मापेक्षया गुरुत्वमेवावच्छेदकत्वाभावसाधकतया अभिमतं स्वसमनियतसत्तात्वापेक्षया गुरोर्व्विशिष्टसत्तात्वादेः प्रतियोगितावच्छेदकत्वनिर्व्वाहाय स्वसमनियतत्वमुपेक्ष्य स्वावच्छिन्नसमव्यापकतावच्छेदकत्वनिवेश इति तन्न, घटप्रागभावत्वाद्यवच्छिन्नसमव्यापकतावच्छेदकघटत्वाद्यपेक्षया गुरोर्घटप्रागभावत्वादेरत्यन्ताभावप्रतियोगितावच्छेदकतया जातित्वावच्छिन्नसमव्यापकतावच्छेदकतद्घट-

---

(१) प्रतियोगितानिरूपकाभावविरोधितानव्यवच्छेदकत्वरूपबाधकविरहादेवेत्यर्थः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



कसमवेतत्वाद्यपेक्षया गुरोर्जातित्वादेर्भेदप्रतियोगितावच्छेदकतया च व्यभिचारात्। ननु मेयधूमत्वं स्वावच्छिन्नधर्म्मिविशेषणतापन्नमेयत्वसहितधूमत्वं सामानाधिकरण्यसम्बन्धेन मेयत्वसहितधूमत्वं वा उभयथैव तदवच्छिन्नसाध्यके नातिव्याप्तिप्रसक्तिः शुद्धधूमत्वस्यावच्छेदकत्वे तादृशेऽनवच्छेदकताया दुर्घटत्वात् एकदेशपर्य्याप्तवृत्तेर्व्यासज्यवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नानुयोगिताकाभावस्येव विशेष्यपर्य्याप्तवृत्तेर्विशेषणान्तरवैशिष्ट्यावच्छिन्नानुयोगिताकाभावानभ्युपगमात्, शुद्धवह्नित्वादौ धूमादिसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वापर्य्याप्तेर्मेयवह्नित्वादौ तदनवच्छेदकत्वसौलभ्येन मेयवह्निमान् धूमादित्यादावव्याप्तिविरहादित्यरुचेः कम्बुग्रीवादिमत्त्वानुधावनं। न चैवं मेयधूमत्वावच्छिन्नसाध्यकेऽतिव्याप्त्यभिधानमत्यन्तासङ्गतमिति वाच्यं। व्यासज्यवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नानुयोगिताकाभावाभ्युपगमेन नानाव्यक्तिदण्डाद्यवच्छिन्नस्य व्यापकतानिर्व्वाहाय प्रतियोगितावच्छेदकापर्य्याप्तविधेयतावच्छेदकतापर्य्याप्तिरनवच्छेदकान्तार्थं इत्याशयेन वा तदभिधानात्। कम्बुग्रीवादिमत्त्वञ्च घटत्वव्यञ्जकसंस्थानविशेषस्तस्य च घटत्वापेक्षया गौरवं संस्थानस्य विजातीयावयवसंयोगरूपस्यानन्त्यात् अनुगमकजातिविशेषसापेक्षत्वाच्च घटत्वस्य चैकजातिरूपस्य निर्व्विशेषणकस्यावच्छेदकत्वे लाघवादिति। न च घटसामान्याभावप्रतियोगितायां संस्थानविशेषणस्यानवच्छेदकत्वेऽपि तत्तत्संस्थानवदभावकूटप्रतियोगितासु प्रत्येकं तेषामवच्छेदकत्वमावश्यकं तन्नातिप्रसक्तस्य घटत्वस्यावच्छेदकत्वासम्भवादित्यनुगत-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



रूपावच्छिन्नेष्वपि तेष्वनवच्छेदकत्वं दुर्घटमिति तदवच्छिन्नसाध्यके नातिव्याप्त्यवकाश इति वाच्यं। तत्तत्संस्थानवत्तत्तद्घटाभाव-प्रतियोगितायामपि घटनिष्ठतद्व्यक्तित्वस्यैव साक्षात्सम्बन्धेनाव-च्छेदकत्वसम्भवात् परम्परासम्बन्धेन स्वसमवायिसमवेतत्वात्मकेन तत्तत्संयोगानां गौरवेणानवच्छेदकतया तादृशसम्बन्धेन संस्थान-विशेषावच्छिन्नघटादिसाध्यके व्यभिचारिहेतावतिव्याप्तेर्दुर्व्वार-त्वात्। ननु मृत्पाषाणादिघटसाधारणं घटत्वं नैकं मृत्त्व-पाषाण-त्वादिना सङ्करप्रसङ्गादिति तत्तज्जातिव्याप्यं नानैव तथाच तथा-विधसकलघटानुगमकसंस्थानविशेषावच्छिन्नप्रतियोगितायां न स्वरूपतोघटत्वस्यावच्छेदकतासम्भवः न्यूनवृत्तित्वात् नाप्यनु-गमकरूपान्तरावच्छिन्नस्य, तादृशरूपान्तरप्रवेशेन गौरवादित्य-रुचेर्घ्राणग्राह्यगुणत्वानुधावनं, घ्राणग्राह्यत्वं घ्राणग्रहणयोग्यता गुणत्वन्यूनवृत्तिघ्राणग्राह्यजातिरूपा सा चातीन्द्रियेऽपि गन्धे इति न गन्धत्वस्य दर्शितरूपवत्सामान्याभावप्रतियोगितासम-नैयत्यानुपपत्तिः, तादृशयोग्यतामात्रस्योपादाने गन्धत्व सौरभ-त्वादिरूपायास्तस्याः स्वरूपतोहेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगि-तावच्छेदकतया तादृशजातित्वावच्छिन्नाया अप्यनवच्छेदकत्वं दुर्लभमिति तद्विशेष्यतया गुणत्वनिवेशनं, द्रव्यत्वादिहेतुकस्थले च गुणत्वस्य शुद्धस्यापि हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेद-कत्वासम्भवाद्विशिष्टगुणत्वस्य गन्धत्वसमनियतस्य तादृशप्रतियोगि-तानवच्छेदकत्वमक्षतमेवेत्यतिव्याप्तिसङ्गतिः। अथवा घ्राणग्राह्य-गुणत्वं स्वाश्रयगुणत्वव्याप्यजातिमत्त्वसम्बन्धेन घ्राणजसाक्षात्कार-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



विषयतावत्त्वमेव, गुणत्वव्याप्यजातिघटितसम्बन्धलाभाय गुणपदं न तु गुणत्वमपि विशिष्यतया विवक्षितं । एतेन गुणत्वस्य निरुक्त-जातित्वावच्छिन्नगन्धत्वादिविशेष्यतया विवक्षितत्वे स्वरूपतो गन्ध-त्वादेः गुणत्वविशेषणतायामप्यतिव्याप्तिसङ्गतेस्तादृशजातित्वाव-च्छिन्नस्य विशेषणत्वानुधावनं निर्व्वीजमिति दूषणमनवकाशं, घ्राणग्राह्यगुणत्वं यथाश्रुतमेव ग्राह्यगन्धत्वरूपलघुधर्म्मसमनियत-तया न प्रतियोगितावच्छेदकमित्यपि वदन्ति । यत्तु अनवच्छेदकत्वं अवच्छेदकाविषयकप्रतीतिविषयत्वं तथाचावच्छेदकताघटकसम्ब-न्धेन विशिष्यांशे अवच्छेदकप्रकारकप्रतीतिभिन्ना साध्यतावच्छेदकता-घटकसम्बन्धेन यादृशधर्म्मप्रकारिका प्रतीतिस्तादृशधर्म्मावच्छिन्न-सामानाधिकरण्यं व्याप्तिरिति पर्य्यवसितं, एवञ्च प्रमेयधूमत्वादि-प्रकारकप्रतीतेर्धूमत्वादिप्रकारकतानियमात् प्रमेयधूमत्वावच्छिन्न-साध्यकेऽतिव्याप्तिपरीहारः सम्भवति न तु निरुक्तघ्राणग्राह्य-गुणत्वाद्यवच्छिन्नसाध्यके, गन्धत्वादिकमविषयीकृत्य सुरभित्वादिकं सुरभित्वादिकमविषयीकृत्यापि च गन्धत्वादिकं विषयीकृत्य तादृ-शसाध्यतावच्छेदकप्रकारकप्रतीतिसम्भवादिति तन्न, तथासत्युक्तरी-त्या दण्डिमान्द्रव्यत्वादित्यादावतिव्याप्तिः प्रत्येकं सकलदण्डमविष-यीकृत्यैव दण्डत्वावच्छिन्नदण्डात्मकसाध्यतावच्छेदकप्रकारकप्रती-तिसम्भवात् । अथ प्रतियोगितावच्छेदकीभूता ये ये धर्म्मास्तत्तत्-प्रकारकप्रतीतिभेदकूटस्य साध्यतावच्छेदकप्रकारिकायामेव प्रतीतौ असत्त्वात् तथैव च लक्षणे विवक्षितत्वान्नेयमतिव्याप्तिरितिचेत, तर्हि तादृशरीत्या निरुक्तघ्राणग्राह्यगुणत्वावच्छिन्नसाध्यकेऽपि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



नातिव्याप्तेरवकाश इति। 'अतथात्वेन' प्रतियोगितानवच्छेदकत्वेन।

अनुमानदीधितिः।

नाप्यनतिरिक्तवृत्तित्वं प्रतियोगितायाः स्वरूपसम्बन्धात्मिकायाः प्रतिव्यक्तिभिन्नत्वेन धूमत्वादेरपि तदतिरिक्तवृत्तित्वात्। नच तथाविधयत्किञ्चिदेकाभावप्रतियोगितासामान्यशून्यावृत्तित्वं तत्, अतएवातिरिक्तसामान्याभावस्याभावे धूमत्वादेरप्यनवच्छेदकत्वापातादग्रे तत्साधनमपि साधु सङ्गच्छत इति वाच्यं। वह्नि-घटवृत्तिद्वित्व-तार्णातार्णदहनवृत्तिद्वित्वाद्यवच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावप्रतियोगितानतिरिक्तवृत्तिवह्नित्वादावतिप्रसङ्गात्। एतेनान्यूनवृत्तित्वविशेषितमपि परास्तम्। अतएव नानाप्रतियोगिवृत्तेरेकप्रतियोगिताङ्गीकारेऽपि न निस्तारः। लघुरूपसमनियतगुरुरूपेण साध्यतायां सद्धेतावव्याप्तिः तादृशतदवच्छिन्नत्वाप्रसिद्धेरितिचेन्न,

अनुमानदीधितिविवृतिः।

'अनतिरिक्तवृत्तित्वमिति स्वव्यापकतत्कत्वमित्यर्थः, तच्छून्यावृत्तित्वविवक्षणे समवायेन प्रमेयसाध्यके व्यभिचारिण्यतिप्रसङ्गात्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रमेयसामान्याभावप्रतियोगिताशून्याप्रसिद्धया प्रमेयत्वादेस्तादृशा-वच्छेदकत्वानिर्व्वाहात्, महानसीयत्वादिविशिष्टवह्नित्वाद्यवच्छिन्न-साध्यके धूमादौ वह्नित्वादेर्महानसीयवह्न्याद्यभावप्रतियोगिता-शून्यवह्न्यन्तरवृत्तितया विशिष्टेऽपि तत्र तच्छून्यावृत्तित्वस्य दुर्घट-तया अतिप्रसङ्गाच्च। सत्तावत्त्वात् मेयत्वादित्यादावतिव्याप्तिश्च तत्र सत्तावदभावप्रतियोगिताशून्ये साध्यतावच्छेदकताघटकसम्ब-न्धेन वृत्तेरप्रसिद्धेः, स्वव्यापकतत्त्वनिवेशने च विशिष्टस्या-विशिष्टस्य वा यादृशस्यावच्छेदकत्वमभिमतं तादृशस्यैव स्वपदे-नोपादेयतया विशिष्टवह्नित्वादिकं प्रति च विशिष्टवह्न्याद्यभाव-प्रतियोगितायाा व्यापकत्वस्याक्षतत्वेन तादृशस्यावच्छेदकत्वोप-पत्तेः। ईदृशं यद्यत् स्वं तत्त्वाभावकूटस्य च साध्यतावच्छेदक-विशेषणता बोध्या अतः स्वत्वाननुगमेनैकसामान्याभावनिवेशा-सम्भवात् यत्किञ्चिदेकावच्छेदकनिष्ठावच्छेदकत्वाभावमादायाति-प्रसङ्गस्य नावकाशः। नच स्वपदस्य तत्तद्व्यक्तिपरतया अवच्छे-दकनिष्ठतत्तद्व्यक्तित्वमेव पर्य्यवसितं अवच्छेदकत्वं तथाच विशेषणा-वच्छिन्ननिष्ठतद्व्यक्तित्वस्यापि विशेष्यपर्य्याप्ततया विशिष्टवह्नित्वादे-रवच्छेदकत्वे शुद्धस्याप्यनवच्छेदकत्वदुर्भिक्षमिति वाच्यं। शुद्धस्य विशेषणान्तरसहितस्य वा यादृशस्याधिकरणता प्रतियोगितानिष्ठ-व्यापकताशरीरनिविष्टा तादृशरूपपर्य्याप्तावच्छेदकतापर्य्याप्त्यनधि-करणत्वस्य साध्यतावच्छेदकविशेषणत्वोपगमात् मेयधूमत्वादि-पर्य्याप्ताया अभावप्रतियोगितावच्छेदकताया अप्रसिद्धावपि तथा-विधाया विषयताद्यवच्छेदकतायाः प्रसिद्ध्या अतिव्याप्त्यनवकाशात्,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



महानसीयत्वादिसहितवह्नित्वादिपर्य्याप्तावच्छेदकतायाः शुद्ध-वह्नित्वादावपर्य्याप्तत्वाद्विशिष्टवह्न्याद्यभावमादाय दोषानवकाशात् । अत्र यदि हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितासामान्यानतिरिक्तवृत्तित्वं निवेश्यते तदा निखिलवह्न्यादेरेव धूमादिसमानाधिकरणविशेषाभावप्रतियोगितया वह्नित्वादेरपि स्वव्यापकतावच्छेदकताट्टशप्रतियोगितात्वकत्वरूप-ताट्टशप्रतियोगितासामान्यानतिरिक्तवृत्तित्वेन तथाविधप्रतियोगितावच्छेदकत्वानुपपत्तिरिति ताट्टशयत्किञ्चिदेकप्रतियोगितानतिरिक्तवृत्तित्वं स्वसमानाधिकरणभेदप्रतियोगितानवच्छेदकताट्टशप्रतियोगिताकत्वरूपं निवेशनीयं तथा सति धूमवान्वह्नेरित्यादौ धूमत्वादेरपि ताट्टशावच्छेदकत्वं न स्यात् धूमादिसामान्याभावप्रतियोगिताया अपि धूमादिस्वरूपतया प्रतिधूमादिकं भिन्नत्वेन प्रत्येकं धूमत्वादिसमानाधिकरणभेदप्रतियोगितावच्छेदकत्वादिति तत्तद्धूमत्वादेरेव तथात्वादतिव्याप्तिरित्याह, 'प्रतियोगिताया इति, 'स्वरूपसम्बन्धात्मिकाया इति प्रतिव्यक्तिभेदप्रयोजकहेतुगर्भविशेषणं, अतिरिक्तपदार्थरूपप्रतियोगितायाः सिद्धान्तविरुद्धत्वादिति भावः । ताट्टशप्रतियोगितासामान्यानतिरिक्तवृत्तित्वनिवेशे हेतुसमानाधिकरणाभावत्वेन ताट्टशाभावनिवेशन एव पूर्व्वोक्तदोषः (१) न तु ताट्टशाभावस्य प्रातिस्विकरूपेण विवेशने तत्तद्विशेषाभावप्रतियोगितात्वस्य वह्नित्वादिव्यापकतानवच्छेदकत्वादित्याशयेनाशङ्कते, 'नचेति,

---

(१) वह्निमान् धूमादित्यादावव्याप्तिरूपो दोष इत्यर्थः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



'तथाविधेति ताद्दशप्रतियोग्यनधिकरणहेतुमद्वृत्तीत्यर्थः, 'यत्-किञ्चित्पदं तत्तद्व्यक्तित्वेनाभावनिवेशलाभाय, प्रत्येकस्यापि तथा-विधाभावस्य सकलस्य नैकत्रावच्छेदकत्वघटकता किन्त्वेकैकस्यैवेति स्फोरणाय 'एकपदं', ताद्दशप्रतियोगितासामान्यशून्यावृत्तित्वं स्वव्या-पकतावच्छेदकताद्दशप्रतियोगितात्वकत्वमतोन पूर्व्वोक्तदोषः । 'अतएव' इद्दशावच्छेदकत्वस्य मूलाभिप्रेतत्वादेव, 'अतिरिक्तेति सामान्याभावस्य विशेषाभावकूटातिरिक्तत्वानभ्युपगम इत्यर्थः, 'धूमत्वादेरपीति, विशेषाभावकूटान्तर्गतमेकमभावमुपादाय धूम-त्वादौ निरुक्तावच्छेदकत्वोपादानासम्भवादितिभावः । 'तत्साधन-मिति सामान्याभावस्यातिरिक्तत्वव्यवस्थापनमितर्थः,'सङ्गच्छत इति स्वरूपसम्बन्धरूपावच्छेदकत्वनिवेशे विशेषाभावकूटातिरिक्तसा-मान्याभावानभ्युपगन्तृमतेऽपि विशेषाभावीयप्रतियोगिताकूटस्यैव सामान्यधर्म्मावच्छिन्नतया धूमत्वादेरपि वह्न्यादिसमानाधिकरण-धूमादिविशेषाभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वेनातिव्याप्त्यप्रसक्त्या सामा-न्याभावपार्थक्यव्यवस्थापनस्य तल्लक्षणप्रस्तावे अनुपयुक्ततापत्तेरिति-भावः । नचातिरिक्तसामान्याभावाभावे उक्तरीत्या अतिव्याप्ति-विरहेऽपि य एव वह्न्यभावाह्रदादौ वह्निर्नास्तीतिबुद्धिं जनयन्ति प्रत्येकं धूमसमानाधिकरणानां तेषां प्रतियोगितावच्छेदकत्वं वह्नि-त्वेऽप्यस्तीत्यव्याप्तिर्दुर्व्वारैवेति तत्साधनसङ्गत्या उपष्टम्भासङ्गति-रिति वाच्यं । हेत्वधिकरणवृत्तित्वावच्छेदेन याद्दशधर्म्मावच्छिन्नत्व-विशिष्टप्रतियोगिताकत्वं अभावे ताद्दशत्वस्य साध्यतावच्छेदक-विशेषणतां स्वीकृत्य ताद्दशाव्याप्तेर्वारणसम्भवात्, न हि धूमाधि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



करणवृत्तित्वावच्छिन्ने विशेषाभावे वह्नित्वावच्छिन्नप्रतियोगिता-कत्वं, धूमवति वह्निर्नास्तीत्यप्रत्ययात् अपि तु यावद्विशेषा-भावाधिकरणह्रदादिवृत्तित्वावच्छिन्न एवेति । इदमापाततः तथा-विधाभावीययत्किञ्चिदेकधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगितासामान्यानति-रिक्तवृत्तित्वं निवेश्यानतिरिक्तवृत्तितारूपावच्छेदकताविवक्षापक्षेऽपि धूमत्वादेरवच्छेदकत्वस्य सामान्याभावानतिरिक्ततामते शक्योपपाद-नत्वात् हेत्वधिकरणवृत्तित्वावच्छिन्ने यद्धर्म्मावच्छिन्नत्वविशिष्टप्रति-योगिताकत्वं तद्धर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगितासामान्यानतिरिक्तवृत्तित्वं निवेश्यानतिरिक्तवृत्तित्वरूपावच्छेदकताविवक्षया अव्याप्तेरपि शक्यवारणत्वात्, वह्नित्वस्य वह्नि-घटोभयत्वावच्छिन्नाभावप्रति-योगितानतिरिक्तवृत्तित्वेऽपि न्यूनवृत्तितया अन्यूनानतिरिक्तवृत्तित्व-विवक्षया तादृशप्रतियोगितामादाय दूषणस्योद्धारः सम्भवतीति तार्णातार्णदहनोभयत्वावच्छिन्नाभावप्रतियोगितानुसरणं,'अतिप्रस-ङ्गात्' धूमादिसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वप्रस-ङ्गात्, तार्णातार्णदहनोभयाभावानुसरणप्रयोजनं स्वयमेव स्फुट-यति, 'एतेनेति तार्णातार्णदहनोभयाभावप्रतियोगितामादायाति-प्रसङ्गतादवस्थ्येन, 'अन्यूनवृत्तित्वविशेषितमपि' अन्यूनवृत्तित्व-विशेषितमनतिरिक्तवृत्तित्वमपि, 'अतएव' दर्शितोभयाभावमादाय वह्नित्वादावतिप्रसङ्गादेव, 'नानाप्रतियोगिवृत्तेरेकप्रतियोगिताङ्गी-कारेऽपीति, तथासति यत्किञ्चिदेकाभावप्रतियोगितासामान्य-पर्य्यन्तानिवेशेऽपि धूमत्वादेर्धूमादिसामान्याभावप्रतियोगिताव-च्छेदकत्वोपपादनसम्भवात् इति भावः । उभयत्वादिरूपव्यासज्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



वृत्तिधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगितायाः प्रत्यक्षमपि प्रतीतेरव्यासज्य-वृत्तितया स्वपर्य्याप्त्यधिकरणपर्य्याप्तत्वं प्रतियोगितायां निवेश्यापि वह्नित्वादावतिप्रसङ्गवारणासम्भव इत्यवधेयं। प्रतियोगिता-धर्म्मिकोभयाभावघटितव्याप्तिपक्षे मेयधूमवान् वह्नेरित्यादावति-व्याप्तिर्न सम्भवति साध्यतावच्छेदकमेयधूमत्वादिरूपगुरुधर्म्माव-च्छिन्नत्वस्य कुत्रापि प्रसिद्धिविरहेण तद्घटितोभयाभावा-प्रसिद्धेरिति तन्मते मेयवह्निमान् धूमादित्यादावव्याप्तिमाह, 'लघु-रूपेति, 'तादृशतदवच्छिन्नत्वाप्रसिद्धेरिति तादृशसाध्यतावच्छेद-कावच्छिन्नत्वाप्रसिद्धेरित्यर्थः, विषयितासम्बन्धस्य वृत्त्यनियामक-त्वेनाभावप्रतियोगितानवच्छेदकतया तादृशसम्बन्धावच्छिन्नाभाव-प्रतियोगितायां तत्प्रसिद्धिरित्यस्य वक्तुमशक्यत्वात् अन्यथा मेय-धूमवान्वह्नेरित्यादावतिव्याप्तेरेव तादवस्थ्यात् इति भावः।

---

अनुमानदीधितिः ।

प्रतियोगितावच्छेदकानतिरिक्तवृत्तित्वस्य विव-क्षितत्वात्। स्वसमानवृत्तिकत्वावच्छेदकं ग्राह्यं तत्त्वञ्च स्वपर्य्याप्त्यधिकरणपर्य्याप्तिवृत्तिकत्वं, यावत्त्वादिकन्तु न तथा, पर्य्याप्तिश्चायमेकोघट इमौ द्वाविति प्रतीति-साक्षिकः स्वरूपसम्बन्धविशेष एव, त्रित्वादिकमपि न द्वित्वादिसमानवृत्तिकमिति द्वित्वादिना साध्यतायां नाव्याप्तिः, घटकत्वावच्छेदकत्वं स्वरूपसम्बन्धविशेषः,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



## एवञ्च यद्धर्म्मावच्छिन्नेत्यत्र यद्धर्म्मान्यूनवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नेति वक्तव्यं तेनोक्ताव्याप्तिनिरासः ।

---

अनुमानदीधितिविवृतिः ।

'प्रतियोगितावच्छेदकानतिरिक्तवृत्तित्वस्येति, तथाच धूमादिसामान्याभावप्रतियोगितायाः प्रतिधूमादिकं भिन्नत्वेऽपि तत्प्रतियोगितावच्छेदकधूमत्वादेरैक्येन स्वसमानाधिकरणान्योन्याभावप्रतियोगितानवच्छेदकतत्कत्वाद्यात्मकस्वव्यापकतत्कत्वरूपं तदनतिरिक्तवृत्तित्वं धूमत्वादावक्षतमेवेति भावः। न च प्रतियोगितायाः प्रतियोगिस्वरूपतामते सामान्याभावप्रतियोगितायाः विशेषाभावप्रतियोगितातो न भेदः प्रतियोगिनामभेदात् तथाच वह्निमान् धूमादित्यादावव्याप्तिर्दुर्व्वारा धूमसमानाधिकरणविशेषाभावप्रतियोगिताकूटे वह्नित्वादेरवच्छेदकत्वात्तस्य च तदनतिरिक्तवृत्तित्वादिति वाच्यं। सामान्याभाव-विशेषाभावयोः प्रतियोगित्वाभेदेऽपि सामान्याभावीयप्रतियोगितात्वेनैव सामान्यधर्म्मावच्छेद्यत्वात् हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितात्वावच्छिन्नावच्छेदकानतिरिक्तवृत्तित्वविवक्षणेनाव्याप्तिनिरासात् स्वव्यापकतत्कत्वमित्यत्र स्वस्य व्याप्यता साध्यतावच्छेदकताघटकसम्बन्धेन, प्रतियोगितावच्छेदकस्य व्यापकता प्रतियोगितावच्छेदकताघटकसम्बन्धेन बोध्या तेन सम्बन्धसामान्येन धूमत्वादिकं प्रति समवायादिना धूमत्वादेरव्यापकत्वेऽपि समवायादिना वह्नित्वं प्रति कालिकादिसम्बन्धेन घटत्वादेर्व्यापकत्वेऽपि च न क्षतिः। दण्ड-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



मान् द्रव्यत्वादित्यादौ हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगिताच्छेद-कैकदण्डादौ दण्डाद्यन्तरसमानाधिकरणभेदप्रतियोगितावच्छेद-कत्वेऽपि तत्तद्दण्डादिसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितानवच्छेदक-त्वस्याक्षततया सर्व्वत्रैव दण्डादिव्यक्तौ प्रतियोगितावच्छेदका-नतिरिक्तवृत्तित्वमव्याहतमिति नातिव्याप्तिः दण्डाद्यवच्छिन्नसाध्य-कसद्धेतावीदृशरीत्या अव्याप्तिरिति तु नाशङ्कनीयं दण्डादौ साध्ये परम्परासम्बन्धेनाखण्डस्य दण्डत्वादेरेव साध्यतावच्छेदकतायाः स्वीकृतत्वात्। नन्वेवमपि हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगिताव-च्छेदकवह्नि-घटोभयत्वाद्यनतिरिक्तवृत्तितया वह्नित्वादेरवच्छेद-कत्वं दुर्व्वारमेव। न चोभयत्वादेरुभयादिपर्य्याप्ततया प्रत्येकं तदत्यन्ताभावस्तदवच्छिन्नभेदश्च वर्त्तते अयमेकोन द्वाविति सर्व्वजनसाधारणानुभवस्य दुरपह्नवत्वात् तादृशप्रतीतेरेकत्वादौ द्वित्वाद्यवच्छेदकत्वाभावावगाहित्वोपगमे मूलावच्छिन्नो वृक्षो न कपिसंयोगीत्यादिप्रतीतेरपि मूलादौ कपिसंयोगाद्यवच्छेदकत्वा-भावावगाहितास्वीकारापत्तेः। यदि तत्र बाधकाभावात् वृक्षाद्यधिकरणककपिसंयोगाद्यभावो विषयस्तदा प्रकृतेऽपि एक-त्वाद्यवच्छिन्नाधिकरणकद्वित्वाभावादिविषयकत्वं दुर्व्वारमेव एकत्वावच्छिन्ने द्वित्वादिसत्ताप्रत्ययानुदयेन बाधकविरहस्य तुल्य-त्वात् प्रत्येकमुभयादौ द्वित्वाभावादिसत्त्वेऽपि द्वित्वादेर्द्वित्वा-भावाद्यनुयोगितानवच्छेदकतया द्वौ न द्वाविति प्रतीतेर्दुरपवाद-त्वात् द्वित्वादिसामानाधिकरण्यमात्रेण तदभावप्रत्ययस्य चेष्ट-त्वात् नञ्पदेनान्वयितावच्छेदकावच्छेदेनाभावबोधनात् द्वित्वादि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



सामानाधिकरण्यमात्रावगाहिन्या अभावप्रतीतेः द्वौ न द्वावित्याद्याकारकताविरहात् तदाकारकप्रतीतेरेव चानुभवविरुद्धत्वात् तथाच द्वित्वाद्यनतिरिक्तवृत्तिता कथं वह्नित्वादेरिति वाच्यं। एवं सति वह्नि-घटोभयवान् धूमादित्यादौ साध्यतावच्छेदकद्वित्वादेरवच्छेदकताया दुरपवादत्वात् तत्र प्रतियोगितावच्छेदकपदेन तादृशद्वित्वादिकमुपादायैव तस्यावच्छेदकानतिरिक्तवृत्तित्वस्य सम्पाद्यत्वात् तस्य चोक्तरीत्या असम्भवादिति स्वव्यापकतत्कत्वरूपतदनतिरिक्तवृत्तित्वघटकव्यापकतायां प्रतियोगिताव्यधिकरणभेदस्य निवेशनीयतया उभयत्वादावपि वह्नित्वनिरूपिततादृशव्यापकताया अक्षतत्वेन तदवच्छेदकताप्रसङ्गस्य दुर्व्वारत्वात्। न हि प्रत्येकवृत्तिरुभयत्वाद्यवच्छिन्नभेदः प्रतियोगिताव्यधिकरणः, उभयत्वादेर्व्यासज्यवृत्तित्वेऽपि तदवच्छिन्नप्रतियोगिताया अव्यासज्यवृत्तितया प्रत्येकमुभयत्वाद्यनधिकरणतावत् तदवच्छिन्नभेदप्रतियोगितानधिकरणत्वस्यासम्भवात् इत्याशङ्कया प्रतियोगितावच्छेदकानतिरिक्तवृत्तित्वघटकमवच्छेदकं स्वसमानवृत्तिकत्वेन विशेषयति, 'स्वेति, तथाच वह्नि-घटोभयत्वादेर्वह्नित्वादिसमानवृत्तिकताविरहाद्वह्नित्वादेस्तदनतिरिक्तवृत्तित्वेऽपि न पारिभाषिकावच्छेदकतापत्तिरिति भावः। व्यापकताशरीरे स्वसमानाधिकरणत्वस्य स्वाधिकरणतावच्छेदकावच्छिन्नाधिकरणताकत्वरूपस्याभावविशेषणत्वोपगमे तु द्वित्वाद्यधिकरणस्य प्रत्येकं द्वित्वाद्यवच्छिन्नभेदाद्यधिकरणत्वेऽपि द्वित्वादेर्द्वित्वादिव्यापकत्वं भेदे प्रतियोगितावैयधिकरण्यमनिवेश्यैवोपपादयितुं शक्यमिति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



स्वसमानवृत्तिकत्वनिवेशनमयुक्तं। न चाव्याप्यवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नप्रतियोगिताकभेदस्याव्याप्यवृत्तितामते संयोगेन दण्डादेर्यत्र साध्यतावच्छेदकता तत्र व्यभिचारिहेतुके हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेदकदण्डादिकमादाय दण्डादिरूपसाध्यतावच्छेदके पारिभाषिकावच्छेदकत्वं व्यापकताशरीरे प्रतियोगितावैयधिकरण्याप्रवेशे न स्यादिति वाच्यं। अव्याप्यवृत्तिदण्डादिकमादाय दण्डादेः परिभाषिकावच्छेदकत्वासम्भवेऽपि व्यभिचारनिरूपकाधिकरणयत्किञ्चिद्व्यक्त्यवृत्तित्वरूपं हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेदकमादाय दण्डादेः साध्यतावच्छेदकस्य तथात्वोपपादनसम्भवात् तदवृत्तौ साध्ये तदवृत्तित्वावच्छिन्नभेदस्य कथमप्यसम्भवादिति ध्येयं। ननु किमिदं समानवृत्तिकत्वं, यद्यन्यूनानतिरिक्तवृत्तित्वं तदा अनतिरिक्तवृत्तित्वान्तरनिवेशवैफल्यं स्यान्यूनवृत्ति यद्यत्तदनतिरिक्तवृत्तित्वस्य स्वस्मिन्नियतत्वात् तार्णातार्णदहनोभयत्वादिकमादाय दहनत्वादेरवच्छेदकत्वापत्तिश्च दुर्व्वारा, यदि चैकजातीयवृत्तिकत्वमेव तत् तच्च स्वनिष्ठव्यासज्यवृत्तित्वाव्यासज्यवृत्तित्वान्यतररूपवत्त्वं द्वित्वादौ च वह्नित्वादेर्नैतादृशं समानवृत्तिकत्वं वह्नित्वादेरव्यासज्यवृत्तित्वात् इत्युच्यते तदापि वह्नि-धूमोभयवान् धूमादित्यादौ हेतुसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेदकवह्नि-धूमघटत्रित्वाद्यनतिरिक्तवृत्तितया साध्यतावच्छेदकद्वित्वादेः पारिभाषिकावच्छेदकतापत्तिदुर्व्वारैव द्वित्व-त्रित्वाद्योरुभयोरेव व्यासज्यवृत्तितया निरुक्तसमानवृत्तिकत्वस्य सूपपादत्वादित्यत आह,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



'तत्त्वञ्चेति स्वसमानवृत्तिकत्वञ्चेत्यर्थः; वह्निनिष्ठयावत्त्व-तार्णतार्णोभयत्वादिकमादाय वह्नित्वादावतिप्रसङ्गाभावं स्फुटयति, 'यावत्त्वादिकमिति, 'आदिना दर्शितद्वित्वादिपरिग्रहः, 'न तथा' न स्वपर्य्याप्त्यधिकरण-पर्य्याप्तत्वरूप-वह्नित्वादिनिरूपितसमानवृत्तिकत्ववत्, वह्नित्वादेः प्रत्येकवह्न्यादौ पर्य्याप्तत्वात् तस्य चातथात्वादिति शेषः, तथाच यावत्त्वादेर्धूमादिसमानाधिकरणाभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वे वह्नित्वाद्यन्यूनानतिरिक्तवृत्तित्वेऽपि च न क्षतिरिति भावः। ननु पर्य्याप्तिराश्रयत्वमेव तथाच वह्नित्वादिसमानाधिकरणयावत्त्वादेर्वह्नित्वादिपर्य्याप्त्यधिकरणपर्य्याप्तत्वमक्षतमेवेत्यत आह, 'पर्य्याप्तिश्चेति अयमेक इत्यनेन अव्यासज्यवृत्तिघटत्व-वह्नित्वादीनां प्रत्येकमेव पर्य्याप्तिरिति दर्शितं। 'इमौ द्वाविति प्रतीतिकथनेन व्यासज्यवृत्तिद्वित्वादीनां न प्रत्येकं पर्य्याप्तिः तथा सति अयमेको द्वावित्यादिप्रतीत्यापत्तेरिति दर्शितं। यद्यपि समुदायपर्य्याप्तत्वेऽपि तदेकदेशप्रत्येकपर्य्याप्तत्वमनपवादं समुदायस्यैकदेशानतिरिक्तत्वादिति यावत्त्वादेर्वह्नित्वादिपर्य्याप्त्यधिकरणप्रत्येकवह्निपर्य्याप्तत्वं दुर्व्वारं, तथापि स्वपर्य्याप्त्यवच्छेदकावच्छिन्नपर्य्याप्तिकत्वमत्र विवक्षितं इति न दोषः, व्यासज्यवृत्त्यव्यासज्यवृत्त्योः समानजातीयवृत्तिकधर्म्मावच्छिन्नपर्य्याप्तयोरेकधर्म्मिणि पर्य्याप्तिसत्त्वेऽप्येकधर्म्मावच्छिन्नेऽपर्य्याप्तेः अन्यथा अयमेको वह्निरितिवदयमेको यावानिति प्रतीत्यापत्तेर्दुर्व्वारत्वात्। अथ घटावित्यादौ यदि घटत्वादिसामानाधिकरण्यमात्रेण द्वित्वादिपर्य्याप्तिर्भासते तदा आकाशावित्याद्याकारकप्रतीतेरपि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



प्रमात्वापत्तिराकाशत्वादिसामानाधिकरण्येनात्माकोशोभयत्वादि-पर्य्याप्तिसत्त्वात् अतस्तत्र धर्म्मितावच्छेदकघटत्वाद्यवच्छिन्न-पर्य्याप्तेरेव विषयत्वमङ्गीकार्य्यं तथाचाव्यासङ्गवृत्तेरपि द्वित्वादि-पर्य्याप्त्यवच्छेदकत्वमायातमिति व्यासज्यवृत्तिधर्म्मस्याव्यासज्यवृत्ति-समानवृत्तिकत्वं दुर्व्वारमेव। नचानेकवृत्तेरपि व्यासज्यवृत्तिधर्म्म-पर्य्याप्त्यवच्छेदकत्वमास्तां तादृशधर्म्मस्य च नाव्यासज्यवृत्ति-पर्य्याप्त्यवच्छेदकत्वं किन्त्वेकमात्रवृत्तेरेवेतिति न व्यासज्यवृत्त्य-व्यासज्यवृत्त्योरेकधर्म्मावच्छिन्नपर्य्याप्तत्वप्रसङ्ग इति वाच्यं। घटो-द्रव्यमित्यादिप्रतीत्या तथाविधघटत्वाद्यवच्छेदेन द्रव्यत्वादि-पर्य्याप्त्यवगाहनादेकमात्रवृत्तरेवाव्यासज्यवृत्तिधर्म्मपर्य्याप्त्यवच्छेद-कत्वमित्युक्त्यसम्भवात्, तत्र घटत्वादिसामानाधिकरण्यमात्रेण द्रव्यत्वादिपर्य्याप्तिर्भासते न तु तदवच्छेदेनेत्युक्तौ अयमेको घट-इत्यादावपि इदन्त्वादौ घटत्वादिपर्य्याप्त्यवच्छेदकताभाने विवाद-सम्भवेनाव्यासज्यवृत्तिधर्म्मपर्य्याप्तेरवच्छिन्नत्वस्यैवाप्रसिद्धिप्रसङ्गाद्धूम-त्वादिपर्य्याप्त्यवच्छेदकाप्रसिद्ध्या तत्रावच्छेदकलक्षणाव्याप्तिप्रस-ङ्गात्। न च स्वपर्य्याप्त्यवच्छेदकताव्यापकावच्छेदकताकपर्य्याप्ति-कत्वमेव विवक्षणीयं अव्यासज्यवृत्तिपर्य्याप्त्यवच्छेदकैकमात्रवृत्ति-धर्म्मे व्यासज्यवृत्तिपर्य्याप्त्यवच्छेदकताविरहान्न तस्या अव्यासज्य-वृत्तिपर्य्याप्त्यवच्छेदकताव्यापकत्वमिति व्यासज्यवृत्त्यव्यासज्य-वृत्त्योर्न समानवृत्तिकता इति वाच्यं। एवं सत्यनतिरिक्तवृत्ति-त्वनिवेशवैफल्यापत्तेः न्यूनवृत्तिमहानसीयवह्नित्वादिपर्य्याप्त्यव-च्छेदकताव्यापकताविरहेणैव तादृशधर्म्ममुपादाय वह्नित्वादेरव-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh



च्छेदकतापत्त्यसम्भवादिति चेन्न, अनेकवृत्तिघटत्वादेर्हि तत्तद्घटत्वादिरूपैकमात्रवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नपर्य्याप्तिकूटस्य घटनिष्ठपर्य्याप्तित्वादिरूपानुगतरूपावच्छिन्नावच्छेदकत्वमेवापेयते न तु घटत्वाद्यवच्छिन्नं द्रव्यत्वादेर्यावद्घटादिषु पर्य्याप्त्यन्तरं मानाभावात्, एवञ्च एकमात्रवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नायाः पर्य्याप्तेरवच्छेदकस्यैव विवक्षणीयतया अनुगतरूपावच्छिन्नपर्य्याप्तिकूटावच्छेदकानेकवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नपर्य्याप्तिमादाय व्यासज्यवृत्तेर्नाव्यासज्यवृत्तिधर्म्मसमानवृत्तिकतापत्तिरिति। न च कालाकाशावित्यादिप्रतीत्या एकमात्रवृत्तिकालत्वाकाशत्वादेरपि द्वित्वादिपर्य्याप्त्यवच्छेदकत्वावगाहनादेकमात्रवृत्तिधर्म्माणामपि व्यासज्यवृत्तिधर्म्मपर्य्याप्त्यवच्छेदकतया तस्याव्यासज्यवृत्तिधर्म्मसमानवृत्तिकत्वं दुर्व्वारमेवेति वाच्यं। तादृशप्रतीत्या तथाविधधर्म्मद्वयादौ व्यासज्यवृत्तेरेव द्वित्वादिपर्य्याप्त्यवच्छेदकताया अवगाहनात् प्रकृते चाव्यासज्यवृत्त्यवच्छेदकताया एव निवेशनेनातिप्रसङ्गविरहात्। अत्राहुः, अव्यासज्यवृत्तिघटत्वादीनां पर्य्याप्त्याख्यसम्बन्धान्तरे मानाभावः समवायादिसम्बन्धेनैवोपपत्तेः। न च समवायस्यैक्येन पटादावपि घटत्वादिबुद्धिप्रसङ्ग इति प्रतिनियतप्रतियोगिकपर्य्याप्तिसम्बन्धस्वीकार इति वाच्यं। प्रतिनियतप्रतियोगिकैकविधसम्बन्धेनैवोपपत्तेर्द्विविधसम्बन्धसिद्धेः कथमप्यसम्भवात्, एवं द्वित्वादेरपि पर्य्याप्ति-समवायादिरूपसम्बन्धद्वयकल्पनमयुक्तं अनेकवृत्तिधर्म्मावच्छिन्नैकविधसम्बन्धेनैव निर्व्वाहात्। न चायमेको द्वित्वसम्बन्धीति प्रतीतेरेकमात्रवृत्तिधर्म्मावच्छेदेनापि द्वित्वादेः सम्बन्धा-